

दीय पव्लिकेशन बंबन नावेंड, हाल्पीटन श्रेड, बाबरा-३ प्रकाशक :

शबक : शबाब असगर अली

विषा गरिधि पं॰ राजेश दीक्षित

- अकाशक

- ST - T

105 68 इनकः राष्ट्रीय बार्ड जिन्दर्श, मोदीवान नेहक दोर, बागरा—३

## ISLAMI TANTRA SHASTRA

-By Asgar Ali & Rajesh Dixit

### चेतावनी

भारतीय कापीराइट एवट के अधीन इस पुस्तक के सर्वा-धिकार दीप पिल्लकेशन आगरा के पास सुरक्षित हैं। अत. कोई सज्जन इस पुस्तक का नाम, बन्दर का सेटर, डिआयन, बिज ब सेटिंग तथा किसी भी अंग को किसी भी भाषा में नकल या तोड़-मोड़ कर छापने का साहस न करें, अन्यक्षा कानूनी तौर पर हर्ज-खबं व हानि के जिम्मे-दार होंगे।

# बितीय संस्करण की भूमिका

प्रशाद प्रशाद में विकेष सन्त मन्त्रों को इसमें प्रशाद प्रशाद गया है। जिन यन्त्रों को इसमें और काला गया है। वह जन्मा उपकास नहीं है जिला इस पुरुष्ठ की उपयोगिता और बढ़ गयी है। पुण्य स शाव्य क्या काम्यक, स्वपाई आदि का पूर्ण बह जाने समा पुस्तक की पुण्ठ संख्या बढ़ जाने के बावजूद सूक्य में इदि नहीं की गयी है। इस बागा करते हैं कि पाठक पूर्ववा सहयोग

### ABDUL RAB ROOHANI ELAZ Shaikh Abdul Gafar Majhikhanda, Niali, Cuttack Odisha, India

Mail Id:-bdulgafarshaikh@gmail.com gtelteleservice754004@gmail.com Mob:+919861478787

वादिसोत

यन्त्र-तन्त्र ही है। यन्त

के सावनो

AND AND REAL PROPERTY OF

भी लाग विशा का आदि आचार्य अगवान् भूतभावन शंकर ।। नाम है। शंकर की बान्यता एक ऐसे देवाधिदेव के रूप में

ननन आक्रित के स्थामी (प्रति), गणश के पिता एवं

आंपत इनके अतिरिक्त अन्यान्य उप-

ा ।। पिताल, वक्षा पधने, किन्नर आदि के भी अधिपति

तथी, धतनी, विधायनी, जावडासिनी आदि के सहित

गम अनुभ, आमन्दप्रद एवं घुणास्पद, जीवनदायक

कि सभी प्रकार के तान्त्रिक प्रयोग शकरा-

मानां को

ISSUU.COM/ABDUL23 ISSUU.COM/SHAIKHBDULGAFAR

> उनके जप से सिदियाँ पार्यी तो यन तन्त्र में उन्हें भी अंकित कर लिया तथा मन्त्रा (ध्टदेव की अनुकस्पा से बीज-मन तन्त्रों में ब्याप्त ही गया। साधकों शंक एवं अक्षरों का मिला-जुला ह अक्षों की सृष्टि हुई है। अतः रेख विकास से को प्राप्त किया अ अंक अ

साधक अतिशोध निश्चित स्था को प्राप्त कर लेता है। सदय की और बढ़ने वाला रान्त्र थदा और विश्वास के सम्बल पर कामनाओं का कल्पवृक्ष है जिससे र बड़ी से बड़ी

न जमा किन और शक्ति के खपालक सारियकी, राजसी एवं तामसी ा भाग भाग है। इनक अपासकों को क्रमचा र्याज्य, सावत, बैटणब, त्यांच विक्या स्थान एवं सूर्य के अधिकांस उपासक मधा आता है। शानावासना इन पांची देवताओं के प्रधानमा प्रजीतयों से विश्वास रखने वाले पाये

ता मान मानत एवं 'बीड सन्त्र शास्त्र' नामक ग्रन्थों में पर्यास्त प्रकाश ाता ता का नाता है तथापि इनका पुत्रा-उपासना एवं तान्तिक विधियो मनान अतर थाना आता है। इनके बिषय में हमारे द्वारा सम्पादित नेत नका भोड अध्यक्षयों की गणना भी बिराट दिन्द धर्म के

ार्गा क्षा क्षा क्षा है। हमारे द्वारा सम्पादित 'हिन्दू तन्त्र शास्त्र' सभा अकार क लाग्निक प्रयोशों का बिस्तृत वर्णन किया गया है।

issuu.com/abdul28/niali/odisha

प्रयोग भी किया जाता है। अतिरियत विभिन्न प्रकार के नवश (यन्त्र), यन्त्र तथा तान्त्रिक साधनों का (OIII) नाओं की पूर्ति हेतु सन्तों, फ़कीरों की मजानों की जियारत (यादा) करने, जमकी कहाँ पर जादर चढ़ाने तथा धूप-लोबान आदि से पूजा करने के तो प्रथम ही नहीं उठता; परन्तु इसके बावजूद भी जिन, परी, खईस आदि के अस्तित्व को नकारा मही गया है। इतना हो नहीं विभिन्न भनोकाम-इस्लाभी मजहब में ईश्वर (खुदा) की केवल निराकर रूप की कल्पना की गयी है अत: उसमें किन्हीं देवी-देवताओं की सध्यावना का

सान्त्रिको द्वारा किया जाता है। इसमें कुछ ऐसे लोकमावायी मन्त्र भी से प्रयोग करते हैं। संबहीत है, जिनका हिन्दू तथा मुस्लिम-दोनों धर्मावलस्बी समान कप प्रस्तुत ग्रन्थ 'मुस्लिम तन्त्र झास्त' में ऐसे सैकड़ों तान्त्रिक यन्त्र-मन्त्रादि संदलित किये गये हैं जिनका प्रयोग फकीरों तथा मुस्लिम

फारसी लक्षरों तथा लकों के साथ ही देवनागरी लिपि में भी प्रस्तुत करके इस यन्य की उपयोगिता बढ़ाने का प्रयत्न किया गया है। • हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक यन्त्र की आकृति

भति हृदय से कृतज्ञ है। यो० बसगर असी 'असगर' का विलेख योगदान रहा है। अतः हम उनके इस ग्रन्थ के सम्यादन एवं सामग्री-संकलन में हमारे परम मित्र

लाबियों को यह अन्य चपयोगी सिद होगा। • आवा है, सुरिसम-तन्त्र की जानकारी प्राप्त करने के बिफ

-राजेश शीकत -बतगर बता

15

स) आवर्षण, बशांकरण तथा शतु-वीदा कारक

कि मार्क कि

ा। जल लाजक चैन' का मन्त्र ा वर्षाक्षरण कारक 'एन' का सन्त

	2	
	AN	ा । वा वा वा वा वो वा वा मन्य
	AU AU	Mark all and
		वर्णाकरण कारक एष कार्य-साध्य
	.435	त्रात का सन्त
	AS	Milk
	2	ना । विषायक एवं बकान-नावक 'स्वाद' क
	,dJ	-
		ा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
	W O	का अध्यक्ष वर्षात्रक वीत, का बन्ध
	ASI G	Man its , b, manten ha deal
	200	(11) गता धन पान्त कहाते बाला 'हे' का सन्त
	No	
		ा । ।।।। । । ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।
	य रेड	ा ालक तथा शत तीय कारक दाल का अन्य
	るない	ाता पर तर मनुष्य की लीटाने बाला 'में' का मन्त्र
	26	ा । का अन्न नामक है का मन्य
	XI6	ा) वन्तिवालाचा पुरक्त 'जीम' का सन्त्र
	20	ा।।। क्या वा अन्यात व स्थान बाला 'स' का सन्त
	T RY	ा । ०० वन्याव प्रवासक ते का मन्त्र-यन्त्र, तन्त्र
	NA NA	ा । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
	20	ा । ।। वाल प्रीयकारक 'बलिक' का सन्त-यन्त्र
	70	।। जन्म कर्मा की माधन-विधि
	26	aboul 26/ment/actishe
	200	IN D In
	8	medical state (a)
04-50		आती अश्वर और उनके यन्त्र
शृष्ठीक		
		विषय-सूची

पन्द्रह के यन्त्र के विविध प्रयोग अन्य नियम यन्त्र लेखन संख्या वारानुसार यन्त्र-प्रयोग यन्त्र-लेखन के विषय में बन्य ज्ञात्व्य	(३) फारसी अक्षरों के अक (४) पन्तों के खर्च खाते (४) पन्तों के खर्च खाते (४) कीसा यन्त्र (६) ६ खर्च बीसा यन्त्र (६) ८ खर्च बीसा यन्त्र (६) ४ खर्च बीसा यन्त्र (१०) ६ खर्च बीसा यन्त्र (१०) ६ खर्च बीसा यन्त्र (१०) ६ खर्च बीसा यन्त्र (१०) पन्त्रह का यन्त्र के कीठ के बन्त्र (१३) यन्त्र विखने की क्रतम	) सर्वेद्रियता-दायक 'लाम मोकद्रियता-दायक 'शीन 'त्रेन' का सन्त्र 'त्रेन' का सन्त्र ) मनोरथ-पुर्ति कारक 'शे ) चित्ता-स्तःभन कारक 'शे ) चित्ता-स्तःभन कारक 'शे ) चित्ता-स्तःभन कारक 'शे ) वित्ता-स्तःभन कारक 'शे ) वित्ता-स्तःभन कारक 'शे ) वित्ता-स्तःभन कारक 'शे ) वित्ता-स्ता का सन्त्र, तन्त्र वार पन्द्रह के यन्त्र यन्त्र की विज्ञाएँ	(१६) नींद हराम करने वाला 'काफ़' का मन्त्र (१६) विद्यान्यद्व' कं 'गाफ़' का मन्त्र
	TO G A F OC M TO D O O O	* 68.58 The same of the same o	u au e oc
(॥) गोतम तथा वधोकरण (॥) गोतम तथा करक धन्त्र-तन्त्र (॥) गोतकरण धन्त्र (१) (४) शोतकरण धन्त्र (२) (॥) शोतकरण धन्त्र (२)	प्राणिक के निया को सम्बद्धा के से के कर मन्त्र विभागिक स्था नियारका सम्बद्धा का नियारका सम	interest year area  to trace year area  or trace on sector (2)  colored on sector (2)  colored on sector (2)  colored on sector (2)  colored on sector on sector (2)	( ६ )
で の か の の の の の の の の の の の の の の の の の	A S S W C W N N O S W		en G

	(L) KAN IN WIRE IN (L)		, बरोकरण सम्बन्धी कतिषय अन्य प्रयोग	(४८) दोठ-सूठ य सुरक्षा	(४८) जमोन में गढ़ी हुई बस्तु दिलाई देना	(४७) दूर चनने पर भी यकान न आवे	(४६) रात में भी दिन जेंसा दिखाई देना	(४४) गुप्त भेद को जानना	, James	7000	-	-		_	_	(३७) प्रमा का आकाषत करने का मन्त्र		नियम का अन्य	-		(३२) ववासीर का मन्त्र (२)	(३१) बवासीर का मन्त्र (१)	(३०) अधासासा का मन्त्र	(२६) बावन कृत्ते का झारा	(२८) बावल कुरते के काटने का मन्त्र	(२७) दाइ के दर्द का मन्त्र	(३६) अनु-मुख स्तरभन मन्त्र	(२४) शत्रुमार्ण मन्त्र	(२४) दुश्मन को सारने का प्रयोग	(२३) स्वप्त-सिद्धि मन्त्र (३)	(२२) स्वप्न-सिद्धि मन्त्र (२)	(२१) स्वय्न-सिद्धि मन्स (१)	(२०) हाजिरात का ख्वाजा मन्त्र	(१४) हाजिगत का सुलेमानी मन्त	~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~ ~
1	And Direction		N & C - THE	n n	. 206	70.6	126	** 6 G	92	-0.2	40.00	2000	q ex	\$54 \$	838	/23 /23 /W	Clar Clar	, re-	3 130	プログランス X X X X X X X X X X X X X X X X X X X	**************************************	19 P	. 40 (5)	100	. * Po	.~e		्व व	Si Si	\$ s.	१८७	756	5% 5% 200	TO SI	
(१४) अध्यक्ष क्षाकटक सन्त्र (२)	क्षा जन वर्गा करण मन्द्र (१)	(6) key dermine ince	ाका माना वार्गात स्था तस्त्र (६)	ाना नवा नवानरण मन्त्र (४)	(x) Medical and a late of the	। । । ना न विकास करत (३)	(४) इन्हा किन्द्राक्ष कि।	(b) Est tales all the terms (d)	(४४) ह-व कश्राका सम्ब	(11) E. M. Sayallan D. (12)	(2.4) 1. (2.4) (3.4) (3.4)	(22) 11-12 10 2 10 10 10 10	(Se) had not being the	(a) with the widow the	(c) Assistant to the tent of tent of tent of the tent of the tent of the tent of tent of tent of tent	का क्यों नाशीक ट्या सन्द (b)	(b) had no white the con	ा । भी वर्षाचं त्या त्यत (४)	(A) and deline the time (A)	(३) करता प्रकाशका संस्थ	(a) be do a mile can de de (a)	(2) And the first that (2)	(e.g.) have too believe the	(3.2) 20-23 20-24 (4.4) (4.4)	(03) liets marking () con	(3) 82-18 for route to the first	Issuu.com/abdul/23/njaii/odisha.	(c) the design of the (c)	( ) 1 - 18 In - 18 ( ) ( )	(a) 1.1 (a) (a) (a) (b) (a)	(x) Total Mathematical (x)	्रा निया का अपने प्राप्त (क्षेत्र)	( ) क्या नशीत्रण मन्द्र (२)	8	
, et O Sto	200	A) O Do	.0 0 ch	О п	R O II	000	२०७	200	500	200	206	200	.U op	AU 0 AU	(3) (4) (8)	Non	,U 0 24	力の大	Xox	20%	,0°	2000	208	र ० भ	KO O AU	NO AND	202	AD 0 A	,U 0 ,00	20%	A) 000000000000000000000000000000000000	२००	~ Ch		

	X32	(३) स्त्रा-महित्र प्रयोग
	228	(र) सबजन महित प्रयोग
	2000	स्त्रा-आक्षण
	20,00	राजसमा मा
	A! 70 20	भाव-वंशा
	A1 /0 /0 /	-
	20 .01	
	~	४६) शतु न्याकरण तन्त्र (४)
	20	सन्-वसाकरण तन्त्र
	AI NO.	४४) शत्रु-बंशाकरण तन्त्र (३)
	43	४२) शानु-वंशाकरण तन्त्र (२)
meer	-41 -10 -10	शत्रु वसाकरण तन्त्र
0	,20 .*** .***	४१) सन जन-नशाकरण तन्त्र (८)
	-0	
	22	(1)
	280	
	A) 70 0	सवजन-वशाकरण तन्त्र
	290	

# साथना से पूर्व आवश्यक निर्देश

u.com/abdul23/nfall/odisha

III/टाणवामा ८०//गांटा।/odisha

भारता भारता शाधना करते समय उस प्र भारता भारत्यक है। अन्यया वांछित कल प्राप्त

ार्थिक है। जिल्ला कार्यक्षीर आ इवस्य एवं पवित्र रहना पार्थिक है। जिल्लाकार्यको तथा सन में किसी प्रकार की

ार्ग नाताः प्रविद्यानं एकान्तः स्थानं से ही मन्त्र-साधन राम्य नाताः प्रविद्यास्य की समास्ति तक स्थान

ा करा साधकार्यिक विषित्त है। उसी के पार्थित प्राप्त करते से प्राप्त प्राप्त करते से प्राप्त क

ा भागको ना संस्था आदि जिस्ती जिस्ती है उतनी हा भाग नाम आदि अपना चाहिए। इसी प्रकार जिस भागान ना अपने धेउना निया होतो तथा जिस रंग के अभाग भी उन संबंका यथावत पालन करना

पान कार में एक ही सन्द की साधन करना उचित है। इसी पाना एक तथा में कदल एक ही बनोधिलाया की पूर्ति क प्रत्येष्य अन्युज रहेना चाहिए।

### एक हिन्द में

यह भ्रम सर्वेचा निमू स है कि तन्त्र केवस भूल-भूलेगा अथवा यन बहुसाने का नाम है।

तन्त्र का विशास प्राचीन साहित्य इसकी वैज्ञानिक सत्यता का जीता-जागता प्रमाण है।

बाधुनिक विज्ञान और तन्त्र में बहुत समानता होते हुए भी तन्त्र विधान का शास्त्रीय परिचय और विधियों का सर्वोगीच ज्ञान साधना को सफल बनाकर सिद्धि तक पहुँचता है। तन्त्र में स्थाधित है, सत्य है और कल्याण है।

सोक-कल्याण बीर आत्म करवाण की कामना से किये गरे तान्तिक कर्म इस लोक और परलोक दोनों में बाबदायी

कारती का प्रत्येक असर लान्तिक अर्थ रखता है। इन तन्त्रों के अधिनव-प्रयोग आपको करतों से बचाने में सहायक होंगे।

इस पुस्तक में दिये गये तत्व, मन्त्र प्राचीनतम्, प्रामाणिक तन्त्र को अनुपलब्ध पुस्तकों से सकलित किये गये हैं सिर्फ उन्हीं मन्त्र, निविवाद है। पुस्तक में स्थान दिया गया है जिनकी सत्यता

साधना आपके सच्चे मन कर्म मे होशी तभी उसमें इच्टतम् फल भारत होगा बन्यथा जैसा करेगा वैसा भरेगा। इसमें लेखक के बन्दर जैसी आवाज देंगे वैसी ही प्रतिब्दिन होगो" की तरह पुस्तक पाठकों की अलाई के लिए बनावी गयी है अस्तु "कुएँ प्रकाशक का क्या दीय ?

# "।।।। अक्षर और उनके मन्त्र

### कारक्षी मध्यर-सन्त्र

भानव-जीवन की आवश्यकता और बाकांक्षाओं की पूर्वि के अनेक साधनों में 'सन्त' सरस और सुगम साधन है ।ISSUU.COM/alociul23/niali/oclisheamin प्रत्येक अक्षर एक मन्त्र के

		NIN THE													
The same of the sa	(44)	(44)	(84)	(KA)	N. C.	(45)	(16)	(99)	(9.0)	(0)	198	(90		AL.)	PASSES NO. 1 A PASSES NO.
THE THE PARTY OF T	44		ara	नन	野田	अध	THE STATE OF THE S	414	4,	4.	0.4	सोय	4 2	) ज्याद	THE WHAT ES NAIVE

का वाल के कप म अलग-अलग साधन

ना ना ना ना वामन पर काली न्याही से खिखकर, किसी ााा । । पर १४ है कि अर्थमध्य 'अझर-मन्त्र' की (जिसका स्वरूप

1 3 學 明 1 日 日 日 日 日 रेक दान तक है कि है है है है है है कि कि कर कर ा । । म मान अत्राप्त पूर्वा अत्याप अधार के मान अध्या किसी 

नेशर नाज का सक्य

0333	00	3333	Au	2002	
200	4	2338	×	8333	220
8558	AJ	2008	6	8333	
			TO		

ssuu.com/abdul23/niali/odishat।

अअमन

· = 4 · · · । वानानी राज्या अमस्द्रशा आरादा श्रीवन अनयकुलो .... शामा वक्षाना बलक्षा या अहँया हलूम लायह माना मा विल कारणी विहक्कं सह्यदि क्रमुवा अमीनिक्रम ।।। रणांबादीम अल्ला हुन्या इसी असअलोका

## गया गान्यों की साधन-विधि

ाता ना ना ना ना ना ना ना आहि एवं अन्त में पाँच-पाँच बार 

7661

Mook

1990

0

4661

1997

1001

3

D

FOOF

1990

1990

-5

>

イント

ता किया मनीविश्वाबा का पूर्व करने की इच्छा हो, उस भारत के भीचे अपना मनोर्थ सिख देना मान जान बनावर दोवन में जनानी चाहिए, इसमें मनोर्ड

1 hills min min bo ... ... 

सह मन्त्र प्रत्येक 'अक्षर-सन्त' अथवा किसी भी अन्य फारसी मन्त्र के आरम्भ में अवश्य पढ़ना चाहिए।

"विस्मिल्लाहिर हमानिर होम ।"

वेस्मिल्लाह का मन्त्र

不明日

the following in South to the second in

ा । । । । । । । । । । । । । व वाद मन्त्र के आरम्भ में इस

न्यान होता शिव से शिव से विकास है न

व अल्ला आले ही

बज्स (बहाभोज) के लिए इसे १९६८ बार पढ़ना चाहिए। (तपस्या) के निए १४१ बार, बीरे गील (मार्जन) के लिए ४२ बार तथा (इध्द-सिद्धि) के निए ४०१ बार, असर (होम) के लिए २४० बार, निपन सीचन्दी अमेरात को ११ बार, निसाब को १००१ बार, जकान

में एक-एक दिन पढ़ा बाथ। इस तरह २= दिन में अमल (प्रयोग) को पूरा किया जाय। अच्छा यह रहेगा कि २० अक्षरों में से प्रत्येक की ४४४४ की संख्या

पढ़ना बाहिए -मविकल 'इलाफील' तबा नाम खुटा अलिक पर 'अल्लाह' है। इनका मिलाकर निम्नलिखित तीन रीतियों में से, जिसमें मन लगे, उसी रीति से 'खुवा' का मिलाकर ३ प्रकार से पढ़ते हैं। जैसे--अक्षर 'अलिफ्' का स्मरणीय है कि प्रत्येक अक्षर को एक 'मविक्सल' तथा एक नाम

(१) पहला राति—

दूसरो चीत-"असिक या अल्लाह या इसाकील।"

(३) तीसरी रीति—

"या इसाफील बहरूक या अलिफ या अल्ला हो।"

केवत १ बार पढ़ लेना चहिए। "या सलाम अलेकुम या इसाफील बहनक था अलिफ या अल्ला हो।" २८ दिन बाद सब अक्षरों को प्रतिदिन २८ बार, ३ बार अध्वा

हवा उनको जपने की विधि का बर्णन किया जा रहा है। विधि उपर्युक्त हो है। अब प्रत्येक असर-मन्त्र के असग-असग लाम, प्रयोग टिप्पणी- फारसी अक्षर-मन्त्रों तथा अन्य मन्त्रों की सामान्य साधन-

### धन-धान्य-वृद्धिकारक

### 'असिफ' का मन्त्र

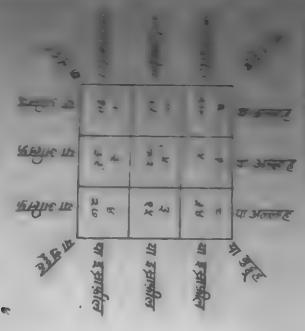
बाहिए। इसकी बिधि निम्नानुसार है -धन-धान्य की बृद्धि के लिए 'अलिफ़' के मन्स्र का साधन करना

निसाब आदि को जपानुसार पढ़ें— बार पूरा 'विस्मित्साह' मन्त पढ़ें फिर ११ बार 'दक्द' वढ़कर, १४१ बार "सुर्योदय से पहले ही उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त हो पहले एक

> भा करात के का को भा को जा के का किया कर तथा हर ा को गा। वच्चारण के बाद निम्मीनिखत मन्त्र की १० बार ा कार होल बहुक्त या शांतक या अल्ला हो।"

ISSUU. ०० निर्माटी विश्वासी है। हिन्द या असिक या अस्ताहो ना वर्ष था व्याप्तील बहुक्त या अलिक या अल्ला हो।" 

प्रकार प्रकारिक कर कार विकार के कर बार पहुंचा बाहिए म के कर का नाम माने कर के पा का अर्था का अर्थ कार्य पर काला 'कार्ता कार करत कार के ऊदर रखकर सोबान मी बारभादन व अलिही असमहन।



C.	of the c		0.1%.	16131	J. V	1000	- 1	2	
با العت	1.	7	7.9	7	27	£		WI	Ļ
يا دلت	70	9	22	٥	D	-		ฟา	L
يالني	27	2	0	7	42	>	,	ฟไ	L
221.	31/12		0.11	12/10/	C. Issuin	1.41.41	C	-,	,

मन्त्र-वर पूरा हो बाने पर निम्नक्षिति वाक्य का ११ बार उच्चा-रण करना चाहिए--''या इसाफील बहक्क या अल्लिक या अल्ला हो सके सन

''या इसाफील बहनक या अलिफ या अल्ला हो सुन्धे पन रि दौलत दे या बुदर्ह।''

सबसे बन्त में 'असिफ,' बक्कर को कागज के १००० छोटे छोटे टुकड़ों पर फारसी-सिपि में निश्चकर, उन कागज के टुकड़ों को आटे की गोलियों में भरकर, किसी दिखा (नदी) में बहादें। ऐसा करने से काय सिद्ध हो खाता है। यह 'असिफ,' का मन्त्र अध्यन्त प्रभावकारी है। यदि समुचित रोति से साधन किया बाय तो साधक की मनोकामना को अवश्य पूरा करता है

'असिफ्' में लेकर 'के' तक सभी फारसी अक्षरों को फ़ारसी सिफ् में सिखने की विधि निम्म प्रकार दी गई है—

The silvertile of the silverti

(फारसी अधरों की लिपि)

A) /

के का सन्त्र

र्गव से रोजी देने वाला

ं वं वा म असाधन गैव में रोजी प्राप्ति (आकस्मिक धन-साध) के

पर्काली स्याही में लिखे— शयन कर फिर नीचे प्रदर्शित यन्त्र को सूर्योदय से पूर्व एक सफेद कायज सर्वप्रथम ७२ दिनो तक ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए पृथ्को पर

82	200	20	
	N oc	20	220
30	n n	w	

トンコ

3

2>

-

का कि कि का कि का तथ मान अप-माधन करने रहने पर बाद में भागा । सार शक । आष्ट क्षिक क्ष्या म मिलते गहेत हैं।

त्ता । वर्षा तथा भाग वर्षा १८-११ बाट दश्य पट्नी पाहिए तथा तथा । वर्षा तथा वर्षा भाग वर्षा आहे में भरकर गोली बना 日本日本日 日本日日 日本日日日

पश सम्मान प्रदायक ते का मन्त्र

ा । । । । भाग लाजान की धनी द तथा दीएक जनाकर, फून, इस एव ापन पर काली क्या है में जिल्लार एक पानी भरे घड़े के आगे सफ़र 2. to 4. to ा । । श्यानं निम्निनिनिन मन्त्र का नित्य १००० की संख्या मन का मध्यान प्राप्त के लिए पहुने नीचे प्रदक्षित यन्त्र को सफ़ेर

'था इ बाईल बहक्क या ते या तब्बाबी।"

विखाकर उसके उत्पर पूर्वोवत यन्त्र को रख है। इसके बाद स्वयं सूर्योदय से

यन्त्र तेखनोपरान्ह एक पानी से भरे हुए घड़े के आगे सकेद कपड़ा

2 4

7

てる

7 4

साम व बराबर रामा में खंड हा कर नीचे लिखे मन्त

मुक्तिम नःत्र-गास्त्र २५

issuu(com/abdul\_Q/niali/adishawa होकर मन्त्र जप करना उत्तम

ं ना अन्य पन नानी में बाहर निकास आय नया घर के

ा । वर ना । वर्ष । । भ उपार जुना भन प्राप्त, इन त्या

गानका या निष्ठाहल बहक्क या बासिता।"

ा को प्राचित से विष्युक्त 

यन्त्र का स्वरूप निम्नानुसार तैय्यार करना चाहिए-

20	44,	4	Ч
×	3.56	u	33
OC.	rh <sub>2</sub>	6	328
3 €0	40	१२	2

	в	ŀ
	ı	
	ı	
	ı	
	۱	
	ı	
4	ı	Ł
	1	

10	7	モハフ	>
8	16 21	₹	"
م	P	7	PAG
P 90	٤	7	1

२१ दिनों तक पूर्वोक्त विधि से मन्द्र-जप तथा यन्त्र-पूजन करते रहने से यग तथा सम्मान की बृद्धि होती है। अन्त में, यन्त्र को आटे की गोली में भरकर तथा बुरे में सान कर दरिया के पानी में बहा देना चाहिए।

िली का मृतनात न समन वाला

मं का मंत्र

ा ना ना बाज के वे वा वाक्ष्म का प्रतिक्षित १०३ की संस्था के जय करते. जन्म ने वेदारी का वाक्ष्म वार्थी गहुँका ।

issumacom/abdule श्रामिति। रिताडिन बाब या बलादी।

्रा पात्र का का समाध्य ते पृथं श्री श्रीष्ट्रम कर दिया जाय तो पात्र पात्र का का का भागा प्रशासिक्ताहें तथा अन्त में

3. The solution

41 41 41

WATER BY L. H. 16

भा विभागतील बहुबह या जीम या अञ्चादा ।"

. ज ज । व ज्यान वर्ग बिद्योग-वाह् और दस्द पहले का नियम

शाप भय नाश्क

हैं का मंत्र

A sten no s is it

भा प्रकाशील बहुबस या ह या हमीदी ।"

श्विशः अस्त स्थान् । १ दिना तक नित्य ६२ बार जय करते से सर्जु का अस्त १९ ता जाता है। पान साथ 'बिह्म्फलाह्' तथा 'दक्द' पढ़ने का है। अस्ति तथा स्थान व्यक्ति ।

मुस्सिम तन्त-शतस्य , २७

### ् गये हुए मनुष्य को लौटाने वासा 'खें का मञ

'बे' का मन्त्र इस प्रकार है -

# "या महकाईल बहक्क या खे या खिलकी ।"

में आताश के तीचे बड़े होकर १००० की संख्या में अपने तथा जो व्यक्ति।।। काताशिकीलिशिकिशीति।। तिशासिनी जल जलाल बलइकास ।" बह गया हुआ व्यक्ति शोझ घर सीट आता है। विधि - (१) इस मन्त को आधी रात के समय किसी एकान्त स्थान

जाता है। रुनाव (स्वप्त) में विषे हुंए अनुष्य के बार में सारा हाल-बाल माधूम हो के तीने रख कर साने तथा उन्त मन्त का १००० की संख्या में जप करने से (२) 'खें को फारसी अक्षरों में ६०० की संख्या में लिखकर तकिया

तो अधिक हाल माध्रम होता है। (३) यदि 'खं' के अन्त में 'या सबीरो' शब्द और बढ़ा लिया जाय

रसके साथ भी 'बिसमित्लाहु' और 'दरूब' पढ़ने का नियम पूर्ववत्

### शतु-नाशक तथा धन-इदि कारक 'दासं का मंत्र

'दास' का मन्त इस प्रकार है -

"या दरदाईल बहुबक या दाल या दैयानी।"

पढ़ते से धन की बुद्धि होती है। धन-बुद्धि के लिए इस मन्द्र का प्रतिदिन जप करते रहना आवश्यक है। विधि -- (१) स्पॅदिय से पहले इस मन्द्र को १००० की संख्या में

बीर फूँक मारने से उसका नाम हो आता है। यह किया ३० दिनों तक नित्य नियमित इप से करनी चाहिए। (२) सूर्योदय से पहले इस मन्त्र को ७० बार पढ़ कर शतु के घर की

समसं । इसके साथ मी 'बिसिमिल्लाह' और 'दहद' पढ़ने का नियम पूर्ववत्

> । आपकारी की कुपा मारित, धन शुद्धि अथवा वशीकाम के लिए प्रयुक्त होने वाली

'बाब' का मन्त्

ा पान का एक पान १३० विना तक निस्य प्रातःकास १९०० की नापम की वहरबानी प्राप्त करने अथवा धन-वृद्धि

नां नवां ना करते आर हा हा गुरुष का खिला देने में वह वशीभूत ा का का का विश्व है निहस मन्त्र द्वारा मिठाई को

negle misen कार काल विकित लाह, तथा दलदे पहने का नियम पूर्ववन्

भाषा पन प्राप्त करान वाला 'र' का सन्त

Taffer has both to a

# 'पा बगवा दील बहक्त या रे या रहीम।"

ा । न ।। - - बार गड़कर उमें छोड़ दें. तदुवरान्त बहु जिस स्वान पर ।। । । ।। । । । । ।। ।। ।। ।। अपनी बोंच मारे, वहीं पर । धन गढ़ा हुआ । कार्य का कार्य को के दिलों तक निन्य प्राता:काल १००० ं का : बोला किन एक नकेंद्र रंग के मुग के कान में 'या' रे

ा शिक्षान स्थानर सोने से स्वयन में गढ़े हुए धन वासा स्थान दिखाई ंक्कार के ? गाम कार्य दान के समय उस रकाकी (तग्रतरों या ब्लेट) को ··· । ' ··। व बाद उसके ऊपर इतना नमक बिछा से कि अक्षर ... पानको निर्मा में 'रे' को किसी मिट्टो की रकाबो पर ६००

बाद उसे कान से निकालकर किंस की याली अयवा कलईदार रकाबी में अक्षर निखकर, उस कागज को मोड़कर अपने कान में रखें। एक घड़ी धन के स्थान के विषय में ज्ञात हो जायगा। राति के समय पुनः =०० बार मन्त्र पढ़कर सो जींग तो स्वयन में गड़े हुए रखकर ऊपर से इतना नमक विछा दें कि सभी अक्षार ढक जीय, तदुपरान्त (३) एक कामज के ऊपर फ़ारती लिपि में =00 की संह्या में 'रे'

वत् समझना चाहिए।

'जे' का मन्त्र इस प्रकार है-

### जे का मन्त्र शत-भय-नाश्क

'या सरकाईल बहक्क या जे या जाकियो।''

करते रहने से शतु का भय दूर हो जाता है। बिधि इस सन्त का १ मास तक नित्य ५०० की संख्या में जप

समझना चाहिए। इस मन्त्र के साथ 'विस्मित्लाह् तथा दरूद' पढ़ते का नियम पूर्ववत्

### शंच्यत-अनुभव प्रदायक

### 'सीन' का मन्त्र

योन का मन्त्र इस प्रकार है-1 2 2 mais 7

इच्छित अनुभव प्राप्त होता है। बिधि - इस मन्त्र को दोपहर में २ बजे के समय ७ बार जवने से "या हमवाकील बहक्क या मीन या समीओ ।"

समझना चाहिए। इस मन्त के साथ 'विस्मिल्लाह' तथा 'दरूव' पढ़ने का नियम पूर्ववत्

शत्र-मृत-स्तरमक एवं गमे ज्ञान प्रदायक शान का मन्त्र

'शीन' का मन्त्र इस प्रकार है-

'या इजराईल बहुक्क या शीन शहीदा ।"

ा ।।। ।। । । । । । । । ।। ।। ।। ।। ।। मार्थ में एक-एक रोटी एक-एक ा का अल्ल क्ला क्ला है तो सन् का अब बंद ही जाता है। .... ता निर्मात काल अक्षर को निसंकर, उन दुकड़ों को 80 निमा । का भ न की काल बाद प्रति के बाद का प्रकार के 80

इस यन्त्र के साथ 'बिस्मिन्ताह' तथा 'दरूद' पढ़ते का निर्देशिया. केवाना/ तर्जिया। केवाना/ तर्जिया। केवाना निर्देशिया केवाना केवा है या सहकी "। । पान का प्रवर्ण ३०० बार पड़कर सो जाँच तो

भागता विनाशक एवं यक्तान-नाश्रक

सा । अला विकास वाहर नथा 'दक्व' पढ़ने का नियम पूर्व-

क्यात का सन्ध

Control ite ing in

भा अवसारेल यहक्त या स्वाद या समदी ॥"

का का का का कर तो धाल पुष्पानी भूगा कर मिन बन जाता है। ार राज्य है । जिल्ला बधार र र दिनों तक, नित्य ६०० की संख्या में into ा। पानी म भाग एक चढ़ा बदने सामने रख ल, फिर ा का मान मान समय इस मंस का ५०० बार जप किय

ा नाम होता है। वाकावर वहां आहार ा ।। । । थान विशेषान्त्राह तथा दह्नद पहने का नियम

तर्थ दोबल्य नाशक तथा शत्रु-जिहा स्तम्भक द्याद' का मन्त्र

था प्रतादम बहरूक या ज्याद या जारो।"

1911年 1919年 日本公司部門書 । ।।।। । अभावा निस्य १००० बार जपने से दिस की कम-

र । । । । याय 'विकियन्त्राह' तथा 'दल्द' पहने का नियम

क प्राथम कर कर करा है

### चयोकरण कारक एवं कार्य-साधक 'तोय' का मन्त्र

'तीय' का मंत्र इस प्रकार है -

"पा इस्माईल बहनक या तीय या ताहिंगे।"

में असग-असग भर दें, फिर उन गांतियों के उपन पूर्वोक्त मान को ७०० बार पढ़कर फूँक मारें। तदुपनात उन आटे की गोलियों को दरिया (नदी) के पानी में बहा दें तो ७ दिन के भीतर इच्छित्र-कार्य सिद्ध हो जाता है। विधि - (१) किसी कार्य की सिद्धि के लिए कार्यक के दुकड़ों पर फारसी लिपि में अंतर-अलग 'सोय' अक्षर शिखकर, उन्हें आहे की गो किंड़िं।

(२) वशीकाण के लिए एक कानज के ऊपर ७०० की सख्या में

भारसी लिपि में 'तोय' लिखक . उनके नीचे —

वीय या वाहिरी।" 'या इस्माईल फलान की फलान के बस में करी बहक्क या

मुह उसके घर की ओर रखना चाहिए। धनों वें। इस तरह ७ दिनों तक नित्य यही श्रयोग दुहराने तथा नित्य ७०० को संस्था में उस्त मन्त का जप करने से इच्छित स्त्री या पुहब वधीधूत हो तेल में जलायें तथा इस, फूल. दीवक को उसके आगे रखकर लोबान की जाता है। मन्द्र का जग करते समय, जिसे दश में करना हो, दीपक का उक्त बाह्य को विखकर, उस कार्यज का फलीता बनाकर सुनान्धत

कराना हो उसका - दोनों का नाम सिखना चाहिए। श्यान पर जिस ज्यक्ति का बका संकरना हो। उसका तथा जिसको वश में कागड पर जो बाबय सिला जावेगा उसके फलान को, फलाने के"

प्रवंबत् है। इस मन्त्र के साथ 'विश्मिरलाह' तथा 'दरुद' पढ़ने का नियम

शत्र भय नाश्रक

जायं का मंत्र

'बोय' का मन्त इस प्रकार है -

"या लीजाईल बहनक या जीय या जाहिरो।"

को जवते रहने सं मान, का भय दूर हो जाता है। बिधि -- प्रतिदिन पात काल ४० की सहया में ६ दिनों तक इस भःव

इस मन्त्र के साथ 'विभिन्नलाह' तथा 'दहद' पढ़ने का नियम

Math We beg dajid'ent diad

का बातान का क्या या एन या अजीता।"

्रकात्र/तोऽति।।।भेऽति।।श्रीश्रीऽतित्रकः बार अभिमन्त्रित कर ा। । अ विकास कर आयका यांनी में घोल कर जिम • " व व १ १५० व व १३ व व बार वे वा का का का जिल्ला ार काम का तर मान पान पान पान पान कर कार फ्रांक I Thunk to bline in

न । तान नात नाता दणत पहल का नियम पूर्व-

Minist Lin

रोन का सन्त्र

भा विश्वति प्रकृत या शन या गुक्रका का विकास करते तथा दक्षा प्रति का निवस • 10 मा भाग काम पर कारसी लिपि में तार विकास अपास का पान की प्राप्त के घर में ा रा है । या अवका न मधी मिट जाना है।

क्यां करण विश्व श्रीय विदा कारक

प्रः का मन्त्र

गाममा काल बरकत या के या कता हो।"

- Hall and river rest all all and भागा था: व गत के स्थार फारमी निर्मिष में १००० 

भागवना वाल प्रणाना का बंदा फलाना हुन्स फलानी के State which the party of या क्या हा।

नाम सिखना चाहिए। जहां मुझ फ़लानी के बेटे फ़लाने' आया है. बहां अपनी मां का तथा अपना बग में करना हो. उसकी मां का तथा उसका नाम लिखना चाहिए और पिछले बाक्य में जहाँ फ़लानी का बेटा फ़लाना' जाया है. वहाँ जिसे

पुरुष हजार कोस की दूरी से भी चलकर, साधक के सामने जा खड़ा होता है। पूर्वोक्त मन्त्र को ५०० बार पढें। इस प्रकार शाधन करने से इच्छित स्त्री-का फ़लीता बना कर जलायें तथा उस पर इस फ़ल, मिठाई आदि १५५५।। उक्त प्रकार से बाक्य नथा नाम आदि लिखने के बाद उस काराज

में गाढ़ देने से, उस घर में निख नई आफ़त आतो रहती है। co बार फ़ारनी लिपि में 'फ़ें' अक्षर निवानर, उसे शतु के घर को नीव (२) मंगलवार के दिन किसी मन्ध्य की खोपड़ी पर एक सींस में

इस यन्त्र के साथ 'बिस्मिल्लाह' एवं 'दरूद' पढ़ने का नियम

भू रहाम अपने नींद हराम अरने वाला 'काफ्त' का मन्त्र

'काफ,' का मध्य इस प्रकार है —

'या इतराईल बहक्क या काफ या काफियो ।'

अक्षर लिखकर उसके गीचे -विधि एक सफ्द कार्यन के उपर फ़ारसी लिपि में ५०० बार 'काफ़

बहुक्क या काफ या कुह सो। 'या इतराईल फलानी के बेटे फलाने की नींद बन्द करा

नाम निखना चाहिए। फिर उस कागज को पूर्वोक्त मन्त्र "या इतरार्डम . " है, वहां जिस व्यक्ति की नीट हराम करती हो उसकी भी का तथा उसका व्यक्ति की नींद बँध जाती है अचित् उसे नींद नहीं आती। तत्याचात् उस काग्ज को किसी भारी पत्थर के नीचं दबा दें तो साध्य-हारा ४०० बार अभिमानत करें अर्थात् मन्त पर-पढ़ कर फंक मार उन्त वाक्य लिखें। इस बाक्य में जहां 'फ्लामी के वेटे फ्लाने' आया

इस मन्त्र के साथ 'विस्मिल्लाह' तथा 'दक्द' पढ़ने का नियम

600

मियानद स

'गास का मन्त्र

ा । । । । । वा बा बा बा का वा बा का

the bush of the bush

ाना/शार्षता प्रियोगी हो। प्रदेश हिन्दा में २००० की मध्या में को ा ।।।।।।।।।। वा क्षा को लोवान की धनी ं नाम मार्थ दिया जाएगा, उस बहुत बिदा

आम का मन्त्र माप्यता दायक

4 2134 he s a week

गा नाम्बार्-। बहुक्क या लाम या लतीको।" ा । । ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। बार परकर अपने अपन फू क

माना विभिन्न नाहें नथा 'इंड्ड पहले का नियम

लाक्षां प्रयता दायक

'माम' का मन्त्र

A LIEB II'S A II 10 HILL

'या राषाइल बहक्क या मीम महमनी।'

क्ता कारी प्रकार व नीच दवा दे। इस प्रयोग की करने वास 1 2 11 12 1.1 1 1.1 halls sibn sing के अवर फारसी लिपि में ६०० बार 'सीम ा ार रक्त व र का १००० बार पढ़कर फूक बार, तर्परान्त

का मा के के का भी विकास महित्त तथा 'दरूब' पढ़ने का नियम

おもい ないな はいこの

### श्रेष्ठ विद्यादायक एवं स्वप्न में उत्तरदायक 'तून' का सन्त्र

'तून' का मन्त्र इस प्रकार है -

"या बोलोइल या नून या नूरो ।"

२०० बार पढ़ कर सो जाने से इव्छित प्रक्त का उत्तर स्वप्न में मिलता है। भप किया जाय तो शब्द विद्या प्राप्त होती है। (२) यदि ४० दिनों तक नित्य १००० की संख्या में इस मन्द्र का विधि—(१) मुक्सार अथवा बुहस्पतिचार की राजि को यहिन्द्रिमामा किला/तिकितिमार आपना का पहार में निर्मा यहियो।"

पूर्ववत् है। इस मन्त्र के साथ 'बिस्मिल्साह' एवं 'दक्द' पढ़ने का नियम

मनोरथ-पूर्ति कारक

'बाब' का अन्त इस प्रकार है-'वाव' का मन्त्र

''या रफ्तामाईल बहुक्क यो बाव या बहावों।''

पदुपरान्त आगे बढ़ना चाहिए। रोके-टोके तो उसके सामने ७० बार मन्त पढ़कर फूंक मार देनी चाहिए, है। यह ध्यान रखना चाहिए कि रास्ते में कोई रोक-टोक न हो। यदि कोई विधि - इस मन्त्र को पढ़ते हुए कहीं भी जाने से मनोरथ पूरा होता

इम सन्त्र के प्रभाव स्वरूप किसी मनोरय की लेकर यात्रा करते से

वसकी पुति होती है।

पूर्ववत् है। इस मन्त्र के साथ 'बिरियल्लाह' एवं 'दक्द' पढ़ने का नियम

Minor R भवन-सुरधा कारक हैं का मन्त्र

'हे' का मन्त इस प्रकार है -

'या दौराईल बहद्दक या है या हादिया।"

ट्टंगा-फूटना नहीं। ईट को तीव में गांद है, तो वह मकान बधों तक सुरक्षित बना रहेगा, उसके ऊपर पूर्वोक्त स स 'या दौराईल बिधि - ईट के ऊपर फ़ारशी लिपि में ७० बार 'है' लिख कर तथा ं की ७० पढ़कर उस

भुस्तिम तत्त्र-शास्त्र | ३७

ा है किया की तिया में वर्ष के वर्ष के वर्ष के के क्यान पर न रीकरियों पर है अक्षर निखकर, उन्हें भी

का गान के आम 'विकास आहे' एवं 'दहाद' पहने का नियम

मिहा स्नाम्यन कारक 'य' का मन्त्र

lalle . et et e । भारतिम १६० बार जप करने वाले के समक्ष में । ।। राज नहीं नव पातों अयोन दूसरे व्यक्ति का जिल्ल

ा । १ १ १) १ थी विभिन्नसम्बद्धित्या 'दक्द' पहले का नियम

ाना का भाग । का बाग र । ज्यु जिस कामना की पूर्ति की इच्छा - । नन्तर का र मन्त्र का प्रयोग मेलाना बाहिए। in and are use many के विभिन्न अधरों के हे तथा विभिन्न

ा ंच व ताचा का पालन आवश्यक है।

# कुफ्ल, दिन और हाजिरात के मन्त्र

N

सामूहिक रूप तं साधन करने से विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति होती है कुपलों के मन्त्र निम्नानुसार है—

### पहला इप्रल

ब अला आलंडी व अमहाविहा अजमहन।" रलाजी लेसा कमिक्लंही शयद्नद्वा विक्रलं शयहन हकीम विरहमते काया अर हमरोहिमीन सल्लिल्ला हो 'विक्मिल्लाहिर्म्हभानिरहीम विक्मिल्लाहिरस मीइल पसीति-अला-मुहम्मादन

### र्मग कुपल

विरहमनेका या अरहमर्राहर्मान।" पिल्लाजी लेंसा कमिक्तंही शयडत व इवल फनाहुल अलीम ''विश्मिललाहिर्देहमानिर्देशम चिरिमहिल खालेकिल अला

### वासरा क्यल

मतंका या अरहमर्राहिमीन।" मिल्लजी लसा कामम्लही शयहन ''बिस्मिल्लाहिं हमानिर्देहीम विस्मिल्लाहिस्सामीहल हुवलगर्नी इलकद्रिंगो विरह

### बाथा इपल

तेका या अरहमर्राहिमीन ।" मिल्लाजी लैस कमिश्लंही शयहन म हुन्ल अजीजुल क्रीम बिश्य-"विभ्मिल्लाहिंग्हमानिरहीम विभिन्नलाहिन्समीइल अली

> THE STATE OF THE BOARD STATE OF THE STATE OF ा लगा । भग्नारी शायत्व व बहुवल अर्ला मिलस्विं विर-I ilegumilascullaschu बिक्मिला हिस्समिहल अली

इस्लामी मन्त्रों में ६ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में ६ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में ६ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। इस कुपला का अलग-अलग किलामी तकिलोगिकेलें भारतीं में १ कुपल प्रसिद्ध है। त्यात्रात्रात्रां । योष्मल्लाहिल अजीजिर्देशिमल्ल

ा पण पणान का यथान निम्निस्ति है --

. . . । ११ व । ११ पर नियमित में श्रीत

1 '4 11-14 min, 1-1-1 ा तका भागक अभ हक तका हा अधवा जो प्रसद-पीड़ा स ा पान भी भिड़ाई पर ७ बार पट कर वह शिठाई किसी

ार परना का पूज अथवा नीकर घर में आग गया हो तो ा न न न । १ पना की मात बार पढ़कर, उन्हें आप में डाल ा ाका भागती साता है।

। । । प्राप्त का वह जानवर ४ दिन के घीतर हो घर का पान है। ताना व अपन उबन छहा हुएलो को पढ़ कर, उसे ः।। ।। पाता बंग गाय, भेंग, बकरी, बकरा आदि

ा । । । ।।।। ।।।। को ७ बार अभिमतित करके नित्य सात ा किया पाइमा की धाददाश्त (स्मरण-शक्ति) कमजीर हो

 ०० ० ० ० ० ० १ वर्ग १ वर वह ठीक हो जाता दे। ार किया आदमी को मिरगी आती हो अधवा पांगलपन का े न अमय उसके कालों में उशत कुनलों को ७ बार

एक हफ्ते (सप्ताह) में सात दिन है। सातों दिनों के सात अलग-अलग मन्त्र है। इन मन्तों को अलग-अलग दिनों में पढ़ने से विभिन्न मनो-कामनाएँ पूर्ण होती हैं। मन्त इस प्रकार है-

युक्तवार (जुमा) का मन्त-

"या अल्ला हो या वाहिदी।"

शनिवार का मन्त --

रविवार का मन्त्र-

सोमबार का मन्त्र-'या बाहिदी या अन्दी।"

मगलवार का मन्त -,,या समदो या प्रस्ते।"

बुधवार का मन्त्र "या हवियो या कार्युना।"

"या हजाना या सन्ताना।"

हहःपनिवार का मन्त-

"या जुल अलाल बल इकराम।"

साधन-विधि - उक्त मन्त्रों की साधन-विधि इस प्रकार है -

हुसैन का आहार कर और दीवक के आगे फूल, इस और मिठाई बढ़ाकर अवन कोई पुनिधत तेल भरकर जलाये। फिर इमाम हसन तथा इसाम लोबान की धूनी दें। इसके बाद मन्त्र की १००० का संख्या में जपें। किसा स्वच्छ स्थान में एक नया चिराग रखकर, उसमें युद्ध को

पर सीना चाहिए तथा बहाबयं का पूरी तरह पासन करना चाहिए। साधन काल में दिन में सिर्फ एक बार हरूका भोजन करना चाहिए, पृथ्वी 'दरूद' अवश्य पढ़ें तथा मन्त्र के अन्त में भी ३ बार दरूद' पढ़ती चाहिए। उक्ष प्रकार से ७ दिन तक जय करने से प्रयोग पूरा होता है। सन्त-मन्त-जप के आरम्भ में एक बार 'बिस्मिल्लाह' तथा तीन बार

का ही जप करना चाहिए। है, वह पूरी होती है। अलग-असग दिनों में उस दिन में सम्बर्धित मन्त इस प्रकार जिस इंडछा को लेकर इन मन्त्रों का साधन किया जाता

"या नहमाना या रहीमा ।" issuu.com/abdul@//वाडा/टाडाईनिहारि

ार के ल्या हम मन्त्र में कि होंगे एक आकार के होंगे क म किया तार का तक पुट हुए (विकने सफ़ द) - his but by a

-	90	1, 10	2.5
14		90	11
2.3	86	20	22
m N	Œ	20	20

। । । । । । । । । । । । वायहां करनो पर लोहे को कीन गरंबे ां () () वानक की, बने में फूनों की माला पहिलाकर " । जिल्लामा अर्थ आर वालक को असी-भांति स्नान कराने

ा । भग भग भग । भड़ाई आंर इल-ये बस्तुएँ बादगाह की भंट के ा जनका । बनेना का तेन भरकर उसे जनकिर रक्खे तथा एक

मुस्सिम नन्य-सास्त्र (१

ं के न राग रिक्त कर नाम है। जिसमें एक छोटे बालक की

हारिसान के मन्त्र

ं तम र अ विश्व क्या भाग है, सहुपरोत्त अन्य प्रयोग

ा । । । । ।।। । । । । । । । । किये आते हैं।

ा ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।। ।।। ।।। नथा बसके मन्द्रा का उल्लेख करता का का अस विधिया का वर्णन आगे किया

बालक के शरीर पर सारत जाएं नगं हुए बाबल तथा फुलो पर निम्निसिश्चन अजीमन पहते हुए उन्ह पर बालक की अपनी निगाह (इंटिट) जमान के लिए कह तथा स्वयं इन इसके बाद पूर्वोक्त यन्त्र में प्रद्रित कामे रंग के बाने (कोण्डक

1. 10

भा । १८८ सन प्रत

13011110

कलवा बारा बन्धा बटारामे शाकिनी कामन

चार चार्चर आगया बताल बना

। "।।। ।। । वाध ल्याव ता इहाई मुल्यान प्राप्त्र की।" | Angan | Angan | प्रमुखनमानी न होकर लोक-प्रचलित देखी

ा । । । अक्षा ज्यान हिन्दु तथा सुमलमान दोना म खुन

ा है। मिर्फ असी यहा जिल्ला क्रिया गर्मा है।

7	=	14	
7		11	19
14	11	0	40
77	3	7.	•

ार । ता राज्य का भाग्र हा जाने पर जब हाजियात करनी हो

ा । वा मन्य भिद्ध हो आना है।

issuu.com/ab.tul\_c/intall/odlishar ४- दिनो नक नित्य १८०० की

ىية 4 d OC N 4 34 4 अ 4

या रफ्तमाईल या तन्ककाल बहकक या बुद्द हरमन इस्मन

''विक्मिल्लाहिंग्हमानिंग्होम अजवा या जित्राईल या दग्दाईल

हम्मन बहक्क लाइलाइलिलालेक्नाह युहम्बद रखालक्लाह या

हेकल या हेकलन या काकल या काकलन बहक्क सलमान नवा

जिन क्या करते की कामकार आसामें तथा बलते हुए योजक के आमे - 100 · वर्ता के मार कर पाना गर कोर क्षीपक में नवेलों का तम मरकर . . . . । । । ५ ०।१ तथा वन-छ बरस पहिला कर बैठाय । कन्या . . . . . . . । वा क्यान हो बनी बनाये । फिर एक सकडी का नाम म अनाब हुए महक की राख को रुई म . . . व रायक का आ बेटाया जा महता है। । १८ । १६ ना विष्टता में जमीन का लीप कर उस

न्यरहुनी तेरा सादाव इरो वाचीर वादवातिकार "विनिमल्लाहिर हमानिर हीम सुदाई बड़ी सू बड़ा जेंतुहीनपैग तेरी शक्ति देनि बाँच स्थाय ती बाद वा हुगदी ने दुनियादी तुड

रखकर, जा कुछ पुछला हो यह बालक में पुछ लेता चारिए।

जब बातक के ऊपर वादणाह आहे, तब मेवा-मिठाई की मेट सामते

इस विधि में पहले निस्न'लिखित मन्त को सिद्ध करना आवश्यक

दूसरी विधि

विन दाउँद अलह्म्मलाय ।

यन्त को रखकर उसका फूल, इत तथा मिठाई से पूजन करें। यह धोपक सकड़ी के पहटे पर वेटी कन्या या बालक की टिप्ट के एकदम सामन रहना चाहिए।

1	7	D	-
2	₹	\$	>
D	9	7	3
2	7	2	>
<u>_</u>	4		(:
		9	

फिर कत्या अथवा बालक के हाथों की हथेनियों पर पूर्वोक्त सेंद्रेक की राख को चमेली के तैस में सान कर लगा है तथा उसे दीपक के उत्तर अपनी होय्ट अमा हेने के लिए कहें। जब बह दीपक पर अपनी निगात कमा है, तब अपने हाथों में बावल लेकर उन्हें पूर्वोक्त मन्त्र में अपमन्तिन करे। फिर बालक से बावल लेकर उन्हें पूर्वोक्त मन्त्र में अपमन्तिन करे। फिर बालक या कर्या के सिर पर उस दीपक को रखकर, अध्यमन्तिन बावलों को कत्या अथवा बालक के गरीर पर मारते हुए उममें इन्छित प्रथन का उत्तर मांगे तो जो कुछ पूछा बायेगा, उसका उत्तर मिलता बला जाएगा।

# suu.com/abdul23/niali/adisha

### गन्न की दिशाएँ

ा । वास विकार का विकास है। विकास के बाँधे पार्टिकार के अन्तर्गत साना है।

ं । । । । । । । । । । प्रश्निम किया स्था है।



0:0:0

मुक्

2	9	-	2
D	h.	7	11
10	7	7	>

कर्मों के लिए बनाया जाता है। इनका नियम यह है कि जिस नाम का १६ कोठे (खाने या कोष्ठक) वाले यन्त्रों की वशीकरण-मारण आदि

	90	441	12	1
	20	30	N	36
	8	пh	6	88
23	43	A	23	14.90

issumcom/30रामिक्यित्वान्याक्षित्र ग्राहित्वा स्थानित असे मिने प्रदेशित यन्त

ा तक प्राप्त के स्थाप से अकी की जोड़ कर उसमें से ३० तक प्राप्त के के अपने की आई से जो पूजा अंक आये अथित् ना तर बान शांस भग को प्रत्में कोठे में रखकर लेख १५ the little in the state of the state of

मुस्तिम तस्त्र-साम्य । ८७

स्रोत			(	نشما ل آ بر				ওন ওনা	र	
सोलह कोठे	30.	7	-	7		क्रम	נג	10	N	
	1); 3	-		-	C .C	**	~		10	3777
वाल		7	-	7	1		и	10	N	*
यन्त्र	26	25				20	दग्ध रवा	मेण न्ही		

४८ | युस्तिम तन्त्र-शास्त्र

खबहरण - 'रामचन्द्र' नाम के रहन अंक होते हैं (किस अक्षर के कितने अंक होते हैं, इसका वर्णन आगे किया गया है।)

तो यन्त को नीचे प्रविधात यन्त्र-चित्र के अनुसार भरा जायेगा तथा इस 'र' के २००, 'बा' का १, 'म' के ४०, 'च' के ३, 'न' के ४० तथा 'ट' के ४। इनमें से ३० घटा देने पर २६८ अंक णेप रहे। चौथाई।अक ६७ है

यन्त्र को न्क्ष्य का यन्त्र माना आएगा-

60 62 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60 60		66	th th	65	80
		69	22	מ	66
		60	64	63	70
4 6 4 6	3	۲%	62	50	6

issumpontal interesting interesting 3 cont 22 he A. N 66 rh) 6 Q, 201 22 5 10

22

~ 170

2 210

D

49

フス

1

D

77

4

1

·

기

67

< >

77

5

>

h 100

1

7

70

-0

-0

~

77

17

2

74

9

मस्तिम तन्त्र-नाम्य | ४८

··· १ बना म मा कराने पर शेष ऐसा अंक बचे, जिसकी कात हुए ३ कोठे १४।१४।१६ को घर तथा प्रारम्भ ा । । । । । । । । । । । । वाहा या चीवाई अाता हो, तो समस्त 1 Pale 2 to 4 to 1

गया है। बो यन्त तय्यार होगा, उसके स्वक्ष को पिछले पृथ्ठ पर प्रविधित किया। रहे। इनको १३वें घर में रक्का गया तो ४६७ हो गया। इसी प्रकार से बीबाई १४१ अंक पूरा नहीं आया तो ४६७ में मे २१ घटाने पर शेष ४७६ के प्रथा अंक होते हैं। 'क' के २०', 'मा' के ३००, 'की' के ६, 'र' के २०० 'हैं के १० और 'ल' के ३०। इनमें से ३० घटाने पर ग्रेष १६७ रहे। इनके चदाहरण के लिए हिन्दी अक्षरों के अंकों के हिसाब से 'किशोधीलाल

## कारसी अझरों के अंक

अंक अनावश्यक समझ कर नहीं दिये जा रहे हैं-फ़ारसी अक्षरों के अंक इस प्रकार जिने जाते हैं- यहाँ हिन्दी अक्षरों के हिन्दी तथा फारसी अक्षरों के अंकों का हिसाब अलग-असग होता है

स्वाद-१०	<b>利</b> 和一年00	सोन—६०	9	2000	जाल७००	दास४	4 - Koo	מין יין	<b>昭</b> 由一本	#-Yee	- coo	- v	वालफ — द
96-40	le l	बाव - ६	77-10	मीय४०	लाम—३०	गाफ—२०	oop-inth	<b>.51</b> ,	सन-१०००	ऐन७०	जोय-६००	लोय − €	जवाद ५००

बनत नियम को ध्यान में रखते हुए यन्त्र-लेखन कार्य न्ता

### यन्त्रों के जबं खाते

बाठों जब में उतने ही अब आने पर यन्त होता है। पहला अंक बाहर के इ चरों में से किसी घर में रक्खा आय, उससे यन्त की दादी, आबी आदि ४ प्रकार की प्रकृति जानी जाती है। ६ कोष्ठक के बन्त के द जब खाते होते हैं। जितने का यन्त हो

### पाना यन्त्र

ा ।। व राष । उसाः कुछ भेडों का यहाँ वर्णन · - । । । ।। । ।। । । । । ।। भा भा भा भा भा चार्चा न हो, उसे माना । । ।।।।।न की मानानानी इस प्रकार है-ा । । १९ ० ई अध्यो प्रत मन्त्र हो नो उसका बप ा अका जना में दान दना बाहिए। .... १४ पानी डाल देना चाहिए।

### I des jilbe heeb pet h . गरा वामा यन्त्र (१)

का का वा का कि दे कर तना बाहिए, तरपश्चात्

। । । । । । । । न के जा का विधान भी हो तो

ात का पनिस्ति २० की संख्या में लिखना - ना का तोक कालानगार पृथ्वी पर लिखकर मिटाते रहें \* ।। व का प्राप्त को बाजा अपने हृदय में ले लेनी · • । ।।।। उसका पुजन करें। सद्भवम ाल का र अवां बीसा यन्त्र कहा जाता है। इसे ाक्ष - - बार यहा मन्त पढ़े।

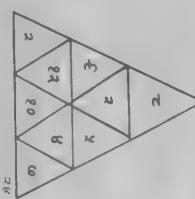
7 7 7 -राराइल या रफ्ताइल या तन्काकील

### 8 11 h 1 14 1 . c.

था पर ह ।

. . . . व किंगा मन्द एक वे समय यन्त्र को अपनी निवाह के ा नामा भी नव भागभा दिन बाकी रहे तब ४०० बार तान पदम के बाद फिर ४० बार प्रवक्ति

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार होगा



issuu. ao an abaut 28/njalika elishen u-a

ाक नार्वन कोला पन्त्र १० जबाँ है। इस यन्त्र को कागज पर

किता कलात्व को बिद्ध करने के लिए जब बन्ध का साधन किया बार शाना या यान्त्र के नीचे सिख देना चाहिए तथा बाद में म मार् दना बाहिए अथवा सिल के नीचे दबा दना चाहिए।

··· । बारं का पाठ करके आदि तथा अन्त में बानीस-बानीस बार ा ग्रह्माक महत्रक रामा व भाग का पाठ करना बाहिए। मन्त्र-जप के प्रारम्भ में एक बाव

मुस्सिम तन्त्र-बास्त्र । १३

2 > 0 -0 T

शिदि के लिए काल लिखे तो पूर्वोबत प्रकार म पजन करक • हजार बार बड़ा मःस पढ़ना वर्णहरू । बाद में आवष्यकतानुसार अब किसी मनोरथ की

0) 00

भाहिए।इस प्रकार यन्त्र सिट हो जायेगा।

यन्त के सिट हो जाने के बाद प्रतिदिन १ यन्त्र सिखकर १०१ बार

सन्ध्या के समय यान की गोली बांध कर उमे नदी में वहा रेना

10

2

9

0

T

>

2

A,

4

N

-

\*

T

MY

4

3

ئية

m

n

lui.

d

> 2 7 -5

### ८ ज़र्वा बीसा यन्त्र

नीचे प्रदर्शित शीसा यन्त्र को राति के समय पीपल के पत्तों के ऊपर अन्तिगतती संख्या में लिखते रहने से यन्त्र को अग्रुद्धता निकल जाती है। यन्त्र का स्वरूप यह है

	もい	dy	А
	2 8	6	/w
22	æ	æ	20

issuu.कुंग्ल/abdul\_3/nialij/वृश्वांक्रीत्व यन्त

ां । १ १४। ।। १ १ वर्षा है। इसे लिखने तथा प्रयोग करने

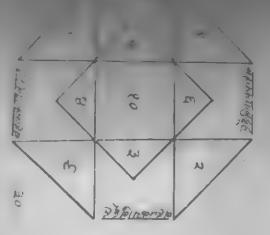
ा ना ना र हा समझना चाहिए।

·· • • । जन गर्य । वीम पत्र ने यन्त्र की भांति ही समझनी चाहिए ।

ारात पादर अ००० बार "या **बुद**्हु" मन्त्र को पढ़ना चाहिए। जनत है नादि नेता अन्ते में ४०-४० बार बड़ा मन्द्र पहुंचा

मुस्सिम सन्त-नास्थ । ४४

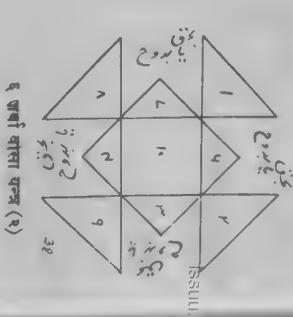
यस्त्र को लिखसे समय सर्वे प्रचम पूरी 'बिस्मिल्लाह' पड़कर पूर्वोक्त बड़े मन्त्र—"या बिजाईस या दर .... " का जप करते जाना चाहिए

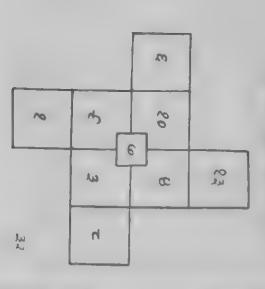


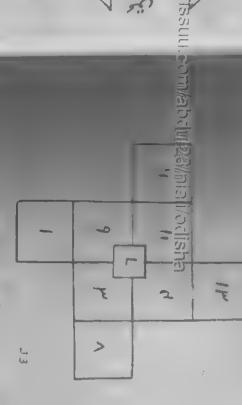
>

3









### पन्द्रह का यन्त्र

। जन्म । वार्ता (२) बादी, (३) आदी सथा (४) आहणी।

का कर कर कर इस प्रकार होता है-

60	~	ч
7	4	2
7	D	E
4		>

प कर । को राजिया जुप कन्या संधा मकर मानी गई है।

6

T.

अंत्रका का प्रकारित बहुनक या ताहियो ॥धा बनका ता कन क्षांन या बहरक या हलाया प्रधान प्रकार था माना स्थान बहुक्क या नेदेहर थिया पन था या रामार्थन बहुनक या रङ्गको हि।

00 1 Ч 6 k ئىلا N nh 00 Asi N ے > -D 7 -0 250 2

Prolet by the same

बरक्क या द्वारिया ॥१॥ बंशका या दाहमी ॥४॥ बहरू या जामको ॥३॥ बहुक्क या बुद्दुह ।।२।। नामा सामान बहुबक्त धा अल्ला हो।।१।

आबा यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार अस्ता है

नीचे दवा दता चाहिए अथवा दश्वाजे पर लटका देना चाहिए। चाहिए। इस यन्त्र की दिशा पश्चिम है नथा उम उच्चादन एवं मानण कम (३) महिकाईन है। इस वन्त्र को स्थाही, रवत अथवा चन्द्रन में लिखना के लिए प्रयोग के लाया जाता है। साधनीपरान्त इस यन्त्र की पत्थर के राणियों के मुत्रक्किल क्रमशः (१) इप्लाफील, रो इस्मार्टल तथा इस यन्त्र की राशियों मिधुन, तुला और कुम्भ मानी गई है। इन

>	7	2
_	D	9
£	٢	900

4	ALL	Œ
70	Ac .	d
5	6	ىد
		J

बादा यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनता है --

से सफ़ीद काग्ज पर लिखना बाहिए। इस यन्त्र की विशा दक्षिण है तथा इसे स्पिर-कमों की सिद्धि के लिए प्रयोग में लागा जाता है। साधनीपरान्त इस यन्त्र को पृथ्वी है में गाढ़ दिया जाता। (३) सरकाईल हैं। इस यन्त्र को भोजपत पर अब्टगंश से या कालो स्याही इन राशियों के मुवक्किल क्रमशः (१) इच्छाईल, (२) जिबाईल, तथा

								2167631
1 1 2	- 4		or line	Ш	*	· ·	3	113-119
भागत के महाश्र के कोने के महाश	ा भाग से बना देना चाहिए।	मार स्था स्थाती म जिल्लाम वर्णत्य । इस यन्त	ार्थाकाल, ए जहराहल तथा (३) सरताहल		4	٤	ч	いたとうとしていているというにはいいです
원, 원,	तला देना चार	四學 五 何	द्याप्ति, प्रे बहुरहिन तथा (३) सरताहिन		~	5-	<	7777
의 선 의	20 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1	ना चाहि	न तथा।	i.	~	D		
4	म जना देना चाहिए।	ए। इस यन्त	३) सरताईल	200	7	e de	>	

र ता श्वाम ( इस घराट बनता है-

र्युटन्य तन्त्र-शास्त्र 4

. . . । प्रमाण । ११। इंट्रेसार्टन, ार वक्षाहल तथा (के) सर-

।। ।। ।। मा म्याला स महिन् कामज पर चित्रवा चाहिए।

ा । ता ता ता वहने हुए पानी में बहा देना चाहिए। ार्थ है अथा इसे चर-करों के लिए प्रयोग में लाया

ना । ।। १० १० । ता लिखा प्रत्येक कोट को निखते समय

पन्तर के पन्त्र के प्रत्येक कोठे के अलग-अलग मन्त्र इस प्रकार है

	Ч	या हलींमा	या अत्यह	3
	, LU	या जातिओ या दाउँ मे	र प्राम्याद्रके	या (ज्जिन
22	000	पाराइमो	3-	2 डेस्ट्रा

j	Ŋ	P	v	
4	d	k,	٠	

> 12	112	3000
of Stole	3) 16 %	Since of the second
2010	1 47.66	7

योगिनी बीट पाछ रहनी चाहिए। फिर ानी भग घरा तथा दीपक जला आयन विश्वासर प्रथ कार दिला, चर्डम: आर्ट का विचार करने थेट। पुरत्यक 'हिन्द तन्त-नाम्न' का अध्ययन करना चालिए।) स्याही सं यन्त्र की जिस्ताना आगरभ कर । क्षित्रक के विषय में हमार कर सामने रक्ष तथा लोबान की धनी दकर मध्द कथान पर काला विधि कियो गुन्न महीन के पटन बुटम्पनि की कुमचक के अनुमार

issuu. देवान/वर्गामा स्थानांगां/त्रांडोर्ज्य मधक की मनोकामना पूज हो ार का किम्पान नाहर पह कर एक-एक यस्त को १०१-१०१ ताला । वा वाता चालिया प्रतितित १०१ यन्त्र नियम ं ।। ।। विश्वासन साधन करने रहने पर, प्रयोग मा ।। वर्गाट तथा अन्य में भूग-११ बार देखत

## य=प्र लिखने की कचम

ार शासा ता ना ने र ग्या वा वा प्रांत व्यु १५ क यन्त्र को विभिन्न

m 110 ( जिए मान अथवा चौदी की कलम में। ाण र ।।। सामन को पकड़ों को कनम सा। ं रा 'नांद्र के जिए समेक्नो की लक्षी की कलम से। बागद का जरहां को कलम म। प्राका कलम ग।

or of other diser के केगर, चंदन अगर, कपुर तथा कम्तूरो ा पर ती इन विश्वत का विषय है। यथा ा , । जा प्रशार भाजपत्रनथा कागज के आंतरियत विभिन्न तिया तामनाथा का प्रति हेर्नु अन्य बस्तुश्री की प्रयोग

ा । ।। । १ विषय अनावन के पन्ते पर । कार्त । १ (तम क्या के पहले पर । । । । ।। कमन के पतने पर। ूर का बनाइ स पन्ने पर। शंका के कन पर ।

# प बर ६ यन्त्र के विविध प्रयोग

11 41 41 41 41 51 17 20 1 ा । । । । । वर्ष के कुल्लावश्च की चतुर्दकों के दिन बश्वद की । । । का संस्था में सिलान म छुमे, अर्थ, काम

म लग बन्धन न कर जाता है तथा संवत्त की स्वामी म मिनता ब शार ना करमा न पहली के उपर १००० की मंद्रमा में जिल्लाने

भाग्य को कथा में जिल्हा पर दिख्ता का नाम होता है।

ा वर्ग वर भा कथा में, सावाज के उत्तर १०० की संख्या में क्रिका क्रिका । क्रांचालिक कल की बार्टिन हाती है। गांच । तंत्रांत क्षार तयर नया गोरोबन को ध्याहो बना

४ - वेन के पत्नां का रस हरतान और मैन्सिल - इन सबके मिश्रण हाश बेल को कलाय न २००० को सम्मा में गन्त किया एकान नथा गुभ स्थान में बैठकर पृथ्वो पर निवान स सनीभलावाएँ पूर्ण होनी है।

६ - आक के पनो के उस में आक के पनो पर हो १०० की संख्या में यन्त्र निखकर को कर । अंजुल। के बुध में बांध देन से उन्दें जैसे प्रवस शतु को भी जबर तथा देहेशून का शिकार बनना पहना है।

७ - हन्दों की पानी में विमक्तर उसके द्वारा प्रवर के जिल्ही।।। पान्त विमक्तर उम दुश्मन के घर की चौजार के नाचे गांद रेने में, उसकी अपने बेटे, भाई मबंधी आदि ने कन्मह होने लगनों है।

अशासार्थ अशासार्थ आधार विर्यालना या अलाहारा के रस से भीजपत
 के उपर यह यन्त्र निखार उत्तर-शोग के शक्य में बोध देन से तिजारी
 वीषेश आदि हर प्रकार के पार्थ के ज्यर हुए हो जाते है।

ह - मोगर के रम में भी जरत वर उस मंत्र को लिखकर सुजा तथ हृदय पर धारण करने के गाम्बाय में विजय होती है।

१- पन्दह के बन्द की शवा नाख गोलियों तथ्यार करके उन्ह अलग-अलग आहे को गोलियों में बन्द कर नथा गोलियों को मछलियों को खाने के लिए पानी में राज दें नो सभी मनोकासनाएँ पूर्ण होती हैं।

११ आक के पनों पर पण्डह दियों नक निश्य १०८८ की संख्या में इस यन्त्र को लिखें नेपा यन्त्र के नीचे शतु का नाम सिखकर उन यन्त्र-लिखित पत्तों को असि में जला दें तो शतु का नाथ हो जाता है।

### अन्य नियम

१ – कार्य सिद्धि के लिए पन्द्रह के यन्त्र को ज्ञिनके समय उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बेठना चाहिए तथा अतार को कलम से लिखना बाहिए।

२—शतु को कस्ट पहुँचान अथक, गरण-कम के लिए पन्द्रह के यन्त्र को लिखते समय दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बंठना चाहिए तथा लोहें की क़लम से लिखना चाहिए। यन्त्र को १०१ बार लिखकर मिटाना चाहिए तथा वैशो के नाम का संकल्प करना चाहिए।

३ - शुक्ष-कार्य के लिए लिखना हो तो पहले संकल्प करके शुक्स पक्ष के किसी उनस दिन सार्टन को जिसका आरम्भ करना चाहिए।

८—अगुप्त कार्य के लिए लिखना हो तो कुला पक्ष में किसी अगुप्त दिन में यंत्र का सिखना आरम्भ करना चाहिए।

४.—पन्छह के बन्त का साधन करते समय ब्रह्मचर्य से रहना काहिए एवं केवल मूर्ग की दाल तथा चावल का भीजन करना चहिए।

पन का 'लपन व बाद नदी में बहा देना चाहिए। जो यह पत का पता का पता का पता चाहिए। जो यह पता का पता का

om/abdul 20/11all odisha-2000 धनरानाः नान करने के लिए - १०००० OCOS DEJ & BLE Ent II Der ा क देर करन नथा मुख-प्राप्ति के सिए --२००० न शारी देश करने के लिए -- ६००० शासाचा का बाहित करने के लिए -२००० गोगांध की सिद्धि के लिए-१००० ॥ १४। दूर करने के निए - २००० का नाम के जिल्ला - न्यू गान को सिद्धि के लिए - ३००० भाग में भिलाप के लिए -२००० भाग वे उन्धादन में वृद्धि के मिए पार । शापी प्रसन्नता के लिए - १००० ाप को वहा से करने के लिए - २००० गर्व-व्ययुक्ती प्राप्त करने के लिए ५००० अन्याधित काय के लिए - १५००० बांध क्यां की गर्थ-धारण के लिए- ५००० ान मुक्ति के निग -- ६००० प्रत की भगाने के लिए 2000 ा। ज शर हात की घर बलान के लिए-- २००० 111, 11'97 \$ FATT - Even ाना का प्रश्नाम के जिल - ५००० 4 19 19 4 1711 3 000 ानवात्र पारित के लिए में १००० ा। वा प्रवासी के लिए - ४००० 2000

## वारानुसार यन्त्र-प्रयोग

शंबर नाम (दिनो) में १४ के यन्त्र की विभिन्न भाति से लिखने

पर विभिन्न कामनाएँ पूर्ण होतो है । इस मध्वन्छ में निष्नामुसार मध्झना चाहिए

रिवार प्रियार के दिन आहे के दूध में मण्यर की भग्म मिना-कर पण्डें का यन्त्र निखंतया उसके तीने श्राप्त का नाम किखकर निना की बरित में उत्त हैं। ऐसा ५०८ यार करते से यानु विकित्त हो जाता है।

सोमबार मोमवार के दिन सफाँद दूध, केनर, मफेद निर्मारी सथा करिया गाय का दूध हन सबको मिला कर मध्या के समय निर्माण यान्य की विलोग नीति में लिखकर बाहु अथवा कर में बीहा ले की राजा भी बशीभूत हो जाता है अन्य सामी के विषय में तो कहना हो क्या है?

मनावार समानवार के दिन की। के एख की कलम टारा की। है। रबन में, मुद्दे के कहाने के अपर साह्य-व्यक्ति के नाम महित घटन की निसंकार, उसर (साह्य-व्यक्ति) के दरवाजे पर नाद दे तो साह्य-व्यक्ति का उच्चाहन होना है।

बुधवार बुधवार के दिन नात केणर तथा गोरोजन से यन्त्र को बागज पर नियंकर बनी बनान किर उन सक्यों के तैन के दीवक में बनाकर समुख्य की स्थापकों में काजन पारे मंधा तस काजस का अपनी अख्यों में नगाकर जिस साह्य स्त्री-पुरुष के सामने जायेगे, वह देखते ही बशोभूत हो जायेगा।

गुडवार गुडवार के दिन हत्त्वी, गोशीनन तथा थी. इन सब बस्तुओं के मिश्रण म यन्त्र को लिखकर उसके नीने साध्य व्यक्ति का नाम क्षित्र किर उस पत्त्र को अपने बैठन के आगन के लेचे देवादे तो साध्य-व्यक्ति का आन्ध्यत शाना है।

शुक्रकार ज्ञासार के दिन कपुर खब ब्रह्म पोट पहिट उन सब यक्ताओं के भिन्नाकर सक्ता के किया जाता उन कह अन्ता भूजों में बोधाने तो भाष्य स्त्रों अवन तो समन एवं धन सहित साधक के समीप बली आर्ति है

शनिवार जिन्दार के दिन चिना की खन्न हो को कलम नथा प्रो के रकत द्वारा उन्दा पन्त जिलकर उसके नीचे साध्य व्यक्ति का नाम लिखे फिर उसे मरफर में गांद देने संसाध्य-व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

# यन्त्रसम्भन के विषय में अन्य ज्ञानत्य

ियो भी गन्त को सिखने समय निस्तिनिखन नियमों का पासन करना आवण्यक है

ा यन्त्र नेस्थन में पूर्व शीव-स्तानादि में निवृत्त हो जाना आव-वयक है।

> किमी पवित्र स्थान में, शुभ मुहूर्त का विचार करके 'कुमीसन । किम स बंटकर ही यन्त्र सिखना चाहिए।

ः जिनने दिनों तक यन्त्र-साधन करे, उतने दिनों तक पूर्ण बह्मचर्य ।। १४व करना चाहिए तथा हर प्रकार को खुराई, पाप-कर्म- असत्य-। १४वा, निन्दा, ईध्यो, कोध आदि से दूर रहना चाहिए।

यन सिवन का समय निष्यत कर सेना बाहिए अर्थात प्रति

प्रस्त से पूर्व पानी से भरेक लगा (घड़े) को अपने सामने न्यापित
 ाना चाहिए अथवा राजि में लिखना हो तो सामने दीपक जना लेना

ध यदि एक से अधिक सब्दा में यस्त लिखते हों तो अस्तिम बार ए काने याने यन्त्र का विधिवत् पूजने करना चाहिए। जहां केवल एक ए कि निक्षने का विधान हो. बहां पहले हो यन्त्र का विधिवत् पूजन ला बाहिए। यन्त्र पूजन से धूप, दोष, नैवेदा, पुष्प आदि का होना

 मुस्लिय-विधि में यन्त्र को मकेद कागज पर काली स्याही से का बाता है। हिन्द्-विधि में यन्त्र लिखने के विभिन्न प्रकारों के विधय । अने बनाया जा चका है।

धिन्नता के लिथे यन्त्र सिखना हो हो मुँह में मिन्नी अथवा गाय
 भे रणकर सिखना चाहिए तथा अगर-सगर, चन्द्रक चुरा गयल, मिन्नी,
 वा गहर, कपूर, दान चीना, आयफल तथा मेवा --इन सबको
 वर एय देनी चाहिए।

श्मारण-उच्चाटन के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुह में मोम रख भारण नथा उसी (मोम) का घूनी देनी चाहिये।

थ० यदि स्वय्न बन्द करने के लिए यन्त्र लिखना हो तो मुँह में
 अयक गखना चाहिए नथा उसी (नमक) की धुनी देनी चाहिए।

भी यन्त्र लिखने बाले तथा साध्य-व्यक्ति की राणि का सिलान भान लिखना उचित है। यदि साधक की राणि आबी तथा साध्य बाले हो ने आबी यन्त्र निखना चाहिए। क्योंकि जल ब्रान्ति से न अना है। इसी प्रकार साधक की राणि 'बाबी' और साध्य की

प्रयोगी का उन्त्य किया जा रहा है। कार्य-साधक नथा दुकान की विक्री खोलने से सम्बन्धित कतिपक मुख्य इस प्रकरण में मनोकामनापूरक रिष्ट्रता नामक, राजिकिसा, रोजिकिसा, रोजिकिसा, विज्ञानिकिसा, विज्ञानिकिसा, विज्ञानिकिसा,

अतः उनका उल्लेख भी साथ हा कर दिया गया है। प्रजालन है, परन्यु इस्त हिन्दू तथा मुसलमान दोना हो प्रयोग म लान है मसीवन टानन का मन्त्र ' ये नीना शह 'इस्लामा प्रवास' न टाकर मोक इन पर्याचा में अन्तिम न पूर्व के दो प्रयोग 'कार्य साधन मन्त्र स्थ

क्षत्र तथा सन्त्र दोनों की साधना को जानी है। जेव सभी प्रयोग केवस इन रोना में पहले में केवन यन्त्र का साधन किया जाता है नथा दसने में गया है, उसका यथोचित रूप में माधन करना चाहिए। सन्य साधन के हैं, अतः जिस प्रयोग के साथ जिस विधि का उल्लेख किया मनोकारमा पूरक पन्त्र तथा जोजी मिलने का प्रयोग मध्या (४)

भी इस नियम का पालन करना आवण्यकह । प्रयोगा में साथ ही कर दिया गया है, परन्यु बहा ऐसा निरंश न हो, वहा बिक्सित्साहं नथा 'दरूद' पहने की आवण्यकता का उल्लेख अधिकाश भी निहायत अक्षणे है। अन इस नियम का पालन अवश्य करना साहिए। पहला आवश्यक है नद्परात्न मन्त्र के आरम्भ नमा अन्त में दक्षद प्रता मुसन्धाना मन्त्र का साधन करते समय संबंधभम पूर्वा 'विशिधन्त्राह' का जेंसा कि प्रथम प्रकरण में ही बनाया जा बुका है कि किसी भी

## मनाकामना पुरक यन्त्र

बोह में बांध दिया जाता है, उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण होती है। गुगल तथा नाबान की धनी देन के बाद ताबीज में भरकर जिस व्यक्ति की नीचे प्रदेशिन यन्त्र को सफेट कांगज पर काली स्याक्षी में लिखकर

तथा स्थास्थ्य का साभ होता है एवं शतु मित्र बन बाता है। इस यन्त्र को ताबीज में भरकर गर्ने या भुजा में बोधने में धन यश

प्रमाण में लाना चाहिए।

श्वरण प्रजन करने में वन्त्र सिद्ध हो जाता है। मिद्ध हो जाने के बाद

| wunt - किमी यहण के समय इस यन्त्र की

१०००० बार कागज

THE PARTY

"। मन को पानी में घोनकर रोगी-व्यक्ति को पिनाने से उपका

मुस्लिम तन्त-शान्त । ६०

		WART.	A 86.42	70 %	32 80	47	333398	30	IN KER
	33885	×	2304	70 H	432	ф	23.8	320	29
	978	En .	33.08	מל מל	332328	<b>10</b> K	BOEB	おれる	38
	2083	23	33.2	B	348	32	63 50	XE BJ 433	2
zz z	SHIPE WAS	नुसा काजा	336888	70 20	2306	נג	200	W. S. Suday	meshere

## द्रिवना-नाशक प्रयोग

धान काल किसी में बातचीत करने से पूर्व. हाथ-मुँह घोकर एक ।। शे बिरिमन्ताह पढ़ने के बाद निस्तिखित सन्द का १२०० बार

१००१ऽऽ।।।। अञ्चाता/ठोठहा । प्रश्निका प्रतिका या महीको या बकीको ।'' १००१ऽऽ।।।। अञ्चाता/ठोठहा । प्रश्निका जिल्ला विश्व का पाठ भी

द्वम प्रयोग को निरुत्तर ४० दिनों तक करते रहने से दरिद्रता दूर भा है। यदि इस प्रयोग को प्रतिदिन किया जाय तो दरिद्रता से हमेशा । भा धुटकारा मिल जाता है।

## रोजी मिलने का प्रयोग (१)

भोजी मिसने के लिये सब्ज्ञायम पहले एक बार पूरी 'विन्यल्लाह' । का फिर नीचे लिखे मन्त्र को ७ दिनों नक, निन्य १००० की संख्या में । जा चाड़िए। अन्त्र-जाप के आरम्भ तथा अन्त में तान-तीन बार 'दकद' । जा आवश्यक है।

मन्त्र—''या बुद्दृह या या हथियो या कथियमा या अल्लाहो ।। फरदा या बितरा या समदो या रहीमो या बारिसो या अहदो ।। अध्यक्तिहो बलम युलद बलमयकुन लुहु कुफ्शन अहद।''

उक्त सन्त्र के प्रयोग से रोजी प्राप्त होती है। खब रोजी मिलना । । । । हो जाय. तब निश्य १०८ बार इस मन्त्र का अप करते रहना । । । । । है ।

## रोजी मिलने का प्रयोग (२)

गर्ना नथा लाभ पाने के लिए आधी रात के समय सबसे पहले एक । पूर्वा बिस्मल्लाह पढ़कर, फिर नीचे लिखे मन्त्र को १००० बार

### 'या ग्रधुरो'

उक्त मन्त्र को पढ़ने के पहले तथा बाद में २९ बार 'दश्रद' पढ़ना बाबश्यक है।

प्रकास दिनों तक उन्त प्रयोग करने से साथ तथा रोजी-प्राप्ति की प्रकारिकाई देने सगती है।

### 1261617 CYN9 709 - 3 7 = 29> 190 4647 661221A ア・ロ 797 > Ø م 200 N672 ADN 6624AN えて.る 796 20 0 7 4 - 9 1617 9919ppa 02. du - · · > からく 7 2 79 7 4661222 N WOL 37906 2007 670 192. D w los

## सनोकामना पूरक प्रयोग

200

सर्वप्रयम उर्दे के सवा पाव आहे में खमीर उठाकर तथा उसकी रोटी बनाकर उसे दो तह बाले एक सफेद कमाल में रबेखें। फिर उसमें से बीचाई रोटी की खंगली अरबेरी के खराबर की १०१ गोलियों बनाकर प्रयेक गोली को निम्मतिखित मन्स में ग्यारह-ग्यारह बार अधिमयन्त्रिक करे. तहुपरांत गेव रोटी सहित सभी गोलियों को किमी नदी में मछलियों को खाने के लिए बान हैं। इस प्रकार ४० दिन मक प्रयोग करने से साधक की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं तथा राखी भी प्रारत होती है।

मन्त्र-"या इन्नाफोल बहबक या अल्लाहा ।"

उक्त सन्त्र के आरम्भ में एक बार पूरी 'विस्मित्साह्' सद्मा बादि और अन्त में ७-० बार 'दरूद' पढ़ना आवस्यक है।

जब रोजी मिलने लगे तब इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करते रहना चाहिए।

## रोजी मिलने का प्रयोग (३)

या अल्लाही अल्ला हुन्नमल्ला मुहन्मद नव धारक नमल्लम।"

बिधि अकवार या बुद्धणित वार में इस प्रयोग को आरम्भ करना चाहिये। सर्वप्रधम सवा पाव उर्द के आहे को हो रोहियां हाथ में जिल्लों।। उन्हें एक संकेद रूपाल में रक्खें, फिर उन रोहियों में झरवेर के बरावर की १०१ गोलियां बनाये स्था उनमें में प्रस्थेक गोली को उनस मन्त्र में बिधान करें। नदुरहान्त्र उन गोलियों तथा जेप वनी हुई रोही को क्याल में रखकर किमा नदी के किमारे पहुँच और गोलियों को नदी को धारा में पंक कर, जेप वची रोही को दुकई-दुकई करके पिंधयों को खिला दें।

उक्त प्रयोग को ४० दिनों तक निष्य नियमित रूप से करते रहने पर रोजी प्राप्त होती है।

मन्त्र के आरम्भ में पहले एक बार पूरा 'बिस्मित्साह' तथा शुरू एवं आखीर में ७-७ बार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिये।

## रोजी मिलने का प्रयोग (४)

सर्व प्रथम महीने के पहने बुहस्पतिकार को सूर्योदय से पहले खंकेट कागज पर नई स्थाही से नीचे प्रदर्शित गुन्त को लिखें -

<b>&amp;</b>	to to	ক
	BR	84
200	23	20 4

	bdul2	
3	bdul2a/niali/odisha	4
	disha	مر٧
22	17	5

डगके बाद किसी नदी या नात्राब में नाशि के बरावर पात्री में गानम दिशा की ओर मुँह करके खंडे हो जाय तथा एक बार पूरा गिथमत्त्राही पढकर नीच निश्व मन्त्र की ४४४४ या बददद बार पढें—

सन्त- ''अजियो या जिल्लाईल बहरूक या वासिनो ।' उक्त सन्त्र के आदि तथा अन्त में ७१-७१ बार 'दक्द' पढ़नी

पाँहण। देख्द का मन्त्र इस प्रकार है -देख्द -- 'अल्ला हुक्मासल्ले अल्ला मुहब्मदिन व अल्भाले

दस्य -- ''अल्ला दुश्मासस्ते अस्ता मुहस्मिदिन व अल्थाले महस्मिदिन व वार्षिक वसल्लम् ।'

उपन प्रकार में नित्य ७२ दिनों तक मन्त्र जप करते रहते में मन्त्र भिन्न हो जाना है।

यन्त्र को प्रनिदित एक छाते में पिरोकर अपने घर के दरवा ने पर । विता चाहिए और दूसरे दिन आहे में गोली बोधकर, उस गोली को नाने में संपट कर पत्त्र को नदी में बहा देना चाहिए। ३० दिन पीछे । गन्य निव्यकर ७० मन्त्र जप लेने चाहिए। इस प्रधाय को आरम्भ करने । ५० दिन बाद ही रोजी प्राप्त होने नगती है। ७० दिन के बाद फर्कारों । थाना खिला दें।

## रोजा मिलने का प्रयोग (५)

सीचे प्रदेशित 'या बुद्, ह यन्त्र' को किसी शुप्त महीने के पहने बृह-

लिसते समय 'या बुद हैं यह मन्त्र पढ़ते आया। रान्त को १८ बार अंगुली हारा पृथ्वी पर लिखे। एक-एक यन्त्र निखकर उस पर एक-एक बतासा तथा फूल चडाकर बन्त को बिटाले जाय। यन्त्र मिठाई तथा सुगन्धित इत्र रखकर, लोबान का धनी द। फिर नोचे प्रदर्शन पहने चयेली के तेल का दीपक जलाकर, उसके सामने सवा पान

उस पर बची हुई मिठाई फूल. इत्र आदि सबको चढ़ा दें। फिर दोष्ड हों। किटारी/टोर्जिशी जिलेशी होते में पूजन कर उस पर होट्ट जमारे स्मे के ज्यार गन्त को स्थल र लोजान की धना रें। बीमन यन्त्र को सफेद कागज के ऊपर काली स्याही में लिखे तथा

क्षे कर्न के अंगे प्राप्त होती है।

ाः। '। । तम इस यन्त्र का नित्य एक जार कागज पर लिख

ा गाम जान जाना है नया उदर-पनि होती है।

ा शहसार बार 'या बुट्हा इस यन्त्र को पढ़ लिया कर तो

क गता - । बार 'दक्ष पहेंकर, यन्त्र का सान अयना चांदी क " ॥ । १ । १ । था म बांध तथा प्रतिदित तादीज को लोदान की

भागा ।।।। । जान बान हाटा मन्त्र था बुद्ह पढ़े फिर ४० जार

बार वडा मन्त्र पर । बढा मन्त्र इस प्रकार है फिर एक बार पूरी 'विभिन्ताह' पटकर २१ बार 'दहर' तथा ४०

यन्त्र का स्वरूप यह होगा-

(A) ''या जिल्लाहेल या दरदाईल या रफ्ताईल तन्काफील बहुबक

1:5 1 460 50 1. W. : [ 07 7 :57 250 アンラ 7:7 30 : :< :0

सांग्ड्रना-नाश्क ७८६ का यन्त्र प्रयोग

न म नवम अपने हिन्स में विस्मिन्ताह लिख, इस पन्त का पूजन पर्याचन या बुद्बूह, यन्त्र को भौति हो करे। नीन प्रशासन यन्त्र को सफेर कांगज पर काली स्वाही से निक्

व व	इ.स.	कुर्	338
कुरु य	3 2	3 %	अर्ट्स
क्रिय	23	अ स	व्याप्त व
कर ह	कुर्द	१०० स	कुरुत

हम प्रयोग. के रोजी प्राप्त होने लगती है तथा दरिव्रता दूर हो

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार बनेगा-

200	633	ROE	233
433	200	233	202
835	200	933	204
305	338	203	63.8

1.4	Iqw	F. C	197
061	P. L	161	8.8
1264	r	761	7.0
h . d	199	4.4	191

यन्त्र लेखनोपरान्त पहले एक बार पूरी 'विस्मित्लाह' पहें, फिर 37

त्रस्थचात् यन्त को सोने या चाँदी के ताबीज में मद्भवाकर अपनी दाई भुजा में धारण कर लें। साथ ही प्रति दिन प्रातःकाल मन्त्र को लोबान की धूनी अन्यय देते रहें। "या अल्लाहा या रहमाना या रहीमी या हैयी या केंयुमी।" इस मन्त्र के बादि तथा अन्त में ग्वारह-ग्वारह बार 'दरूद' पहें

## मुसीवत टालने का मंत्र

issuu, com/abdul अस्मित स्वीतं/त्वांक्रीतं अंति वासी विस ।। गना - "शेख फरीद की कामरी और अधियारी निसि।

ा या किसी के द्वारा जहर पेने का भय हो तो इस मन्त्र की तीन बार अर नामी बजान मं मुस्यात दल जाना है। बिधि पदि रास्ते में आग लग पाय या पानी बरसने लगे या जोले

### दकान की विको खोलने का यन्त्र

20

नुष आती है तथा माल खुद विकत लगता है। ो बाद कर दी हो तो निम्मिलिखन यान का साधन करन में विकी यदि किसी ने जादू-टोना अथवा तात्रिक प्रयोग करके दकान की

ा निका फिर यादी पर फूल रखनार लोबान की धुनी हैं, तदुपरांत एक पर्श विष्यल्लाहें पढ़कर ११ बार 'दरूद' पड़ें, फिर निम्नलिखित बागन पर बैठकर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को कागन के ऊपर स्थाही से ७ न को पेर पेर पेर पर विधि - णुक्त पक्ष के पहने बहर-पतिवार को कुर्म बक्क की गीति से

। जारीबादी बहुक्क या फ्लाही या वासिता।" मन्त - 'विरिज्कुलफत ह दुकान फलाने की विमुतन फलाने

ान धन आखिर में लिसे हुये एक मन्त्र का फलीता बनाकर उसे मीठे तेल ा । म, बूकान में ७ दिन तक जलाय तो दूकान की बिकी खुल उक्त सन्त्र को १०१ बार पढ़ने के बाद फिर ११ बार 'दह्रद' पढ़ें

। । १ मा प्रसार है -बिगेव -- यन्त के नीचे उक्त मन्त्र को लिखना भी आवश्यक है। यन्त

किता ने होती। कित्री क्षित्री किता के त्रमय नारों ा अब का धाया भूत-प्रेत को बाँचि लाया, तीसरा मर्वाक्कल ात म एक लाख की संख्या में जप कर सिंद कर लेता चाहिए। ना स गाह दे, फिर ध्रा-दीप देकर १०८ बार उनते मन्त्र को जर्गता व रा बहाव । शब्द साँचा पिंड कांचा क्रिंग मंत्र हरवरावाचा ।" ाक्सिल चहुँ दिशि धार्व, छल-छिद्र कोऊ रहन न पार्व, राग दाप ावन को धाया डाकिनी शाकिनी को पकड़ लाया। चार चार ना को धाया अऊत-पितर की बाँचि लाया, अप्रत-कार्य सिद्ध होता है। पहले इस मन्त्र को प्रहण, दिवाली या होली याया मर्वकरल

## काय-साधन मन्त्र (२)

272

ンアト

>7.

214

K

779

717

ンマア

बन्तर काठा की धुमनी बलाय मों स्याव, हाजिर करी, हाड़ हाड़ ा मां, हाट बाजार सों रूयाव, खाट सों, पाया सों. नी नाड़ी । पारनी पीटनी तोइनी पछाड़ती हाथ हथकड़ी पाँच बड़ी गला ाम बाप निष्व-मिश्व रोम-रोम सो रुयाव, रे ताहया सिलार जिन्द ा। मां पवत मां काट मां किला मों ल्याव, मुहल्ला मली सां ल्याव, सम नहीं कोई बीर, हमारे •पाव, विन लिये यत आंब, आंघ् नमी आदेस गुरू को।" वा चौनाहा सो स्याव, रवेत खाना सो स्याव, बारह आभूवन माई मों स्पान, ब्रक्षा के वेद मों स्थान, काजी की कुरान मों ाम का थावा जाय, सफेर धोड़ा सफेर पलान, जाप बड़ा तीक उत्तरा कव्या चढ़ाय सुख बुलाय सीम खिलाय कैमे केसे ाना मिंगार मों ल्यान, काजल कत्ररोटा मों ल्यान, मड़ी की ाप, अठारह प्राक्त मी स्याव, जाव जाव जहाँ होय तहाँ मो । ब भागत डाला ध्याया चर्न चालि चालि रे मुहम्मदा पीर, अध्यदा उवान, नी मी इनक आर्थ यलें, कुनक पीछे यलें, काँचा बा युहर्मदा पीर, चला चला सवामर का ताला खाय, अध्मी मन्त्र--- '' आम् नमो चिस्मिल्लाहि रहिमान रहीम राजनी मों चोर को ल्याब, सात समुद्र

325	292	425	BEZ
229	<b>723</b>	290	てるの
382	727	523	OEZ
430	722	777	332

## कार्य-साधन मन्त्र (१)

ARY API

>19

クで

22

777

770

ヘアア

पूरव की बाया, देव-दाववां का बाधि लाया, दूसरा मदक्किल मनक्किल तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया, एक मर्वाक्कल सुलेमान पैराम्बर बेटा, सुलेमान पैराम्बर के चारों दिक चार मन्त्र-- "अम् नमा सात समुद्र के बीच शिला जिस ।

माला तथा नेतेस चढ़ाकर, सथा सेर मोहत भोग का भोग लगाकर, इस मन्य को १०८ सार जपा जाय तो सिख हो जाता है। विधि - रात के समय गोवर का बौका सगाकर धूप-दीप, चन्दत

आदि को भी दूर किया जा सकता है। उड़र की मस्तक पर रजेंबें तो कार्य सिद्ध होता है। इस मन्त्र से भूत-प्रेत जब किसी काम की सिद्ध करना हो उस समय इस मन्त्र को पढ़कर

### पार का क्रलमा

चित्र मेरे पास ।" मन्त्र--- 'या जरव्वाजिक में तेरा इतियास विस्लामकादिल

के भोतर पीर प्रत्यक्ष आकर प्रश्न का उत्तर देता है। की धुर टेने हुए इस मन्य को उन्हों साला पर २००० बार पढ़न से २१ दिन विधि - कुएँ के ठाणे पर राजि के समय एकान्त-स्थान में लोबान

## भूत, प्रेतादि दोप-निवारक प्रयोग

issuu. ाना/निर्मितं अति श्रिक्तं के विषय में हिन्दुओं की सान्यता तो है पर गण्डे, ताबीज तथा यन्त्र-मन्त्रादि के प्रयोग किये जाते हैं। ारा जाता है तथा इनके हारा किसी स्त्री-पुरुष को परेशान किसे आने

 मं मं पुरोपन्त्र ईण्वरोबाचा' वाक्य भी आता है। पर-तु ये सभी मन्त्र-भागों के कुछ सन्त्रा में 'सहस्परावीर' का नाम है, वहीं कुछ का प्रारक्ष प्रभावणायी है तथा हिन्दू एवं सुसलमान दोनों ही द्वारा मान्यता भाष'या आंध नमी आदेश गुरू की इस दाक्य के साथ हुआ है। कुछ के ात है, अतः उन्हें इस प्रकरण से स्थान दिया गया है। र इतिपय प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है। इतमें में सभी प्रयोग इम प्रकरण में भूत-प्रेत. जिन, परी आदि के प्रकोप ने मुक्ति दिलाने जा दिन्द नया असलमान दोनी समुदामी में प्चलिन है। इन

भया प्रयोग में लिया जाय। मन्त्र प्रयोग एवं साधन के विषय में जहाँ जेसा व्यवस्य पुजनारिक द्वारा सिद्धं कर सिया जाय तद्वरास आवण्यकता के नत्व है, तदनुरूप हो कार्य करना चाहिए। अवसर पर १००० की सहया में काली स्थाती हार। सपेद कागज पर यन्त्रों का प्रयोग करने ने पूर्व यह आवण्यक है कि उन्हें किसी यहन

# बच्चों के लिए आरामदायक गंडा देने का मन्त्र

बाट का बंध, अमीन और आसमान का बंध, पर और बाहर का ा बंधन बंध ना बांध मोला मुन जा अली का बंध, राह और ा। सराय का यंथ, भंज और भिजाय का यंध, नावत पर हाथन ं बच, नजर और गुजर का बंध, दीट और मूट का बंध, कींग्रे ां मदोड़ का बंध, ताप और तिजारी का बंध, जुड़ी और बुखार मन्त्र- "बंध ता बंध मौला सूत्र जा अली का बंध. कीइ

बंध, पवन और पानी का बंध, क्या और पनिहारी का बंध, लौह और कलम का बंध, बंध तो बंध मीला मुत्त जा अली का बंध।"

बिधि — रांगी की एडी से बीटी तक दोरे में नापकर इस मन्य द्वारा उसमें ७ गाँठ लगायें नथा सबा पान सिठ ई मगाकर मुत्तें जा अली के साम से बालकों को बांट दें। फिर गाँडे को लोबान को धूनी देकर रोगी। बालक के गाँभ में बांध दें।

प्रत्येक गण्डे को डमी विधि में बोधना चाहिए। भूनादि दाप-सिचारणा यन्त्र

नीचे प्रदेशित यात्र को काली स्थाही से समेह कावज पर लिखकर नया लोडान को ध्रव देकर बानक के गर्न से बांध तमें से भून-प्रेत आदि के दाष दूर हो जाते हैं।

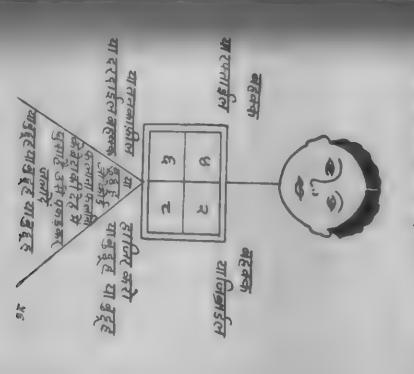
या दरदाईल	W	क स्मार्ल
Ч	90	N
या रितनको फाइल	6	या जिन्नाईल

ردانه	7	Liles
>	-	7
d'as in	7	با بر

## भूतादि दोष-निवारक फ्रलीना

नीचे प्रदक्षित यन्त्र का फुलीता बनाकर भूतादि बस्त रोगी की बाक में घनी देने से भूक प्रेत आदि भाग जाते हैं।

issuu कार्रा के सामा-पता का नाम लिखता नाहए।

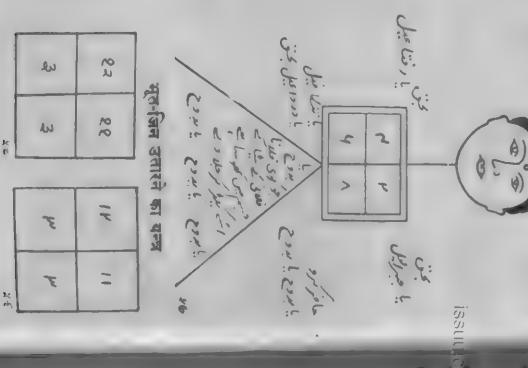


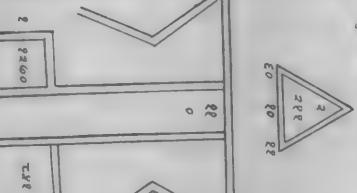
पिल्लेन पुण्ठपर घर्ताणत यन्त्र को सफेद कागज के ऊपर काकी स्थाही स्थान हर, फ़लोना बनाय तथा उसमें गर्ड भरकर जलाय एवं रोगी को सक्ष्मी दें तो भूत-जिन आदि उत्तर जाते हैं।

### प्रत निवारण यन्त

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के उत्तर केसर के द्वारा लिखकर । ISSULLACE में किर वसे दीपक में डालकर रोगी के सामने जलाय तो प्रेत

भ्रेन निवारण-यन्त्र का स्वक्ष्य हिन्दी तथा उर्दू घाषा में आगे के





(प्रेत निवारण-यन्त्र, हिन्दी)

60

करके संकेश कागज के ऊपर केसर में लिखना चाहिए। अगले पृष्ठ पर प्रदक्षित यन्त्र अब्दुन कादर जीलानी को सनाम

न कोली का तेल भाकर उसमें वह बत्ती दालकर पोता मिट्टी द्वारा कर किर उसे एक नये मफेंद करड़े में लगेट कर बत्ती बना लें तथा दीपक

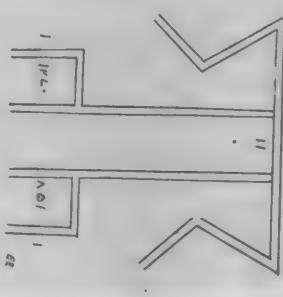
लेखनोपरांत यन्त्र पर पान-मूल बढायें तथा धूप-दोप देकर पूजा

(भूतादि दोष-निवारण यन्त्र, हिन्दी)

भा गा पवित स्थान पर रक्ख।

## भूतादि दोष-निवारण यंत्र

(प्रेत निवारण-यन्त्र, उर्दू)



20

20

6

A)

नावसन यावस्त यावसत यावसत यावसन या वस्त यानसत

m

برية

NO.

5

 $\alpha$ 

Ac.

00

48

d

भू वा मीबाइल या जिन्नाईल भू वा मीबाइल याउमाधील याउनाईल में काई पत्नाने को देश को दुः।व देशहरें, उसे उसंपत्नीता से जन्मा शितरु

issumantablings/ या इसत A9 A9 याच्यत 83 यल्ब्स्त यश्चिसत यध्यसत 10

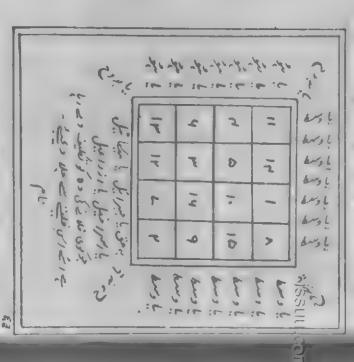
या बसत यावसत

Park Harris

भवना चाहिए। यन्त्र में जह 'फलान' मन्द आया है, वहां भी रोगी का गर्भ सिखना चाहिए। यन्त्र में उपर अपवा नीचे भूत-प्रेनादि में यन्त रोगी का नाम भी

युक्तिम तन्त्र-भास्त | ६४

दीपक के सामने फून तथा मिठाई भी रक्खें। जब दीपक अस ज तब भूत ग्रन्त रोगी को अपनी निगाह दीपक की ली पर जमाने के लि कहें। इस प्रयोग में भूतादि हुए भाग जाने हैं।



(भूतादि दोष-निवारण यन्त्र, उर्द्)

परियों का खलल दूर करने का मंत्र

सन्त- "जोग् गढकूब कूबमह विमलमह बड़ी मड़ी में बार दे कीख-कीख अहंकार महंकार ग्रुडम्मदा वीर ताइया सिलार बजा ख्वाज ग्रुअन्युद्दीन तुम्हारी खुशबोई में बड़ी कमाख युलेमान पर लंक परी को हुकम कीजें कीन कीन परी स्थाह परी सबल परी ह

> पत्ती अर्था कुम की लाऊली बीबी फातमा कीली भीली आपना पाना फत आय लेना सवा सेर शर्वत का प्याला आप ले आप ढाजिस होना मीर मुठीमुदीन मस्बद्भ जडानी या शेख सरफ अहिया पठाब आप हाजिर न हो तो रोज क्यामत के दामनगीर हुँगा।

षिषि — प्रयोग को जगह को अच्छी तरह में झाहकर, वहाँ आटे का ाो/ोिटोप स्थिति मिल्लिट्सिझी भूमन का बोड़ा लेकर तथा गर्बत का कच्चा प्याला भरकर जिस रोगा पर परिकों का खलल हो. उमें चौराहे पर खड़ा करके, इस बस्तुओं का उतारा करके मन्त्र से १४ बार झाड़ा दें, किर सब बस्तुओं को कुए की मेंड़ पर रख आये तो परियों का खलल दर हो जाता है।

इस प्रयोग को करने के लिये आते-बाते समय बोलना नहीं चाहिए।

## भूत बगेरह का गण्डा

मन्त्र— "आम् नमा आदश गुरू को लड़गही मों मुहण्मद पठाख चढ़या रवेत पोड़ा रवेत पलाया भूत बांधि प्रत बांधि काचिया मनाक बाँचि चौंसठ जीभिनी बाँधि अड़मठ स्थाना बांधि, बांधि, बांधि रे खोली तुर्शकनी का पूत बेंगि बांधि जोतू न बांधे तो अपनी माता की सैया पर पांव धरे, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति पुरो मन्त्र हैश्वरोवाचा।"

चिटि -पौच पैन की । अब सवा रुपये की, मिटाई तथा दीवक की सामत रक्षकर लोबान की छूनी दे तथा रोगी की चीटों में लेकर एड़ी तक एक सम्तालका डोर को नापकर, उबत मन्त्र को पढते हुए उसमें २१ गाँठ लगाय। फिर उमे रोगी के शक्षे में बांध दें। इस गण्डे को धारण करने से भूत-प्रतादि का दोष दूंग हो जाता है।

## मुहस्मदापीर का मंत्र

मन्त्र -- "ओय नमा हाकान्त जुगरात फाटंन काया जिस कारण जुगरात में तोको प्याया, इंकारत जुगरात आया वारंत आया, सिर के छल बखरत आया, और की खोकी उठाबन्त आया, आपकी खीकी बैठाबंत आया, और का किवाड़ तोड़ता

पित कांचा फुरा मंत्र इश्वरावाचा ।" भार, कजा बड़ाय, मुडिया हलाय, शांश सिलाय, शब्द साँचा जाय तो मी राजा हलाल जाय, उल्टा मार, गजर्ना के मुहस्मदापीर चले तर संग मचर सी बीर, जो चिमरि बाधि, गिरारे की बांधि, किया की बांधि, कराये की बांधि, अपनी की को बॉधि, सफेट की बॉधि, लाली की बॉधि, बॉधि २ रे गढ़ बाँधि, पराई की बाँधि, लीली को बाँधि, पीली को बाँधि, स्थाह को बाधि, बिह का बाधि, द्वार का बाधि, हाट का बाधि, गर्डिन्हो। परियों को बांधि, डाकिनी शाकिनी को बांधि, चेटक की बांधि, छल बांधि, शीसठ जारियनी की बांधि, शावन बीर की बांधि, आकाश की आया, आपका किनाइ मेहना आया, बांधि बाँधि किसको बाँधि, भूत की बाँधि प्रत को बांधि, दव-दानव को बांधि, उड़न्न गड़त योगिनी को बांधि, खार-चिरसागार का बांधि, तिरसट बलुवा का पछाड़ मार, धाइ

होता है जीर प्रार्थना करने पर भूत-प्रत, आकिनी-शाकिनी आदि को भगा जपे तथा मास-मदिश का भीग लगाय तो मुहब्मदापेश्ट आकर उपस्थित विधि किसी प्रहण की रान में इस मन्द्र को १००८ की संस्था में

## आफ्रत दूर करने (दिखन्धन) का सन्त्र

बली की चौकी बेठी ब्रहरूबद रखालिएलाइ की दुहाई।"? निर्दे बनिर्दे अली ला इलाइ कोट इंग्लिल्लाइ की लाई इजरत रखे इचाईल, दस्त थपटसन दस्त रास्त हुसैन पेशवा सुहम्मद रसे जिनाईल, बाँधे दस्त रसे मीकाईल, पीठ रसे इसाफील, पेट बाई दुमरी निरं पसार निरं बनिद मलापक अमनार टाय मन्त्र - ''याडि सार मार जिल देव परी जबर कुफार एक 44

इस मन्त्र का उच्चारण करने से संकट दूर हो जाता है। बैठने अथवा सीने से देह-रक्षा होता है। मसान आदि का प्रकोप होने पर बुटकी बजाने से दिशा-वन्धन होता है अर्थात् सब ओर की आफत दूर होती । इस मन्त्र की पढ़कर अपने बारों और लकीर खोचकर उसके छेरे में बिधि—इस सन्त को ७ जार पढ़ कर बारों और हाय फिराकत

## मोहन एवं वशीकरण प्रयोग

## माहन तथा वर्शाकरण

क्वेता/abdul23/piali/odisha मोहन, जनवण तथा वर्णाकरण—इन सभी का चर्टण्य किसी की प्रीत करना है। अन्य व्यक्ति को अपनी ओर आर्काधन कर, उसके द्वारा इच्छित अभिलामा

को अमल में लाने है। पाये जाने है। हिन्दू नाजिनों के अंतिजित प्रतिसार नाजिक भी दन प्रथोगों आकर्षण नथा वणीकरण के प्रयोग प्रायः सभी धर्म-सम्प्रतायों में

है और कुछ एम है, जिनका प्रयोग जिन्दू तथा मुसलसान दोनो मनो के प्रयोगों का उल्लेख किया जा रहा है। इनमें से श्रेष्ठ विश्व सुधिलस मते के तन्त्रका द्वारा समान रूप में किया जाता है। प्रस्तृत प्रकरण में मोहन तथा बज़ीकरण सम्बन्धी कृतिया विजिट

पूर्ण प्रयोग स्वयं के लिये अहितकर सिद्ध होगा। तथा सच्चरित महिलाओ अथवा पुरुषा पर इनका वासनाजस्य हुभोवना-णाम हानिकारक भी भिद्ध हो सकता है। पतिवता रित्रयों, क्वारी-कत्माओं बद्देश्य में इन साधनों का प्रयोग होंगज नहीं करना चाहिये, अन्यथा परि-इस सम्बन्ध में सदंव सतक रहने की आवश्यकता है। मान वासना-पूर्ति क मोहन तथा वजीकरण सम्बन्धी प्रयोगी का दुरुपयोग न किया जाय,

साधन करने में सफलता-प्राप्ति सम्भव होती है। प्रत्येक प्रयोग के साथ जेसा निर्देश दिया गया है, उसी के अनुसार

## स्त्री-वशीकरण कारक यन्त्र-तन्त्र

पकड़कर पिजड़े में बन्द कर दें और उसे सामाना दाना-पानी देते रहे। बठकर निम्निसिबत प्रयोग करें-किर जब शनिवार आये, तब उस दिन किसी एकांत सथा शांत कमर म चिधि बीद की पहली अपवा दूसरी नारीख को एक बीए की

सर्वप्रथम गीली मट्टी ने एक नया दीएक बताकर उसमें तिस का

तेन भरकर रक्षे, फिर एक सफेर कागज के ऊपर काली स्वाही में ने प्रदक्षित यन्त्र लिखें -

भारत अस्त	तार रात उठा लाव	ये सल्तलाव	कालाकाका
्या क्षेत्र	उठा लाव	अलवा कीर	वेन तारे समीको दोडा लार प्रतानी
प्रमान स्थाप आमे रात	क्रा धरे	कलवा बीर काली रसा प्रिलहिलेल	हर्म कीज
अति क्ष	११	प्रित्यहालेला	वाव अलानी
		-51	

Ex. 60.5	11 3 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	Sil do	136 11.1
300112	नेप वितर देश	10	موی و دور اجد کاه ہے
100 C	S. S	المال الت	200000
10 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0 0	() See 10 P.	in Jui	14/2

यन्त्र सिखकर कागज को सपेटकर बली जसा बना लें। फिर कागज की उस बलों के चारों और सफेद हुई में लगेटकर, उसे बली की धानि बैट दें। इस प्रकार लिपटों हुई हुई में जो बली तैयार हो, उसे पूर्वोंबत तेल में फरे हुये दोपक में टाल दें। फिर कीए को चिजह के ठीक बीचों बीच

> साकर, उक्त दोपक को पिजड़े के उपर प्रवक्तर जला दें। फिर स्वय पिजड़े के सामने बैठकर निस्तिलिसिन मन्त्र को उच्च स्वरमे ४१ बार पढ़ें

om/abdul23/nedhodisher at मन्त्र— 'काला कलरा तन स्क लाग वड माना 4 वह आवं भू अधि 4 जगा 125 Trip. सारा अधि रात । लाव गत !! नाय रात ।। 444 लाव । 413

भाजी के सिर पर पश घरे।।"
जब मन्त्र जप की संख्या अप पूरी हो जाय, तय दीपक की अनी की
बोहा-बोहा बढ़ाकर सार तेल का सफाया कर ते तथा दीपक की पिजड़े के

हाल लाव

ता समा बाहन।

प्रत्महाल

लाय

अपर स उठाकर सावधानी पूर्वक अलग रख द।

दूसरे दिन प्रातःकाल जाल में ज'कर उस दीपक को प्रथा के भीतर कही गाई दे तथा दूसरे दिन नया दीपक बनाकर पूर्वोचन सभी कियाओं को दुहरावें। इस प्रकार न्य दिन तक सभी कियाओं को दुहरावें रहे तथा अपना को प्रतिदिन जंगल में देवा आधा कर।

हश्कीम दिन का प्रयोग पूरा हो जात पर एक अध्य यन्त्र कागज पर निस्त्र तथा यन्त्र को पिजडे में बन्द कोए के दीय पीत्र में बीध दे तथा राजि को पर बजे बाद उस कीए को उसी स्थान पर ने जाकर छोड़ दे, जहां से कि उसे पकड़ा था। कीए को छोड़ ने के बाद मुह को पीछ धुमाये बिना अर्थात रास्त्र में कहां भी मुडकर पीछ की और न देखते हुए, सीध अपने घर चले आय तथा बिस्तर पर पहुँचकर मो जाये।

बन्न पर जिल्ला प्रतास की समाध्य के एक सत्ताह के भीतर ही अभिनिधित क्षेत्र के भी पर्यर-दिल क्यों न हो, आकर्षित होकर स्वयं ही साधक के पास चली आती है।

टिप्पणी --पूर्वोक्त मन्त्र में बही अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा यस्त्र में भी 'अमुक' शब्द के स्वान पर साध्य-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए।

### वर्णीकरण यन्त्र (१)

साध्यक्ती तथा उसकी माना के नामों की जिखना बाहिए। यन्त्र में जिस जगह 'माशुका' और उसकी मां का नाम' लिखा है, वहाँ नीचे प्रदांगत यन्त्र को सफेर कागज पर काली स्वाही से लिखकर उसका फलीता बनाव फिर उस लोखन को धुप देकर, एक कोरे दीपक में रोगन चमेली (चमेली का तेल) भरकर, उसमें कलोता को डालकर अलाग।

यन्त्रं का न्यक्ष इस प्रकार है --

320

3 3 3 5 5	100 AU	3226
BOKE	साय का अरि का साम	2028
93 KE	2 2 2 2	20 24 62

33

> 4

MO 19 MOIN MORI 2017 MOIN MOIL FOIG MOY.

> नावा पूर्ण होती है। उक्त प्रयोग संगानार ११ दिन तक नित्य करते रहने से मनोधि।

### वशीकरण यन्त (२)

issum का तम्हें हिंदैणां के जीते हो गिर्देश हैं। विस व्यक्ति को वस में करना जिबकर, फलीता बना से। फिर एक कोरे शकीरे में रोगन कुरब भरकर नीचे पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को सफ़ेंद्र कागब पर काली स्थाही से

Ac	545	دو	20
20	ניא	המ' 60	Ч
20 26	M	23	10
0.8	d	e	20

0	19	7	11
	7	7	>
9	£	11	_
4.	٩	7	7

हो. दीपक का मुंह उसके घर की ओर रखना थाहिए। १९ दिनों तक नियमित प्रयोग करने से मनोकामना पूर्ण होती है तथा अभिलमित-व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) साधक के पास स्वयं चला आता है।

## प्रेमिका-वशीकरणयन्त्र

प्रसिक्धा-वशीकरण यन्त्र नीने प्रदेशित यन्त्र को सफेद कार्राज पर काली स्वाही से लिख कर फलीता बना लें तथा उसे कोरे शकोरे में कुरेज का रोगन भरकर, प्रसिक्धा।। कि नीने प्रति अपनी प्रत्नी के बंबीभूत बना रहेगा। विधि से जलाकर प्रयोग करें। ११ दिन दक निर्यासत प्रयोग करते रहने से यह प्रयोग पोलयो।।संत्रयो। को भेदने पति को वशीभूत रखने के मनोभिनाषा पूर्ण होती है।

38224	RAKZK	4528 <b>2</b>
286	KEZKZ	*****
おおおとれ	3.42.4	x z z x o

я	ĸ		
e	ø		
•	•		

6 pAva	O > Kaa	D 7 7 2 7
DALLO THANG 6 PALO	orked orked orker	07727 07727 0770
ONTRO	2 AVO	0 7 7 0

62

### पति-वशोकरण यन्त्र

नीचे प्रदक्षित यन्त्र को प्रातःकास सफेद कागज पर कासी स्थाही से

मां करना चाहिए।

m	100	Ч
6	λc	Au
N	47	e¢.
फलावन कलां	अला उब	अस दुव फतां
Ч	~	01
4,1	Ac	e
oc.	4	N.

4		>
-	Đ	F
3	.0	2
	رند مار	ال من
>		£
1	D	2
2 2	-0	-

6

## दुरमन को जुती मारने का तन्त्र

िइसी निरुष्ट महीने के अधियी मंगसवार को, फीलाद की धुनी से, कण्यी इंट के उत्तर एक ओर नीचे प्रदेशित मन्त्र को लिखें नथा उसी ईंट के दूसरी ओर सिर्फ दुश्सन का नाम लिखें।

यन्त्र का स्वरूप इस प्रकार है-

지 열 점 점 점 퍼 <mark>더 의 의 의 의 대 대 대 대 대 대 대 대 대 대 대 대 대 대 대 </mark>		+	,						
지 점 점 점 점 점 제 제 점 요 더 해 점 점 점 퍼 먼 퍼 역 3 당 기 기 위 점 당 지 점 된 표 점 히 에 돼 너 점 31 전 3 점 퍼 퍼 더 점 돼 기 더 3	7	4	3	14	꾹	2	31	DA.	N
지 점 점 점 <mark>점 점 제 제 점</mark> 된 대    대    대    대    대    대    대	24	앀	म्	74	A	4	क्ष	N	শ্ৰ
지 정 점 점 점 <mark>에 에 에 정</mark> 전 대 해 점 값 <mark>최 전 최 역 3</mark> 내 기 기 위 정	भ	ㅋ	ı	21	4	걱	4	a	坦
기 히 지 지 <mark>디 에 에 에 히</mark> 히 디 해 저 저 지 미 제 역 3	34	2	ON	Ħ	7	4	अ	ધ	되
의 정 적 적 <b>에 에 이</b> 회	N	2	4	अ	ध	N	Z,	러	ㅋ
	검	9	¥	2	되	Д	격	स	31
न जित्र म न अप अप जा ज	4	य	먹	Zi.	d	UNI	OH	의	ह्य
	4	Unl	4	9	3	3	CH.	4	<sub>Ol</sub>
3 3 4 2 3 3 3 3 3 3 4	7	3,	4	OH.	বে	শ্ব	2	게	Ä

उक्त यन्त्र को लिखने के बाद एक बार 'बिस्मन्लाह' पढ़कर ४९

बार 'दक्रद' पढे. फिर '१००० बार निम्मितासत मन्त्र का पटमन्त्र—या कह हारो था इतराइला या दौराइली या अस
बाकिलो फलाने के सारे जिस्स और सुँह को सेरी जुती की चौट
से धायल करो बहुक्क या कह हारी।"

					า/อะ	۰		
(1	_	<u> </u>	(2)	CV.		(1	2	-
9	2	C	9	ے	الريا	(	3	C
[1	9	6	~	5		2	9	-(
1	J		-	~	2	~	[-	ب
J	(3	C	5	-				7
	}.	2	Ç	L		ر	3	~
	7	~	9	-	7	[3]	1	7
.(	-	-	5	U	Ч	-	U	9
7		<u>_</u>	1	_	-	<u>_</u>	2	U

मन्त्र के अप के अन्त में पुतः ४१ बार 'दह्रद' को पढ़ना चाहिए।

चक्क विधि से इस दिनों तक नित्य १००० की संख्या में मन्त्र का वर्ष करें, परन्तु हर १०० बार सन्त्र को पढ़ने के बाद चतु का नाम खिले एए एक कार्यक्र पर १ बार जुती अवश्य मारनी चाहिए। मन्त्र जप करते असमें यन्त्र लिखित ईंट को अपने सामने रखना चाहिये तथा तैस का बराग भी जनाये रखना चाहिए।

अधि रात के समय यह निश्वित क्षेत्र का भन्त का अप पूरा हो आय. तब आधी रात के समय यह निश्वित हैं है के सामने अनली घी का चिराग बामकर उस पर फूल, इस तथा मिठाई चढावें, फिर सन्त का अप चुक अब नया हर बार १०० सन्त अपने के बाद हैं है के जिस और सञ्च का सम अब हो, उस पर पांच-पांच ज़तियाँ मारते आयें।

इस प्रयोग से बातु के ऊपर जूते पड़ते हैं तथा उसे कब्ट आचा ॥ है।

मुक्तिम तन्त्र-बास्त्र । १७

### जिह्ना-स्तम्भन मन्त्र

सन्त--- "अलफ अलफ अलफ दुरसन के मुँह में इलफ मं। हाथ इन्जी रूपा तेरे कर दुरमन जेर कर।"

विधि शनिवार के दिन से आरम्भ करके ७ दिन तक एक थी स दीपक जनाकर एक कागज के दुकड़े पर इस मन्त्र को लिखे, फिर उस पर फूल माला, फल नथा बनासा चढ़ायें. नृदुष्तान उस कागज के १८०८ रेगे करके, प्रत्येक रक्षणे मान्य ने अभिमान्त्रित करके अभिन में डाखते जाय न ता सन्त्र सिद्ध हो जाता है।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर हाकिस के सामने १०८ बार मन्त्र पटका बात कर तथा दुश्मन की ओर फर्क मार तो दुश्मन का बोल न निकल सक किसी अर्जी पर १०८ बार मन्त्र पटकर फ्रीक मारे और उसे लोबान को धनी देकर हाकिस के हाथ में दे दे तो सनोर्थ पूरा हो।

### शत्रुनाशक प्रयोग

मीने प्रदर्शित यन्त्रं को संकेद कागज पर काली स्पाही में तिखकर फसीता बनाये। फिर एक कोर शकारे में रोगन तल्ख (सरसों का तेल बगैरह) घरकर, उसमें फलीते को शलकर जसाये। दोषक का मुँह शतु के बर की ओर रहता चाहिए।

08 34 33	F2 3 K 33	SE 7E 28	23 3493
32 32 34	023433	23 3 K 93	32 34 93
83 32 33	333432	98 38 36	Ac 35 33
\$2 \$2 \$2	\$6 34 58	28 28 22	32 3x 32

चक्त प्रयोग को २१ दिनों तक संशातार करते रहने से सनुका नाम हो जाता है।

4 4601	412	INDA IO	INDU CO
hlhohi	140419	140417 14047¢ 140	POSIT HOUSE
14 hoh!	ומשאור	11 hohi	140464
1140411	HOALO HOAL	14 54 646	140417

## कर्दा को छुड़ाने का प्रयोग

यदि कोई बादमी कद (जलखाने आदि) में पड़ा हो तो उमें धुकाने के लिए निम्नीन बित प्रयोग करना चाहिए-

केदी का नाम जैसे के बारिन्द का नाम	44	या दारिकच	या हाकिज़	
	3 3 6	100 200 A)	1.0 2.0 2.0	9 0 0
या हारियं यहापियं जहाप्रिज	0 m	ec m	(1) (1)	
या हा प्रिलं	YC YU YU	226	22 90	

रविवार के दिन एक जंगसी काता कबूतर पकड़ साथें, फिर प्रा शित यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, द्वप-दीप देने के बाब उस कबूतर के गले में बॉब दें तथा उड़ा दें।

यन्त में जिस जगह कैंदी का नाम तथा उसके पिता का नाम विचा है, वहां कैदो तथा उसके पिता नाम सिखना चहिए।

1. 5. 7. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1.	99	أعادة	6366
1969	7 d m	7 7 7	777
8:06:	F 7.	J. J. C.	777
ياعانه	200	4 24	3800

## चोरी का पता संगाने का प्रयोग

मन्त्र - "उद्ध्रह्लस्स्त्रज्ञास पक्ष्म कोटी घर पक्षाकृ मेल इरा स्थान श्रहा या कहुडारी या कहुडारी ("

धयोग विधि-किसी नदी अवता हुएँ के फिनारे बैठकर इस अन्य को १२१ बार पढ़कर वहीं सो जाय। एक सप्ताह तक नित्य इसी नियम

> हा पालन करे तो इसी अवधि में किसी दिन स्वत्न के माध्यम से बोरी हा सारा भेद मालूम हो जाएगा। जो व्यक्ति चुरा ते गया होगा, उसका तथा जहां पर बोरी का मांत रक्या होगा, उसका—सब बातों का हाल तथूम हो जाएगा।

## ווו בסהי/abdul23/nlall/odisha

नीचे प्रदर्शित यन्त्र की सफेद कागत्र पर काली स्याही से लिखें या नोजपत के उपर लाल चन्दन से लिखें और जिस आदमी को तिजारी पुजार आता हो उसकी दर्डि भूजा में विधि है तो तिजारी उदर आना बन्द हो जाता है।

60	60	90
608	69	69
68	62	6.8

7	7	7
7	7	7
7	17	7

## वशीकरण सम्बन्धी विशिष्ट प्रयोग

बंशीकरण सम्बन्धी कुछ प्रयोगों का उल्लेख पिछले प्रकर्णा में जान/abdulla/hall/adisha है –(१) बात्गी, (२) बादी, किया जा बुका है। इस प्रकरण में अमेलियात-ए-मुहब्बत जेटोन प्रथा के ताबीज बार किस्म (प्रकार) के होते हैं –(१) बात्गी, (२) बादी, श्राप्त किया जा सका है। रहा है, जिन्हें पहुँचे हुए किया की महरबानी दारा बड़ा किताई मे

वणीकरण सम्बन्धी ये प्रयोग यन्त्र-साधन की श्रेणी में आते है। इनमें सं किसी भी प्रयोग की करने से पूर्व निम्नलिखित हिरायती पर अमल करना आवश्यक है।

## भविष्य मालुम काने का तरीका

प्रथम ताला (भाग्य या भविष्य) मालूम करना आवश्यक है। इसकी विधि अमलियात-ए-मुहत्त्वतं (वर्णीकरण सम्बन्धो प्रयोग) के लिए सर्व-

'सनवासां, सात बचे तो अवासं आठ बचे तो अकरवं, नी बचे तो 'कीस' दस बचे तो जदीं, ग्यारह बचे तो 'दलो' और ० (गून्य) बचे तो 'हवत' है- यह समझना चाहिए। बबे तो 'जोजा', चार बचे तो 'सरतान', पीच बचे नो 'अशर', छह बचे तो ९२ से तरह (पापा। है। यदि १ बच्चे तो 'त्रमन', २ बच्चे तो 'शवर', तीन उसकी मां के नाम के अदह मिकाल कर बमा करें (जोड लें). फिर उसमें जिस किसी का चविष्य माझुप करना हो, उसके नाम के अदद तथा

सायुक्त की राजि 'आबी' है तो 'आतिष' अर्थात अग्नि और 'आब' अर्थात 'पृथ्वी' - ये दोनों एक दूसरे के मुखालिफ (विरोधी) होंगे, ऐसी न्थिति में बगर ताका आधिक 'दादी' है और ताला मासूक 'खादी' है तो इसमें बो साबीख (यन्त्र) सिखने चाहिए एक 'बारगी' और दूसरा 'आबी'। उसका बुके (राणि) मालूम कर लें। यदि आधिक की राणि 'आरणी' और 'सबर' है। इसी तरह सरसूब (प्रेमिका) के नाम के अवद निकास कर भाग दिया गयातो शेष २ वचे । इसका ताला (भविष्यत्) बुकं (राक्ति) है। इसके ७४६ (साल सी छियाबोस) अदह होते हैं। इनमें अब १२ का उदाहरण के लिए - नालिब प्रेमी का नाम 'मोहम्मद दीन रहमत'

> बा मिजाब हो. उसके मुआफिक (अनुसार) ताबीज लिखना चाहिए
>  बाबी के लिए बारणी और आबी के लिए आबी। । बाह्यकात (अनुकूलता) होने के कारण एक ताबीज ही काफी नहेगा।

### ताबीज की किस्में

() वाबी और (८) खाकी ।

ाता है या चूल्हें के नजदीक (मधीय। गाउँ रिया जाता है। हान की लाज पर या चीनी की नकती आदि पर जिसकार आग में डाला साबीज 'आरकी' उसे कहते हैं जिसे काशन या कोरी उनकरी या

कसी अन्य ऊर्व स्थान पर सटका दिया जाना है, ताकि वह ह्वा से स्नता रह । 'बादा' ताबीज उमे कहते हैं, जिमे लिखकर दरस्त ।वृष्य) अथवा

व डाला जाता है, क्योंक इसका सम्बन्ध पानी से है। 'आबी' ताबीज को लिखकर तालाब, नदी या कुए जलाशय जादि

क्तेरह में बफ़न किया (गाड़ा) जाता है। 'खाकी' ताबीज वह है, जिसे लिखकर बीखट, बौराहे या कजिस्तान

हरूफ़ का इल्प जरूरो है। अब ताबीज की किस्से मालूम हो गई, लिहाजा इसके बिए एवा

जद दिल अब्ज (वर्णमाला) इत्म जफर (कामयावी) मे हैं। इसके मान कलमे हे और हरकलमें के चार हरूफ़ हैं और हरएक का सवा धुवाहिक नवत । धनी। जमान स बहुत जस्द असर होता है। पड. उसका और उसके नाम का ताल्लुक जिस सितार में होगा, उसी के ब्यारः भ ताल्लुक है। इन हमफ़ों में जो हरूफ़ जिस शक्स के सरे असम

गर ही लेना चाहिए। बन्ध किसी भाषा के आधार पर नहीं। हरू के कितने अदद (सहया) होते है, इसे अभि प्रदेशित चित संख्या दर और मह में बताया गया है। नाम के हरूकों को अरबी अलरों के आधार किस सितारे के जारणी बादी, आबी तथा खाकी के हिसाब से किस

(F)

अतारद - संदल मुखं, करनफल, काफूर, नमकसंग, अबद।

क्मर--महद, काफूर, अबद।

सितारों के विषय में

	7		3 9	E	1	8
	f co.	0	3: (:	3	2000	1:4
	3 4	7: 0:	3	· C.	70	1
	7	c: 4 9	6	3.	9	9
	7	3 2	2 4	9	5.	مينه
-	> V	-	6 3	0 6	6	S.
	2	7	· (		4	<u>.</u>
4	35	ح	5	حزز	CI	35

A 2 2 4 OE W 09 2 000 1 00 5 12 000 5 14	A.600	WEGO 7800 21 60 730 320 48 43	000011	Zaki	400
A 600	77 700	7800	# 300	उस्मार	ME2118
0000	45 900	₩ €0	MEO	U.Zuc	cog a
7 60	# 40	TYO	N WO	47.10	KK
W 30	जर्म सर्भ कर्म सर्व करन प्र	390	HELLE SEE N. 2 F. W. OR LE ON TO COELE COOLS	अस्पाद जोहत प्रायक विसीत मुक्ती जोहल सका	मान्या राष्ट्राच्या सम्म हतीकल त्रीत उच्छतर हितात
2.2	476	2.5	X 2	Brate	भीव
82	Here Ero		372	भ <u>ड़</u> त	See See
स्वाकी	Here	the	HELLE	Hall	Para

विबने का इतकाक हो, उसके मुआफ्क नजबर (धूनी) जलायें। हर चितारे के नजबरात (धूनियाँ) जलग-अलग होते हैं। यदि धूनी सितारे के मुआफ्रिक न होगी तो फायदा भी नहीं होगा। तालिब (प्रेमी) जब ताबीज सिखे तो जिस सितार की साइत में

समझ लेना चाहिए-किस सितारे के नजबर (धूनी) बया क्या है, इसे नीचे लिखे अनुसार

(१) जोहाल अबर, लोबान, राल, करनफल।

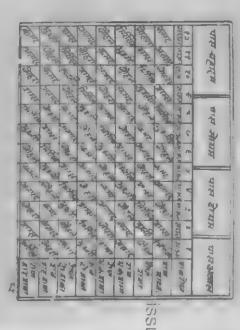
पन्दन), अवद कन्नर (ब्राह्म या बाना) । (इ. मुस्तरी मुश्क, जो दाना, कापूर, कपूर, सन्दल मुख (सास

काफूर, बसपद। (५) जोहरा -अवद, इब्ब, सुश्क, संदल सफेद (सफेद बन्दन) (३) मिराँक - लोवान, अवद राल्च - (केशर)।
 (४) शस्त - वारचीनी, अवद, मुक्क (कस्तुरी). आक्ररान (केशर)।

...कात/abclul@क्रिंगांalifoolishean) जलग-अलग है। कोई सईद से मुकरेर की गई है अर्थान् सितारों का मुहत प्रातः सात बज से बारम्ब न सितारे की साईत (मुहूत) देखना मुकरेर किया है यानी शुभ-अशुभ कुछ है। हर एक सिताया एक वक्त का हाकिम होता है। इसिनिये आमिलो हाता है । हर सितारे की साइत एक घण्टा होता है। इब्तिदा (प्रारम्भ) सुबह ७ बजे मुहतं देखकर ताबीज (यन्त्र) लिखना बाहिए, ताकि मेहनत बबंदि न हो (मुभ) है तो कोई नहुत (अग्रुभ) है। किसी की कुछ तासीर है, किसी की

, यह मासूम करने के बाद उसी के मुताबिक (अनुसार) नजबर (धूनी जनानी चाहिए। आधार पर किस वक्त (समय) का हाकिम (अधिपति) कीन सा सितारा है, नीचे सितारों की साइत (मुहूत) का नक्षा दिया जा रहा है, इसके

۲,	1	۲,	36	fel	16.	12.	7.:		0000
1716	19	£.	0/0	19:	8	4:	2000	272	30
1/0			20	1	\$	içi.	1/0	5.3	5
1	2,60	5	6	200	1	13.	1	(F-4	-1
C.	10	2:	Q::	6	30.0	F.	:0.	100	-
	1	29.64	S.	5	1	100	10	47	5
8.	Ç.	10	1	19:	5	67 T	5	ا ا	*****
14	100	5	5976	3	ć.	000	7:	10	
505	1	6.	1/4	1		1	20%	(j- 2	3
12	3:	1	5	3/10	5	6	70	£-1	S
	5776	2	Ĉ.	12	1.	16	C.	Ę.	-11-
8.		1:	1	9	2086	رولي	18.		
16	1	F			7.	3		31	G.
12.	i,	Sin	-	18.7	7	17.	1		2.



						ELLI.		
						s/ms		
	3.40	77	200	4	- A.	National	Pa	य
		346	4	W. Salar	Car D	The same	3 6	यास-अतारम
	W. W.	24 A	The Park	Salar Salar	Safety Softer Softer	7	- 40 F	व
	10 h	. P	2	136	C# 25 2 2 2		F (100)	CASID.
	**************************************	Sign Control	137	38	13	W Of Is	2 c	जार सोयम
	SAL SALES	433	State Jane	- 150 - 150	Special Street S	歌	W L	共
	(A)	3	41	4	370	3	4 K	प्रस रोयम
	13/8/	61	Sign.	3	67	310	2 S	
	Control of the Contro	Star Star	F. 1.3	*	Charles A	Wy Co	- LOVE	भारत का
2.6	3 3	SA	300	B. B. B.	יינאומי שונאומי	MIR ZUP	שלטונ	TO COL

## अमल (साथना) सम्बन्धी नियम

अपल सम्बन्धी निम्नांलिखत नियमों का पालन करना विति

१ - अगल (प्रयोग अर्थात् यन्त्र अथवा सन्त्र-साधन) के लिए कोई एकान स्थान निधियम कर नेना चहिये और जब तक प्रयोग सिद्ध न हो थांग, तब तक उसी स्थान पर साधना करते रहना चाहिए।

1/0

17

2

:40

2/

Mile

23

20

5.1

iring

シールド

100 CX

Jolory

19716

120

200

·of

120

181

10

nn

34

65

17.5

ef

· E

1911

120 1

. 5

:: :

: 00

0

54716

وشر

16/200

4

1)14

1.50

1911 10

mes

1,1/2

10 P

mic

12/2

12.50

(ef)

177/10

2 2

२ असन (प्रयोग) बिना नागा प्रतिहित मुक्टेर वक्त (निण्वित समय) पर उसी जगह करना चाहिए. अहा पहने दिन शुरू किया गया हो। यदि ध्याद (सापूर्ण अवधि) से एक दिन भी छूट गया तो सम्पूर्ण साधना विष्कत हो जायेगी।

असम । प्रयोग साप्तन) की अविधि में बहा वर्ष प्रत का प्रयोक्ष्येक पालन करना चहिये तथा स्त्री के साथ हमिबिस्तर नहीं होना चाहिए।

ए जिस असल में जानवर की खान की मनाहों की गई हो, उनका साधन करते समय न तो जमड़े के जूने पहनने चाहिय और न किसी एसी बस्तु में हाथ पगाना चाहिए, जो किसी जानवर के चमड़े हाथ निर्मत हो। प्र असल के बोवान किसी में लड़ाई-झगढ़ा करने में परहंख कावमी है। असल की अवधि में ऐसी कोई हरकत नहीं होनी चाहिए, जिसके कारण किसी के दिल पर ठेस पहुँच सके।

(बाता-विता) का प्रसन्न बन रहना आवायक है। ६--अमल के दौरान अपने परिवारी अनी, विशेषकर वालदेन

अवण्य करने रहना चाहिये। अमल के दौरान जो भी शुभ काम किये जा सकते हों, उन्हें

चाहिए। जम कुछ-न-कुछ दना आवश्यक है। आकर सवाल (याचना) कर तो उसे महत्त्वम (निराध) नहीं रूजिया। जिल्ली वसन के दौरान पदि कोई साइल (याचक) अपने दरवाजे पर

दशा अल्ला ताला मक्षद में कामयाबी जरूर हामिल होती है। हो पानी। परन्तु यदि उक्त हिदायतो का पूरा-प्रा पालन किया जाय तो में किया गया परिश्वम अपये ही जाता है तथा मनोभिमाधा की पाँत नही यदि उक्न नियमों का पालन नहीं किया गया नो अपल को अवधि

हो कार्ड गलती है क्योंकि इन्सान में भूल अक्सर हा जाया करती है। होती। अगर मक्सद में नाकामी हुई ता समझ नेना चात्रिय कि तुम्हारी उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रहता। इक्तजा कभी नाकाम नह श्रदा के साथ तथा नियमों का पालन करते हुये जो अमल किया जाता है. विश्वास के साथ उन बार-बार दहराना चाहित । पुर आत्म-विश्वाम एव मिलते पर प्रयोग बन्द नहीं कर रेना चाहिये अपिनु हिस्मत एवं अदा-कहने का ताल्ययं यह है कि किसी जुटि के कारण एक बार असफलता और उस दूर करते हुये तीसरी बार फिर प्रयोग आरम्भ करना चीहण्। असफलता पिलने का संवास ही नहीं उड़ता। अतः उस कमी को जानकर तो अपनी कमियों पर नजर दोड़ानों चाहिए, क्योंकि विना कोई कमी रहे सता मिलने की आशा रहेगी। यदि दूसरी बार भी असफलता हाय सरे निराकरण करते हुए दुवारा प्रयोग आरम्भ करना चाहिए ता उसम सफ उनमें कीत सी ब्रिटि रह गई। जब वह ब्रिट पकड़ में आ जाय, तब उसका देखना चाहिए कि जिन नियमों का पानन करने की हिदायत दी बावजूद भी सहलता नहीं मिल पानी ! तेमी क्रिवाल म प्रयोगकता कर्या-कभी ऐसा भी होता है कि किसी प्रयोग का साधन करने के

# अमल पढ़ने से पहले आधिल की खस्सियान

हो जो इन्सान अपनी खामियों और कमजोरियों पर नजर डानता है और तो उन्हें वर कर देना चाहिए क्यांकि किसी काम को गुरू करने से पहले होट्टपात करना आवश्यक है। यदि अपन भीतर कुछ कमियो दिखाई दे प्रयोग आरम्भ करने में पूर्व प्रयोगकर्ना की अपनी योग्यना पर

> की पाबन्दी कर । आमिल के लिये यह आवश्यक है। कि वह अमल शुरू करने से पहने उसूलो मकसद (सध्य) में कामधाबी (मफलता) भी हासिस (प्राप्त) होती है। अतः जाहें दूर कर देता है तो उसका दिल वेखीफ़ हो जाता है और उस अपने

मुस्लिम तन्त्र-मान्त्र १०१

पाना गा एक पान में भी के अपने हैं कि जार की परेशानी न उठानी पड़े, परन्तु प्राय देखने भी यह अपने हैं कि असल के शोकीन लोग आवण्यक नहीं होंगी । यदि सही तरीके से उमूलों का पालन किया जाय तो उनकी महतत बबोद चला शता है। इस प्रकार अःनी हो गुजनी का वे क्षांमयाजा उठाते है। अपने उद्युप में सफल नहीं हो पाते और उनका सम्पूर्ण पश्चिम ध्यर्ष बाधार पर कुछ नियम तथा सिद्धान्त निष्वत किय है. ताकि असल करने बसाकरना आरम्भ कर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे नियमां का पालन तो करते नहीं है, अपनी सुविधानुसार जैसा चाहते है, अमिलयात (प्रयोगों) के मिलमिले में उत्पादों ने अपने तजुबति के

बालों को कभी कामयाची नहीं मिल सकती। चसूनो पर पूरो तरह स अमन करना निहायत जकरो है। ऐसा न करने तरीके अपने अपक परिश्रम तथा अनुभवी के बाद निश्चित किये हैं उन अत अमिलयान के सिलमिने में आमलीन ने जो शरायत और

## अभिनीन के लिए श्राहत

हो उनके सिये निक्तिसिक्ति लगी का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है अमिलयान के उन्नारों ने सिखा है कि जो लोग अमल करना चाहते

माभिन मुमलमान जेमी तथा नमाज और रोजे का पावन्द हो। सजहत के हर नियमों तथा उमुनों की मानने वाला हो। शक्तो सुरत १ आध्यस इस्लाम की शराइत का पावन्द हो सर्पान इस्लाम

- हराम चाजों को करोब म आने दे।

अहतराम कर न्यान् दूर रहे। अनाकारी (व्यक्तिचार) तथा बदकारी (दुष्कर्म) वर्गराः

४ - हसाल तरीक मे रोजी कमाने का आदी हो

५- मूठ वोलन म बनई परहेत करे

मजहबं के नियमों का पासन करे।

७--चुगली बदयवानी खराव खसलतों और तमाम बुरी बातों

तांना करे।

= -अमल शुरू करने से पहले आमिल की चाहिए कि गुस्स करके
 पवित्र वस्त्रों को धारण कर और उन पर इव लगाये।

६ -अमल गुरू करने से पहले खुशबूदार धूनी, मस्सन - लोवान, अनद, अगरवत्ती या इसी किस्म की कोई और चीज जैसा कि पहले बताया जा चुका है, मुलगा कर जगह को पविद्य एवं सुगंधित दनायें।

१० - अक्मण अमिन्यान (नर्शिक-प्रयाशों) में नके हैवानत (पण से परहेज) की भने भी जरूरी होती है. अतः एमे प्रयोगों में, जिनमें क्यूर्विता किया में नवाब आवश्यक बताया गया हो. यह जरूरी है कि प्रयोगों की अवीध में गोशन, दूध, भी. अपडा, मठली लहसुन, प्याज और इसी किस्म की दूपरी जीते हर्गाज-हर्गाज इस्तमाल न की जीए। अगर इनके खिलाफ खला जायगा तो खुद को भवीद खलरा हो सकता है।

११ — गरीब एवं मोहताजों के माथ तेक सलूक करे तथा खैरातों-जका (दान-पुण्य) से हाथ न रोके।

१०--- खयाल रहे कि हर अमल बेरोज माह को पहिली जुमेरात को विसे नीचंदी जुमेरात कहते हैं, गुरू किया जाय।

१३---असल पढ़ने ।तांत्रिक-साधन करने) के लिए सक्षमे बेहतर वक्त नमाज-ए-इया (रात की नमाख) के बाद भाना गया है।

### श्चभ साइत (मुहूर्त)

सुश्तरी, जोहरा, जतारद और वध्स की साइतें अमिलयाते-मोहब्बत और ताबीजाते-मोहब्बत के सिए बहारीन (शुक्र) हैं। जुमा, जुमेरात, बुद्ध और पीर के दिन बेहतर हैं। अरबी महीने की तारीखों में जो शुम हों, उन्हीं में अमल शुरू करना चाहिए और ताबीज (यन्त्र) लिखना चाहिए। जा नारोख अगुम है उनका नक्का नीचे दिया जा रहा है। इन

तारीका में कोई अमल नहीं करना चाहिए।

1	· Jahr	2	0	1 10	J. W.
7	اما ر دا	Ĩ	13	1	47
D	د ل قيمه	D	./		Sing
3	ď.	ĩ		-	:(3
r		2		7	
₹	Ji ye	72	جادى الادل حندى الداو		8
?	Ç	77	18 6 1	11	
5	S.	4	O.C.	3	5

√aba		
Nabelli Strangella na sena	E -8	6.28 1995 H
all Codis	₹4-x6	10-80 20-80
3.9.	तमाद्र प्रमान सम्बद्ध	३.६
२०-४	जनारि प्रता जनारि उम्म अञ्चल ४-2 ११ व	86.33 R298

हरूफ नहजीय के हिसाब में अदद मिल्या) निकास कर जब ताला मास हो नो इत्म-ए-फ़न की किनाबों के मुनाबिक ताला आखी, आबी. बाकी ओर बादी के माह जनासी ।सीभाग्यशासी महीना) दर्यापत करें। शुरू में माह-ए-जनासी मुहर्ग उस जहराम का महीना है। इस्म-ए-परह मुहर्ग की 'तुरीब' मी कहने हैं और तमाम सास की केंफियत इमी से बनाते हैं। आसानी के लिये माह जनासी का दायरा (मन्या) आगे दिया

مانع آب ماه	ارج وی		ریع داری ا مرح حود ا مالع بادی ادر م
ای اور در چی ای دو در در چی	ان در رسه کی در موده کی در موده کی در موده کی در در سرک کی در موده کی در مود	مادی در در میکا میکارگرد میکارگرد	4 6 000
مال الكرم مع جدي مال المارم	المارية	Service Commercial Com	12 1. C.

जरद असर होगा और महबूब बेक गर होगा। बसल की मुनासियत समझें करें या ताबीज-ए-मोहब्बत :वणीकरण यन्त्र) बाइत वन्त और साउत तारीख (मुहुनं का समय और तारीख) को जिम मतलून के वायदाद में बुजें (रामि) मालूम कर और सितारा देखें। फिर लिखे और उसी के मुताबिक घूनी जलाएँ। इगा जल्लाह ऐसा करते म इस मुक्तसर कायरे के मुताबिक हरूफ तहजीब के हिसाब से नाम

	Second Second	The state of the s	10 00 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1	The Care
	47 CA 27 CA	A state of	AL SALES	The Court
63	The Same	PAC SAME SAME SAME SAME SAME SAME SAME SAME	12 12 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14 14	A SA CA

42

### नकश-ए-मोहब्बन

## (वशीकरस यन्त्र)

नक्श (१)

माणुक बंगीभूत होकर बाज्ञाकारी वन जायेगा। में भरकर, उन लोबान की धूनी देकर आणिक अपने बाजू पर बीध तो को कागज के पूज पर बालहरियान (सावधानी पूर्वक) लिखे और ताबी ज करता हो तो बस साइत सइद मणस बौहरा को भृत्रतरा इस नक्ष बाबम बहुत प्रभावणानी है। यदि माणुक नाराज हो गया हो या मोहब्बत न आगे दिया हुआ नक्श (यन्त्र संख्या ६२, ६३) वशीकरण के लिए

नक्या इस प्रकार है-

67	44	6 4	47
.7	L P*	> •	74
47	isher	ni <b>si</b> Woo	1/abdul23/nia#/odishe
D	^	10	11

issuu.gor

6	56	66	2
43	70	33	24
ų, N	63	68	20
62	60	30	Je

#### निया (२)

। अक्रदार हो जाएगा। आने प्रदेशित नवश (यन्त शंख्या ६४, ६५) को कागब पर शिवकर के गर्वत से छोएँ। फिर वह गर्वत साशुक्त को पिता दें तो वह मोहब्बछ

ा लिए हड़ मार्थ आसीत हा निया दे डा नर्ड डास्टेन्ट 3 2 PEGA भरतार है। यारधा 606

225

80 2m 1072

Walte Hell

276

0830

388

733

3266

03

ssuu aam/abdull23/niali/odisha アイソ アア 794 Thank John Co リリア・ COM'U FO S C Mi Pry 3 33

9

8.5 4.C

KAINER

बात के नीचे गांव देने से माशुक आधार के इबक में बेकरार ही जाता है। नाचे प्रदर्शित नक्श (यन्त्र संस्था ६६, १७) को कार्याच पर सिखकर

नस्य (३)

मुस्सिम तन्त्र-सास्त्र | ११६ इंदेह | शुक्सम वंब्य-शाव्य

भाइत मुश्तरी में निखना आरम्भ करें। कुम नक्श ६०० निखे आर्थे, र्शकत हर रोज सिकं ३० ननश लिखते चाहिए। इस तरह ३० दिन में आग प्रवर्शन मक्त । यस्त मध्या ६८, ११) को जुन विम की अध्यत

नक्श (४)

बोलियों में भरें तथा उन गोलियों को दरिया में बाल दिया करें दो माथूक महिल्बत में बेकरार हो जाएगा। ६०० नक्स शिखने होते। रोजामा मिखे हुवे नक्सों को गेह के बाटे की

76	4	~	0
₹	>	7	4
>		2	U
5	75	>	.(

Th	4	~	0
7	>	7	•
>	~	4	U
۲	7	>	.(

issuu.com/abclul23/nieni/othsharr^^ 77 44 マンファ FORT 40 74 NY NA 16 PA NATH AUVI X37 8779 · 6 4 d マロス. 24 44 K4 L0 100

नक्ष (५)

कार किसी को बपने सामने हाबिए करना हो तो हिरन की खास पर मुक्को जाफरान (कस्तूरी बीट केंबार में एक दायरा खीनें और उस पर नीचे प्रदिश्वत नक्का (सक्त्या १००, १००) बनाकर, उसके अधर एक छोटो सी मेख गढ़ हैं तथा या बुद्हुह, या बुद्हुह, को पढ़। इस प्रयोग से बद्धिस (साभुक) बेकरार हो, सामने आकर हाबिर हो जाता है। トフィ A. 99 320 £633 ~2 803 ~

बारकर) की गोली में भर दें तथा वह गोली मतसूब को खिलायें तो उसे एक कार्गज पर लिखकर गोली बना से फिर उसे कन्द सफेद (सफेद आने प्रदर्शित दोनां नक्शों (संख्या १०२, १०३ तथा १०४, १०४) को

नक्श (६)

(AC)

4110

777

4

m

4

IJ

0

Ø

M

H

17

IJ

2

4

d

2800 2823 22.62 2822 3856 385E 328C 398C 8285 33 AZ 286£ 3862 320 ROAL 3826 03.8E SATO 200

मतलूब मोहब्बत में बेकरार हो जाता है। बहुत मोहब्बत होशी। यदि खिला न सके दो नवश को काराज पर िल के बाद, उसे मरुष्य का नाम लेते हुये जला देना चाहिए। इसन ज ११८ | युस्लिम तन्त्र-बास्त > 24

3 3 on ato work while 80 90 والسفقية العجل سم الدجا تملام بن دلاما عدلي المرتب والمذال Shral Agel ノーアノ 808 MA PLU 6

issum.com/abdulta/hiali/odisha बाबूब मोहत्वत में बेकरार होकर सामने हाजिए हो जाता है।

Joh! (40)

नक्श (८) है हिन्दु क्या नाल एकत है रह स्टाई कीति एमंड प्रक नका (यन्त संख्या १०८, वे०१) का स्वकंप इस प्रकार होता - १००)

1

Ros

1

अलट्या अल सार्ग

वणल स्प्रिया अस अस्तान व

क्षणं बिन कलां स अल त्रवा

पतां विन कलां अले दुव

5(47 4

400 Per

HO SOUL A IND TOLD SAME

3444

(a) Det भीने प्रदक्षित नवन (संख्या १०६, १०७) को मदार (साक) की पत्ती

क बोकि करें (फीली) हो महें हो कि बें, फिर उसे बाग में बाब दें तो

मुस्तिम उत्त-नास्त्र | ११६

702	روان دور	30.00	*** * * * * * * * * * * * * * * * * * *	10 00 10 10 10	M / 212 45 1 M 21 7 M	D 111 2 21 2 110 111	F 116 31 VIII 200	2 2 1 2 12 12 11
200	कारों रिका करतां असी द्वा	NE Jes salm	28 ~ 68 A - 823	6 63 6 6 6 6 6 8	TOP THE REAL WAS STATED	3 500 Sen 15 20 163 25	10 10 10 2 2 2 6 5 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10	16 21 23 2 18 23 2

उपर प्रवंशित तिकिस्म (यन्त संख्या १०८, १०१) को जुमे की रात को बतकूब (माश्रुक) के पहिने हुए पुराने कपड़े पर निखें फिर उसका फसीता बनाकर, कोरे किराय में रोशन खुगबूदार भरकर जनायें। चिराय का क्ष्म खाना भतकूब (माश्रुक के बर) की तरफ रहना चाहिए। फसीता के रोशन होते ही मतलूब बेकरार हो काएगा।

#### वस्य (८)

अते प्रवित्त इलामत (चित्र संस्था १९०, १९९) को कागज पर सिख बीर इत-ओ-बहद कागज पर ससकर, पाक वर्ड में सपेटकर, खुशबुदार तेन कोरे चिराग में बासकर रोजन करें। चिराण का व्या खाना मतसूद की तरफ करें बीर खुर हाथिर रहें।

अगर पुतवातिर (लगातार) एक हक्ते तक सबे-रोज (रात-दिन) कसीता रोसन (असता) रहे तो मतसूब बेकरार होगा और हाजिर होगा।

दूसरी संरक्षीत यह है कि जाना नो सफ़ज पर सिलकर, नहद मल कर, जाग के तीचे दफ़न कर दें तथा आग एक हफ्ते तक हर बक्त रोजन (क्सती) रहे तो मतलूब बेकरार होता है।

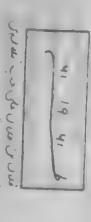
तीसरी तरकीव यह है कि कोरी ठीकरी पर इसे लिखकर जाग के नीचे रक्खें तो भी मतलूब वेकरार होगा। इसे साइत अफताब में माना

अतीहन कर्या केन प्रमां अतीहन कर्या केन प्रमां

मुस्तिम तन्त्र-शास्त्र , १२३

तो मतलूब बकरार होकर हाजिर होता है। गो सफन्द पर लिखकर चूल्हे के तीचे दपन कर और इस आग में जना।

इन्सा अन्ताह मतलूब बकरार हाकर हाजिए होगा । बार या सान बार लिख, फिर उस रोगन (तेल) और ध्वम ह दानकर चिराग के याय का घो या कोई बुसरा खुशब्दार तेल भरकर रोशन करें। रीमन कर या इस नक्म को कामज पुर सिखकर फमीता बनासी अस्ता। नीचे प्रदक्षित संदेश (सच्या १९२, १९३) को कीरे बिराग पर नीन



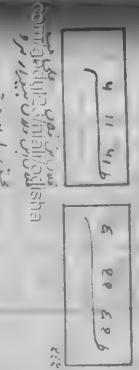
हरेडे क्यांत होता तह गाइत शतवार न माना こいいっついっていいい ति हैं कि हो

अंदिक्द शांत कु

त्र है। है। है ति किए हैं। विस्तित की मान के मान है। विस्तित की मान के मान है। 1 4.6 63

नक्श (११)

वर्षात् आधिल मजहर के इक्क में ही दीवाना पटेगा। देर में वह आपका फर्माबबार हो जाएका, किसी दूसर के पास नहीं जाएका बलाये। अगर महब्ब पास आ जाए तो डममे यात न करे, वस मुख हो में लिखे और साइत आफ़ताब में फलीता बनाकर रोगन खुशबुक्तर मे ११४ और १६६, १९७) को मुश्क-ओ-बाफ रान-ओ-मुलाब स साइत मुज्तरी इतबार की रात को साइत अदह आगे प्रदर्शिन निलन्म (मन्या १९%



400 مدن سال مل مي در مدال سي ملا BAA

ने वे हे इस हा वे वे के कि कि के के के के के के कि के कि कुला जिल करनां अत्वां हुए काला जिला पाला 22.33 333

नस्या (१२)

रोशन करें (जिलायें)। विदाय का दख बाना मतलूब की तरफ रहे। इस कागज पर सिसकर उसका फलीता बनायें, फिर उमे खुणबूदार रोगन में रात या पीच रात में नीचे प्रदर्शित नवश (यन्त्र संख्या ११८, ११६) की बमल से इंसा बरलाह मागुक हाजिर होगा और बताइत करेगा। वगर कोई शब्स किसी से मोहब्बत रखता हो तो एक खड़ं, तीन

	The	C.	. 6
	CF	je	A
	de	a	X
292	عكس	B	7
		<u> </u>	

मरिजर	
रुलर	
3	
324	
	J

_		
असलम	समा	मरिजर
3MR	ग्रामा	3 सम
3mix	3wx	3
मिलास विकास	4	300

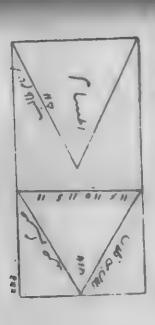
#### नक्य (१३)

उसका कलीता बनाकर रोजन करें तो माणुक कदमों में आ हाजिए होगा। पहने हुए कपड़े पर लिखें और कोरे चिरास में तिलों का तेल शलकर. आगे प्रदर्शित इलायत (यन्त्र संस्था १२०, १२१) को माश्रक के

10 55 250 OK	252 3-064 AT 513-2-67	E 06 60 M 170 1133	日本 日	mina 111 00 00 11 912 95:	com/abdul234maffsquarens	16 71 11 water 1116 . 1000	ملان بين من ميل حب فيلان اس فيلان يا شيت ميل م
	233111	60	-	3 1/2	1011	7	ملان يوندن

#### नक्य (१४)

नीवे प्रदक्षित नवन (संख्या १२२, १२३) को चिराण पर मिचकर तसमें रोजन बुणजुदार घरें। फिर कामच पर भी मिचकर फमीता बनावें बौर चिराण का कन जाना-ए-मतसूब को सरफ रखें। जाने में सामिब का नाम यबारवान सिंब।



4

P

9911

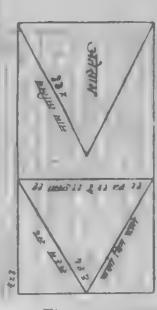
2 =

7

7

=

358



ं नकश (१५)

किसी देशका के पन पर लिखकर, आम के नीचे बक्त कर तो मुराद पूरी ्वारो नामों (अपना, अपनी मी का बागुका का और उसका मी का) के होती है। मोहत्वन के लिए प्रतिसन नक्श (सब्धा १०४ १०४) की 41



4	1
£ 99 9	
-	
3	
4	
B <sub>1</sub>	
46 97	1.
	1
~	1
no.	1
4	1
24	1
04	
THEBRIKE	
4	,

नक्य (१६)

मोहब्बत में वेकरार होकर सामने हाजिट हो जाल्या। मुग्न-ओ- आफरान मे लिखकर अपने पास रक्षे। होता अल्लाह मतलूब आंग प्रदेशिक तिनिस्म (सहया १०६, १०७) को कांगज के अपर



नक्या (१७)

भीर फलीना बनाकर विशास में जलायें तो मतमून बेकरार होगा। नीचे प्रतिकृत नक्षा (संख्या १२८, १२६) को कवडे पर लिखकर



सक्य (१८)

ताना ते -गुभ साइत में लिखकर आग में डालने से मतलूब बंकरार होकर हाजिब आगे प्रतिज्ञत तिजिस्म (सच्या १३०, १३१) की उन्नति पश्चना ने में

474

1011	105×105
107 (or (	1000
10PC	1077
1077	1901

621	
dur.	
	430

enes	WZZT
Zzzo	Saro
erro ofro	8820
EBKD	dexogato.

5 2 2
1
0
4

नम्स (१८)

आगे प्रदेशिन महत्र (संख्या १३२, १३३) को कागव पर लिखकर फणीता बनायें और जिरान में रीजन करें। चिरान का कल जाना मतलूब की तरफ रखना चाहिए। इसमें मतलूब बेकरार होकर मोहब्बत कबूक करता है।

	√abdu	
P49	TX.St.	272
272	/abdurtonrationsmarz^	272
272	instru	7.
474	727	727

HOSTINSS!

637

320

477

N.

77-

308	332	396	308
268	222	262	266
8	262	roz	240
228	262	302 205	932

वक्या (२०)

(33

मतसूब को मोहब्बत से बेकरार करने लिए सर्फ जाफराब में कोने की लोह (ताबीज) तैयार करें और उस पर अभी प्रवस्तित नक्क सक्या १३४ (१३५) कुन्या करें। फिर उस पर जपना शाम और मायुक का

नाम सिखकर आग में जलायें। फिर जब गतसूब हाजिर हो, तायो का बाजू में बाँध लें तो वह हमेशा खिदमत फी तैयार बना रहेगा।

	1.61.	>	7	V-1-97.	171	2
	111		>	A.b.1.4.h		>
		Ţ	9-6	7	7:	
858	=		7	7	1.4.4	3

	1.001	>	3	V-1-91.	771	2
	1119		>	A.b.1.4.h		>
	200	T	9-6	7	P 1	
858	=		V	7	P. 1. 4.4	£
					issuu.	

	יוח/מט		
カフムム	11/ac citil="cyrmall/citils"コミ	77 MA	47 44
b 4 4 4		4 5 mld	てをしの
bras Vras bras Norda	Strict Hally Cocks us	57 MA 17 MA 55 MA 77 MA	LATE LATO AMT. LLAO
6723	- 7 ml.	57 A	Truo

263

ADEE	036.	0082	2062
3365	0320	2366	2364
23 £ E	INEE	late	27(00
3965	00 52	3086	X3 E Z

20

نمة

d

902 200

126

3090600

7

9 4

Li

008 Bog

3.88

20002

232

200

नक्या , २१)

इससे मक्तसद हासिल होगा। उस नाल को आग में इस तरह गांव दें कि यह हमेशा। गर्भ। बना य भाय, जिसमें ६ मूराल हो और उस पर मतसूब और उसकी मां के नाम के साम नीचे प्रदर्शित नक्श (संख्या १३६, १३७) जिखें और जिखने के बार लगर किसी को इंग्क में मुख्तिला करना हो जो घोड़ का ऐसा ना

नक्या (२२)

836

है नीवे की पट्टी बनवाकर उस पर आगे प्रवर्णित नक्स (लंब्सा १३८) १३८) खुदवायें। मनजूब की मोहब्बत बढ़ाने के लिए जोहरा व मुक्तरी की तससीस

CONTROL OF THE

749>

16 44

hoha

CE

2497

2490

7647

المنا

449

4644

عاديان

3	(.)	۵.	3.	18	48		3
13	٤.	3.	X	.[€	١٤	4.	1
8,	S. S.	رو	16	べ	*	<	18
3.	K	35	.<	8	K	181	·Ex
			N.				
46	人	£	1		R	*	16
d	K	(	180	Neg.	2	16	
£	1	F	A.	3	\$4	1	ç

बिल दिए जा रहे है। इनमें किसी को भी अमल में लाया जा सकता है। यहाँ पर बोरों की सम्ह इस नवन के उर्दू तथा हिन्दी-दोनों के

अमे प्रदर्शित नाजीज-ए-मुबारिक (बिन्न संख्या १४०, १४१) की, । ।SSUU उठाकी/तोर्शिकांकि सिंग्यानाकोंकि तीड़ भिन्द्रायत ही फायदा बुख्य है, मोह-हामी। इसकी सिरहान रखना भी मुझोद है। क दरका के साथ वांध दें। इस अमल में इंगा अल्लाह मोहब्बत पदा ब्बत के लिए यतमून (मागूक) का तसन्तुर (ध्यान) करके सिखें और असार

#### नश (२३)

बाहिए।

भूते पर बुदवाया गया हो, उसे ताबीज, की तरह दाहिने बाजू पर बोधना कालीता बनाकर जलाये। मतलूब हाजिर होगा। जो तक्स तीं की

जपने और जपनी मां, महबूबा और उसकी मां—इन नामों के जदब भी निकाल जोर आयत करीया के अदब से भिनाकर तकसीर करें और सबर मोखर को नको भरवा के चारों और तिखें और रोगन मतुर-म-सहद

A	STEA.			9		ال يو	, (A)	
O TO	A ROAM	8.59c	13.30	2445		6	F.	
	N. A.	2335	यह रीक	38.50		2000	E.	
	NAME OF THE PARTY	26 42	38.86	36.56		3000	ig.	
419	the Steam	F.10.12	27	Ellan P	£ 4	34.2	المحرز	
A IN	AREA .			Mark Port	ties	75.7	ر د	

युस्लिम सन्त-भास्त । १३३

A Dark

स्वार स्वीरत और खाविन्द के दरम्यान नाषाकी (भनमुटाव) रहनी हो तो नीचे प्रदक्षित नक्श (संख्या १४२, १४३) ताबीज लिखकर दोनों को पिताने से दोनों में मोहज्बत पैदा हो जाती है। नक्श (२४) E. S. L. BONN 3 JOHIH 6000 MORIN H82 A S A TOWN H BAR 37 AS 63 (नक्श २३ हिन्दी स्वरूप) 10411 10411 MUDE ODAIN VOAR STORY ST ST ST カンフ ENGRA NAMA ख्य (3/4) · 0 111 A PAR Sar dona Mord army. FEE TARRE OF THE PARTY ssuu com/abdul 23/njali/odisi

को असनाद यहुत भी खायात में साबित है। 60 6 100 5 5 1616 (~ 1361 11 3 54 4 6V13

निकलते वक्त लिखकर आश में फ्रेंक टें तो सनलूब तावी होगा और अधिक के पीछे जाएगा और तालिय को कहीं खरत न होगी। इस नक्स

नीचे प्रदक्षित नक्षा ।संख्या १४४. १४४) को जुमे के दिन सूरण

नक्श (२५)

A5333

OK 363

35362

E6 8 73

m 2838

E 2 E Y Y

329

التحت مين مي رقيل هي حت مدين مي هيال

	970 47	200		
3	47	c		
7 27	711 mg	2	320	
2 7 April 10 y C.M.	Se 111 44 611	2000		
1	20	10		

The last the Boy and and the way had and a A4 65 6 10 4 50

683

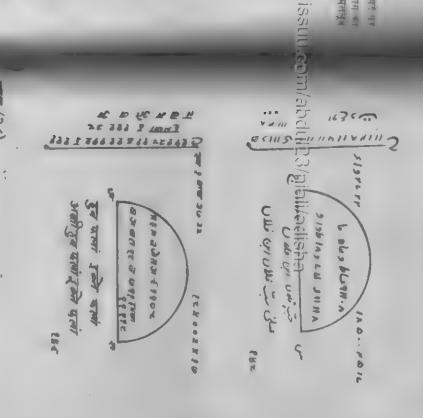
Ö,

#### नक्य (२६)

नीचे प्रदर्शित नक्स (संख्या १४६, १४७) को सतलूब के कपटे पर विचें और उसकी बत्ती बनाकर बिराग में रक्ष कर जला दें। चिराग का मुद्द सतकूब के घर की तरफ रखना चाहिए। इशा अल्लाह मनभूब केकरार होकर आधिक की युराद पूरी करेगा।

#### नक्य (२७)

यह नक्स (मंख्या १४८, १४६) हुन्य के लिए निहाबत मुख्यत्व है। सूरण की घूप में बकरी के साने पर चारों के नाम लिखे और तनवर या बूल्हें के तसे बपन करें और आग में जलायें। इंशा अल्लाह तआसाई मोह-जात मतसूब के दिल में जगेगी और यह बेकरार होता।



नक्य (२८)

बगर बहरत हो और किसी को बपनी मोहब्बत करानी संजूद हो तो एक टुकड़ा मतबूब के लिबास (कपड़े) का लेकर हफ्ते के दिन बाद समाज अंबर टुकड़े पर बागे प्रदेशित नवश (संख्या १४०, १४१) को सिखें बीर बती बनाकर भैंस के की में तर करें, फिर फसीते को बना दें तो नतबूब को मोहब्बत होती है।

	ر ع	7		15.0 K	June 16
<u> </u>				6	C SECTION 30
7				Zimer.	BONNE L
<i>&gt;</i>				Bet Touth	14
~-				1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2 1 2	DEA BEEF
7		-	-	~	1
PG PC PG	4	f	6	1	d

नक्श (२८) नीये प्रदर्शित नक्श (किल संख्या १५०) कलम शरीफ, जो तिमाम नक्श संज्यान है। यह कई मुणादी को पूर्वा करता है। मोहत्यते के जिल

1		6		
	du.	رمول	4	4:
	رسول	*	المه	<u>ح</u> ر ا
	*	النه	× ·	ج الح
243	tub	- X	ast	×

		01716
4		4.31
7		130
,		3
>-		14.00
7		F. E.
7	I	
TSSIII	, , ,	
= =		

रम तीन रोज सिखंतधा हर रोज मनसूत को पिलायें तो मोहब्बन होगी। भौर मुगद इासिन होगी। महबूब सीवाना होकर सामने हाजिर होगा। बस अओब अल करिश्मा है।

नीने प्रदेशित नक्श (नित सहया १५३) भी ऊपर कहे गए नक्श भीतिकोति। स्थितिकोति। स्थिति नित्ति गरीफ के एदाद का है। इसका मोहत्वत के निए मरक्सआं (उपर्युक्त) तरकीव ही इस्तैमाल कर मकते हैं।

49,00	101	1900	12	10 0	681
	101	147	160		131
	10.	184	101	1 1/2 3	hv 7
Co spri	14 2	IDE	109	127	5,20

#### नक्श (३१)

नीचे प्रदक्षित अलामत (चित्र सख्या १४४) को मतसूब के पुराने कपडे पर इसी तरह लिखें और नये चिराग में तिल का तेल डालकर, फलोता बनाकर जलाय। मनलूब जरूर होजर होगा।



### नक्श (३२)

के नीचे इस तरह दणन करहे कि आग को गर्मी नक्श मजकूर तक पहुँचनी रहे। इंशा अल्ला मतलूव वेकदार होगा। मिट्टी के शकोरे में रक्खें, और उस पर शक्कर डाल दें। फिर उम ॥॥ नोचे प्रतिशत नक्ष (चित्र संस्था १५५) को कागज पर मिनक

23.4	244	~ ? ~	202
4 12 24	200	200	7:0
2 12 A	274	70	P 24
*	27.4	7 . 3	7 6 9

#### नक्श (३३)

बेनबीर है। के साथ बीध दें और चलें की कातने रहें। यह मुहब्बत के निए नीचे प्रदक्षित नक्ष शरीफ (चित्र संत्या १५६) को लिखकर चथ

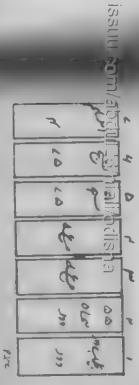
	CH,	
	2	
ı	1	
	7	
	~	
	-0	
	8	
	1.	
	11	
	7	
	T	

#### नक्श (३४)

बरबाजे पर, जहां से वह हर बबत गुजरता हो, इस तरह गाउँ कि वह इससे ऊपर होकर गुजरे तो इंशा अल्लाह सुराद पूरी होगी। नीचे प्रदर्शित नक्स (चित्र संख्या १४७) की सिखकर मतलूत के

O)	SKOLD	ote	مادران وال
^ 7	24	96	27
4	20	35	ر
12	26	6	C

बतसूब मोहब्बत करेगा । बीस बाद अब नमाज पेशीन लिखकर आग में डानते जायें। इंशा अल्लाह वस्य (३५) नीचे प्रदेशित नवश (चित्र संस्था १४८) को सात अदद अतरीक



#### नक्य (३६)

मुकीर है। इसको नका मसलत भी कहते हैं। इस नका का अमल चालीस बील लिखे। इका बल्लाह कामवाबी होती। लिखकर अपने पास रक्खा किया गया है। हर एक काम के लिए मुकीब है। हुब के लिए बतरीक रोब की बकव: निकास कर एक कामिल बुजुर्ग की इजाजत से हासिस नीचे प्रदर्शित नक्स (चिंत संख्या १५६) हुब के लिए निहासत दर्ज

~	9	7
7	٥	^
>		4

### नक्श (३७)

ORB

हो, या किसी लड़कों से बादों करने की तमन्ना हो और वह लड़की और अवर किसी लक्स को कोई अजीज दोन्त या बीबी नफरत करती

उसके अवाजी-अकारब सब खिलाफ हो। तब नीचे प्रदक्षित नका ।।। संख्या १६०) की बाम में लाये। इंशा अल्लाह कामयादी होगी। खयान रहे कि खिलाफ-ए-धरह काम के लिए इस नका में हुरी।। हरिगज काम ने लें, क्योंकि ऐसी स्रत में खुद को शदीद खता । अदया है।

>	7	بادردر
ζ	(·	C.
6	6	- IFF

20

हमका नशेका यह है कि चौद रात (अमावस) के गोज या हमत एक गोज पहले नक्या मजकूरा वाला तेरह अदद के खाने आफरान और रागन ने कलम में देणीदा करके रख ने और जिस रोज चित दिखाई दे फीरन जाकों को जो पहले में तैयार किए रखे हैं, नक्या के मुताबिक पुर कर तें (भर लें)। इन खाकों को भरने में इननी जन्दी कर कि चौद पुर कर तें (भर लें)। इन खाकों को भरने में इननी जन्दी कर कि चौद पुर कर तें (भर लें)। इन खाकों को भरने में इननी जन्दी कर कि जाया और वन पुर कर तें (भर लें)। इन खाकों को भरने में इननी जन्दी को किर अगन पाह जो पहले ने तियार करके रख निए हैं, भरे न जा सके तो फिर अगन माह चौद के रोज ही दुवारा यह अमल करना होगा। हो, अगर भान या नहीं करना पहला।

जब नक्य पुर हो जाँए तब मुबह होने पर नाम उस शस्स का, जिसमें कोई काम लेना हो। या उस सहकी का जिसमें बादों करना मक-सुद हो निखें जोर खाटे में गोली बनाकर रिया, नहर या कुएँ में बान दें। इस उरह हर रोज यह असस करते नहें, जब तक कि यह नक्क याना कि तरहें या सात खता नहीं जाँय। ईबा अल्नाह यकीनी कामयाना होगी।

नोट नेरह अदद नक्शों की लकीर इन खाका का पंणानियों पर ७६६ की संख्या पहले ही लिखकर रख से और इनको भरने में शोधता करें. क्योंकि पहले दिन का बांद बहुत अल्दी ही क्रिप जाता है। मतसूब का नाम दरिया में डाजमें से पहले हर रोज लिख निया करें। इन शर्ता की पांकन्दी जरूरी और साजमी है।

> बन्ध (३८)
> नीचे प्रदक्षित नक्षा (यन्त्र) चित्र संख्या १६१ व १६२ विस्म बन्चाह को जो कोट मुक्त (कम्पूरी), जामरान (केमर) नथा अक गुनाव के मिश्रण में लिखकर अपन पास रखेगा, वह किमी अमर का

issuu काना/वर्षाद्वीत्रियां कार्यात्रियां अल्ट्रिम किस्स अलहीम अललाह जाराहमान अन्यतिम 23 अल्डिल मिशि 320 अल्लर्टाम अल्लर्टमाल 31mms 144101 31mmil विस CR 25.47.4 Y mech

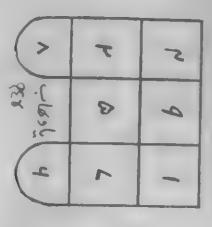
					7
1200	المح المح	2/2/	م ا	130	19
	Jane C	John Harris	- 1770	المريمن	477
253	30	grant?	0-02-1	line.	
マースを	1250	IMO h	4.70	Ĩ-	Jane J.

वायगा। मोहताज न रहेगा। अगर चालीस दिन तक सात सो छियागा । .... नक्श सिखकर और उन्हें आटे की गोषियों में भरकर दरिया थे ॥ सहल कर लेगा जोर वह सहस अञ्चोज खलायक (सर्वेप्रिय) क तो तमाम मुधिकले आसान होंगी और जिस काम का करूद करगा, अस

नक्श (३८)

भक्स इस प्रकार है

H N D. या बहाब Ac 320 699 B 5 6



नीचे प्रदर्शत नक्स (चित्र संस्था १६५ और १६६ ) की काग स पर बीस की संस्था में लिखकर तथा उसे आटे को गालियों में भरक ब प्राथमा में असता है, उसकी सब मुश्किलें कासान हो जातों है— नक्श का स्वरूप इस प्रकार है— (88)

नीचे प्रविधत नक्ष (चित्र सस्या १६३, १६४) को कागज पर जिल्लामा हो है। विकास अपने पास रखता है, उसे धैब से रोजी जिलती है। जिल्लामा हो है। विकास अपने पास रखता है, उसे धैब से रोजी जिलती है। जिल्लामा जिल्लामा हो जिल्लामा है। जिल्लामा हो जिलामा हो जिल्लामा हो जिल्ल r 4 2 € < -C ×33 μ ケンプ 538 30 // 3 2

#### वक्स (४१)

तो साठ रोज तक लिखकर, फोल कर पिलाने से आसेव हुर हो। नवांकिडा।। किया होता है क्विन कृत्या। वीमार होता ता सेहत पायेगा। जमीस का प्रमान हो तो क्वे तके के क्विन के का गुमान हो तो इसे गले में बांध दें। बाबिगा। बीकार के शले में दोधने से बीमारी दफा हो। जालेब का बासस हो रंग मिटेगा, हाकिस उत्तिम या उसका कोई उद्ग हो तो मसल्बर हो पास रखने वाले की सभी वामनाएं पूर्वी होती है। परेशानियां दूर होती. नीचे प्रवर्शित नवश (विश्व संख्या १६७ छोर १६५ को निखकर अपन

#### नक्श युक्रंभ इस प्रकार है

PLWAR PLPLA PLPLL PLWAA	LILLY LIMIN BUMIN STAIN	PLPA PLPLA PLPA.	PERNI PERNA PERNE PERE	
P <p<<< th=""><th>RCMVA</th><th>rema.</th><th>2VA7A</th><th>2111</th></p<<<>	RCMVA	rema.	2VA7A	2111
reman	Prmin	reman.	PLPLU	

#### वस्य (४२)

पास होगा उसका दुश्यन दोस्त बन जाएगा। जिस अमीर के पास जायेगा। । जिस असर के लिए अपने पास रखेगा, बहुत अस्द फ़ायदा होगा। तंत्रदरती से फरागत मिलेशी। रिज्य से मालामाल होगा। यह नक्स जिसके नीचे प्रदिशत नक्त्र (चित्र संख्या १६६, १७०) की बहुत सी खसूसियते

#### नका मांसज्यम यह है-

,					
-	or o	£3°2	80 to	73	
	43.0°	vorg.	2360	1040	920
	P369	3380	93 No	to to	9
	9.83	9362	2050	82	

٠۵١	7,831	١٠٥١	763,
9831	1.01	7,03,	1.01
1421	6631	1621	0.01
r.0'	"45,	4.0	1041

तथा रोज-ब-रोज मास बढ़ता जाए। कर, जिस शह्म की दुकान की जिल्ली कम होती हो, उसके दरवा अ बरपा करे तो खरीदार ग्रेंब में आवे, माल बिकने लगे, बख्दी गणा ही नीचे प्रवांशत नक्स (चित्र संख्वा १७१, १७२) को कागज पर जिल

न्वा मोअज्बम व मुकर्म इस प्रकार है -

	22	62	7.7	40	
I	66	22	8.9	K 40	61
	6	82	ф	শ	220
862	20	29	48	64	

		(	
	> %	4	47
2	7 1	9	77
0	>	//	77
> ~	77	4	> <

#### नक्श (४४)

मुस्सिम तन्त्र-शास्त्र | १४१

issuu कुत्राक्षांक्षांस्थि अभिस्थां/odisha सकोर को दए न करते वक्त थोनों दोस्तों का जिनके बीच अदावत करानी निवकर मरघट या कविस्तान में दक्ष्म करने से जिन दो दोस्तों के बीच बदाबत करना मंजूर हो, उनमें जापन में दुशनतो पैदा हो बातो है। नीचे प्रदक्षित नक्श (चित्र संख्या १७३, १७४) को कोरे सकोरे में

नवश इस प्रकार है-

20	23	42	23
43	と	22	М
95	33	26	7.9
24	56	N N	26

EKX

7	12	N. A.	^
10	pq	IP	7
7	19	14	2
30	19	77	"

#### नक्य (४५

कर, उस कार्य को शबंत में धोकर, शबत अपने माशुक को पिलाय। नक्स सिखने से पहले 'या शफ़ीयां इस बाक्य का कई बार उच्चारक करके कागज पर फूक मारे तो इस तरकी के नाश्चक वक में नीचे प्रदक्षित नदश (चित्र संस्था १०५ १७६) को कागल पर भिष

320

かるは

3

434

6

10

d

N

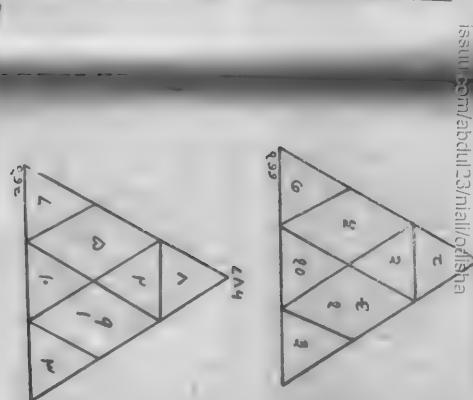
8

44

B

नवरा (४६)

पहुंचेगा। नीने प्रदर्शित नक्या (निवसंख्या १७७, १७८) को लिखकर पानी में डाल हें फिर उस पानी को खेत में डालें तो फ़सल को नुकसान में के और नक्या को लिखकर पाल में रखें तो माल को किसी तरह का नुकसान नहीं



やらと

477

4

3 -

356

>

पत्र पर सिखकर अपने बाजू पर बीधने से हर तरह की मुसीबत से छटकारा

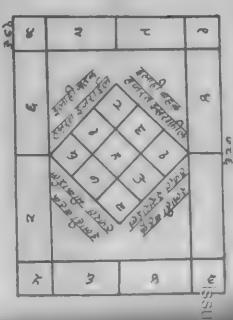
नोचे प्रवर्गित सक्त (चित्र संस्था १८१, १८२) को काराज या भीज

नक्य (४७)

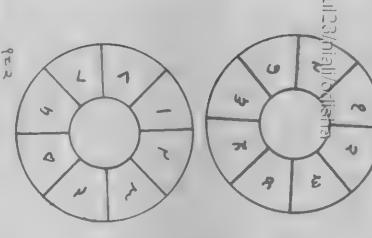
तमाम मुक्तिले दूर हो बाली है। मीचे प्रतिशत नक्श (चित्र संख्या १७६, १८०) बीस की वाता । (संख्या) में सिखार, आटे की गोलियों में मार कर, दरिया में डालन ॥

मिलता है।

नक्श (४८)

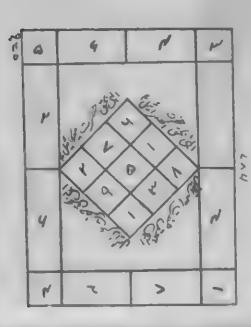


wissuu aom/abdul23/



नक्श (४९)

कर कान में दशन करने में सलाने बाले जल्ड (बालिम) के हाथों में निजात बालीर में यह दुवा ७० बार पढ़नी चाहिए-विस्मित्माह रहमानुरहीम मिनती है, इस नक्त के जिसने से पहले ७=६ बार 'विध्यत्वाह' पढ़कर बह्सैयो बनत बन्न जोर व बन्नजत नह जनान् अन दो जलत मिनु जनु-नागे प्रदक्ति नक्श . किम संस्था १८३, १८४) को कागज पर निल-



कालु व अन तसल्ली व तसल्लम असा सैय्यद नाम मोहंग्मर व्य

	의	4
7	मुन्तदर या मुन्तक्तिम या बल्लाह या बल्लाह	बहु व
	47	외
-	युन्ति	बह व अन तकसो
	म स	<b>a</b> ,
	बल्ब	सान
310	ल य	कला
	अ त	4
	<u>-</u>	द्भार
		리 .
	7	हुसाक फला या करवार या काहिर या कर
	;	력 .
1		0

प्रका है।	20	44	20	2250 0
*	20	rl <sub>2</sub>	Au ro	20
As	. 400	EN Stevenia	A)	16
2	-B	~	ч	ka Je
7	70	A)	2000	^

प्रकार	~	44	20	27.5 0
*	26	dy	ÅI PO	Po de
As	. 40	EN STORME	A)	10
2	-8-	<b>₩</b>	ч	ka le
7	20	A) A)		^

91	
A	
O H o	
-	

ित्राति । सिंहिति हिता हिता / शिव्या प्रदर्भ प्रदर्भ को कायज पर जिल्हा है। जब हुवा से यह जबस हिनेगा, तब सतसूब (माग्नक) वेकरार होगा । नक्त सुकरम व मोजञ्चम इस प्रकार है-

æ	A)	Н	
m	Ac	~	
Au	6	d <sub>2</sub>	
वित क्रांग	NA SARA	अलहर कर्म	000
3u	e	m	
47	Ac	~	
ø,	- Au	d	
	An A	E	A C STORES WITH E C

740

7

74

70

447

7

7

>

3

J

10 E

-

T T

			,
1	7	>	
4	Ь		
7	^		
	بن والال	المرفقان	
7	~	4	
9	D	`	
*	7	>	
	7	ع من منطل الم الم الم الم الم الم الم الم الم ال	ا م الم خلال الم الم الم الم الم الم الم الم الم

10 18 P

Ð

40

F

5

3

7

77

7

-

बुस्सिय तन्त्र-शास्त्र | १४४

म बिलानाया ११ रोज तक पढ़े तो जालिय के हाव से हकतासा निजात

'फली' के स्थान पर खासिस शक्स का नाम सेना चाहिए। यह

नक्श (५१ तथा ५२)

7/11	MBIA	rigr
r19.	PIQI	PIAC
r19.	ring	2012

4 > 4

ロヘア

212

ロヘア

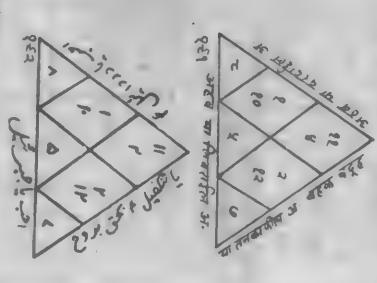
الحريلان بن ملال على حد ملال بن ملال

2100	MBIA	rigr	(2)	2222	All the state of t	26.52
r19.	PIQI	PIAC	hv 7	2840	3332	2200
r19.	2119	2192		2200	2845	N 60 60

7 3	L N		J		N)	1981	१६०)—इन पिता देने के ५२ में नीचे व	नीचे
	2222	A.			10 m	म्या स्थाप ह	दोनों को काम्य वह, हर बक्त सांसुक के नाम	प्रदक्षित नक्स
hv 7	2850	2327		1000	0	329	१६०)—इन दोनों को कागज पर लिखकर शर्बत में थोल कर माथब पिला देने से वह, हर बक्त खिदमत में हॉजिर बना एहता है। नक्श अब ४२ में नीचे माधुक के नाम के साम अपना नाम लिखना चाहिए।	(चित्र संस्था १८०
(1)	2850	23.82		7 4 4		iss	ा से थोल कर माश ना रहता है। नवश लिखना थाहिए।	3, १८८) नथा
						um com	3 a	
9 > 0		अलव्य फल	32.3		4.46	issuu com/abdul23/nali/odisha	424	
9>.	4 > 7	अलदब फलां जिन फलां	4		4 6 8	ali/odisha	440	
310	2	अक्स १८६	4 6 4	5		45	446	

नक्श (५३)

तीचे उद्देशित नक्श (चित्र संख्या १६१, १६२) वास्ते मुक्तक के, जुमेरान के दिन जाफरान के सिखकर जसाये तथा थोड़ा सा गाय का दूध उनके आगे रखे। नक्श निखने से पहले ७६६ मर्तवा 'विस्मित्साह' पढ़नी चाहिए। इसमे माणुक विद्यात में खड़ा रहता है।



नक्श (५४)

आगे प्रदेशित नवन चित्र सञ्चा (१६३, १६४) को कागम पर लिख कर फ़नीता बनाये, फिर कोर सकारे में रोगन चमेली धरकर उसमें फ़नीते जन ये तो माश्रुक करमों में जा हाजिर होता है। यह नवन मोहब्बत के वास्ते बड़ा कारगर है।

नक्ष इस यकार ल

320

la k	าธิสเทีย์ลิก	W AC
725		328
ないとな	HWACKS NA	7345
3460	DA KAO	ABRE

ISSULGOM/E

532

POIG	MIGH	MARI
MARY	فالإملان	FON
7104	707.	W0/0

नक्या (५५)

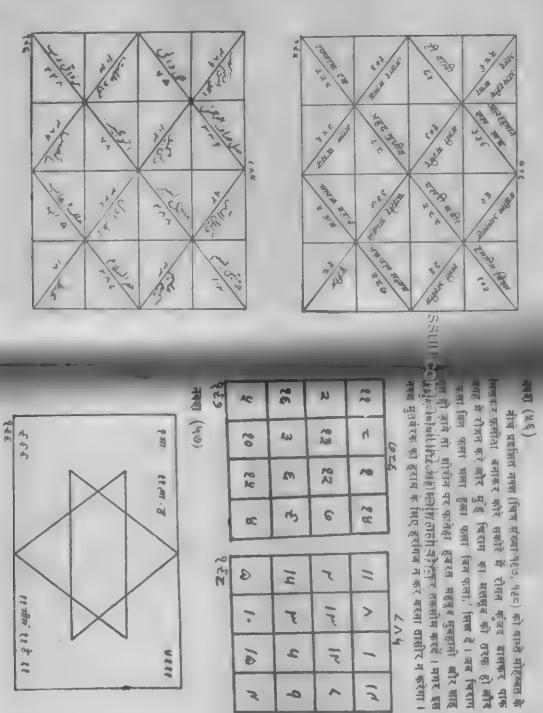
100

क्रां प्रदर्शित नक्श (बित्र संख्या १६६, १६६) को जो जलेप जिस हाम के बारने लिखेगा यह काम अवक्य होगा : हमें लिखकर अपने बाजू पर बाग्ने से किसो आफर्त में नहीं फर्मगा और जान दंगहरून होगा तो रज्जाक मुनलक रोजो गैंव म देगा, कभी मोहनाज न रहेगा । साहचे नौकीर हो तो मुनलक रोजो गैंव म देगा, कभी मोहनाज न रहेगा । साहचे नौकीर हो तो देशन उपने दोवा। अगर बोमार के बाजू पर हम बीखा जाय या पानो में घोल कर पिलाया आय तो मर्ज हर होगा और मरीज जफा पानेका। अगर जालिम हाकिम में बरता हो तो हमें अपनी टोपी या पानो में रख कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस पानो में रख कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस पानो में वह कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस पानो में वह कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस पानो में वह कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस पानो में वह कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस पानो में वह कर उसके सामने जाय तो बहु इस पर मेहरबान होगा। इस सक्शा की बहुत सी खस्सियते है।

नीचे प्रदक्षित नक्श (चित्र संख्या १६७, १६८) को वास्ते मोहत्वत के मानकर फ़लीता बनाकर कोरे सकोरे में रोगन कुंजद डासकर पाक गह में रोगन करे जोर मुंह चिराग का मससूब की तरफ हो जोर

फला बिन फलां घला हुआ फलां बिन फलां, 'सिब दें। जब चिराग

नक्श (४६)



(40)

ाम 9

P. W. 13

3338

446

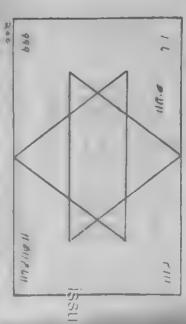
ゆうか

11 क्या अक्टा

नक्स मृतवंरक को हराम के लिए हर्रांगज न कर वरना तासीर न करेगा। 638 35 N pl 700 All 20 w 320 10 23 70 10 W 88 6 d QC, 233 D 14 = 7 7 > -7 4 7 7 0 2 7 3 -0 7

(45)

नीचे प्रदक्षित नक्स (चित्र संख्या २०३, २०४) को कागज पर सिध-



उपन अवधित नक्य (चित्र संध्या १६६, २००) को अनीक पर कुन्दह क्यांके अंगूठी में वहने तो कभी किसी का मोहताज न रहे। इस शक्त को चौदी की जंगूठी पर खुदवा कर भी पहुना जा सकता है।

नक्श (४८)
नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २०१, २०२) की काग्रज या घोज पत पर निखकर आग में दशन करें। नक्श के बीच में अपना और माशुक का नाम लिखना चारहए। यह नक्श मोहब्बत के मामले में काययांकी दिलाता है।

a.	4,	ىية
No.	· v	6
T.	~,	6
ं क्रियं क्रा	स्था स्था	भन त्र का
A3	+	æ
6	Ac	4
	~	pt.

2	-42	7
7	D	~
>	-	2
	0	
	ملى در ملال	OB5 - Ld1
~~	ملان ملان	C 18: - 18: - 2
	1	الك سكا

4	ने पर
a the	अधवा मल
6	मान्न पर अथवा मन म बाधन स समा नगामानागा है
<u> </u>	3
9	ولتزر
3	4
^	"Lic"
	8 6

क्या (६०)

THEE

AC

SER B

B

No.

jour

20

A)

d

>

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संस्था २०१, २०६) वास्ते मोहर है। मीर 320

Γ				1
	ч	100	tu	
	£D)	स्य	6	
202	8	ф	N	

47.7

>	-	4
Ę	le	~
7	9	7

issuu. aom

गैर मुल्तफ्त के लिए इसे लिखकर मीहर के बाजू (पर्वांचे तथा अपने बाजु पर भी बींचे तो मुराव पूरी होगी।

#### नक्श (६१)

नीचे प्रवर्शित नक्स (चित्र संस्था २०७, २००) बास्ते तुव के हरफ़्री असिफ़, को जबके जुजे हमल में कमरतुष्ट्र करे, सीसा की तस्ती पर कव्दत करावे।

नक्स हम प्रकार है—

42	40	32	
20	4 %	d	329
4.7	48	65	

abdul2			
/abdul28/niali/odisha	>	>	
oclisha >	> ~	>4	4×7
> 7	72	67	

नक्या (६२) नोके प्रदर्शन तक्या चित्र (संख्या २०६,२१०) तक्या तरफ 'बे' को ७८६

なっか	206	なった
N O N	208	280
206	202	N 0

TO A

7. 9	2.7	7.0
P . P.	P.4	P1.
7· A	7.7	p. pu

200

व्यविक क्रमर बुर्ज टिल् में युद्ध करे गर्छ की पोस्त पर लिखकर मगा ।।। रचें तो मुराव पूरी होगी।

> बुजं असद में तुल करे। यह भी मोहब्बत के लिए कारधर है। नक्श इस प्रकार है—

320

#### नक्य (६३)

मीचे प्रवसित नस्स (चित्र संख्या २१९. २९२) के हके 'सीन' । जीवा में जब कमर तुम्न करे, मुगे के अंडे पर लिखे। यह भी मोड्डिशी। कोता/abdul 3/niali/bdlisha

32.0

325

2 4 5

233

223

236	22 22	233
230	388	755
234	388	352

227

277

241	244	ppm
PP.	444	PPA
PWA	rp4	PPI

282

#### नक्य (६४)

बारे प्रदर्शित नक्स (बिल संख्या २१३, २१४) हरफ 'सैन' को बब

レクス

293

863

026

232

127	149	7
186	141	170
d ml	Amba	177

नक्श (६५)

आगे प्रदर्भित नक्त (चित्र संख्या २९४, २१६) नक्त हरफ 'लाम' को जब कमर बुजें कौस में तुलू करें, सिफाल आवनारसीटा पर सिखें। यह भी मुहब्बत के लिए हैं।

नैकेन इस प्रकार है ---

カンフ

N CA	rg o	204
707	700	N. 1
797	200	707

2 X X

ssuu com/abclulออัญiali/oclisma

नका इस प्रकार है-

कमर धुर्ष जोबा में तुल कर गन्ने के टुकड़े पर तिसकर मतलूब को देना बाहिए।

मुस्सिम तन्त्र-सास्त्र | १६६

नक्या (६६)

बावे प्रदक्षित नक्स (बिन संख्या २१७, २१०) हरफ 'मीम' को अब

10 3

0 1

IOF

10 1

0/

नक्श (६७)

नीचे प्रदर्शित नवन । विद्य संख्या २९६, २०० हरफ 'तून' को ॥। कमर बुवं ससद में तुझू करें, कागज पर लिखे। यह भी मोहआत क सिए है

नवेश इस प्रकर है --

320

issum com/abdul23/hiali/odishes नीचे प्रदर्शित नक्स । चित्र ईक्ष्या २२५, २०२) तरफ वाओं को दुर्ज ससद में जब कमर तुसू करे. तथि को तस्तो पर कुन्दह करावे। यह भी मोहब्बत के लिए है। नक्श इस प्रकार है

नक्श (६८)

eu N	Apl Apl	200
Au ~	AJ X	tu th
EN CO	rl rl	13 13

とって

ケンソ

35

ىيە دە

36

20

AN CO

43 H

N

0.0

WW

200

الماء الما

アフ

5 M

7 7

	7 >	Pu 94	200	
	12	20	b nd	0
222	24	7 >	200	

いない。

20

アア

70

नक्या (६ ८)

तीवे प्रदेशित नक्स (चित्र संख्या २२३, २२४) हरफ 'छोटो ह' का जय कमर बुजे सीर में हुजू करे। पोस्त आहु पर सिखे। यह भी मोहबा के लिए है।

नक्श इस प्रकार है -

	282	236	ts ts	
	12 13	4	E CA	320
223	280	385	As As An	
L				1881

#### ケハケ

202	てでん	227
2 20	7 70 4	200
23.	123	had

नक्श (७०)

नीचे प्रदर्शित नवश (चित्र संख्या २०५ २०६। हरफ थे को बुजे कीस में खब कमर तुस करे, रेक्सी कवड़े पर लिखे। यह भी मोहडबत के चित्रे है।

नवश इस प्रकार है-

853	وحد	433
828	१६२	8 20
22	3.5.6	556 55C

NAK

カンプ

325	100	19.	101
	\^ <b>\</b>	191	194
	191	761	100

#### नक्श (७१)

नीचे प्रदर्शित नक्श (चित्र संख्या २२७, २२८) की शरवत में प्रान कर पिला देने से माशुक हर वक्त खिदमत में खड़ा रहता है।

नक्श इस प्रकार है—

N N N	33	æ	83	ф
	d	908	Au .	23
	k	20	Ч	**
	33	6	23	N
				(1)

アンコ

P N N	"	2	10	9
	9	11	7	10
	8	-1	>	01
	14	^	18	~

# ६ | विविध कामना पूरक प्रयोग

्म प्रकास संबंधिय मतीकासताओं की पूर्व प्रिष्य कार्यो । त्याता की के प्रिक्तिनिति त्रिक्तिनित्री कित्य रोग-दोष-निवारक प्रयोगा का के प्राप्त भी किया जा कहा है।

उनमं न प्रीवकांण प्रयोग ऐसे है. जिन्हें तिन्हें तथा सुम्लिस लांतिकों श्रारा समान रूप से प्रयोग में लाया जाता है। ऐने प्रयोगों के मन्त्र भी इस प्रकार के है कि उनमें सुन्तिस्य पीर-पैगम्बर तथा हिन्हें देवी-देवताओं आदि के नामों का एक साथ उन्नेस्य हुआ है।

टन प्रयोगों में ने कुछ के मन्त्र नो शुद्ध इस्लामी है और कुछ के हिन्दू क्या इन्लामी शक्यों के मिल-कुल है।

दसर प्रकरण में हाजियात सम्बन्धी दो प्रयोगों का उल्लेख किया आ गुका है उस प्रकरण में भी हाजियात विषयक कुछ अन्य प्रयोग दिये गये है। इसके अतिहिस्क बर्णाकरण, मोहत, क्वरन-मिद्धि, प्रायुक्त करट पहुँचान बन्धन-मुक्ति तथा कोरी का पता लगाने आदि विषयों से सम्ब-च्चत प्रयोगों को भी इसमें सम्मितित किया गया है।

प्रत्येक प्रयोगों का स्विख्य निर्देशाहुनात्र साधन करना आवश्यक है। जिस प्रयोग के निष्ठय में सामीयक प्रयोग में पूर्व उसे सिद्ध वर नेने का उन्तेख किया गया है, उसे पहले सिद्ध करना आनुष्यक होगा, अन्यया शहकालिक रूप में वह प्रभावशासी सिद्ध सही हो संस्था।

#### राज सभा-माहन प्रयोग

पहले एक बार पूरी 'विक्यित्ताह' पहकर, फिर नीचे लिखे मन्त्र हो अपने दोनो हाया को हथेलिया पर ३ बार पहने के बाद, दोनों हथेलियां को अपने मुँह पर फेरकर, जिस राज सभा में पहुँचा जायेगा वही सफसना प्राप्त होगी तथा सब लोग मोजित (प्रसन्न) हो जायेंगे। सन्त

मन्तः-''सलामुन कांलुनिमनश्विर्देशीय सनजीकुल अजीजुर्रेडीय।'' इस मन्त्र के आरम्भ में एक बार 'विभ्यित्वाह' तथा अन्त में ७ बार 'दरूर' पढ़ना आवण्यक है।

#### सभा-मोहन प्रयोग

मन्त्र — "कार्लू खँड घोड़ करूँ सलाम मेरी आँखों में मुत्मा बसे जो देखे सो पाँचन पड़े हुद्दाई गीप्तन आदम दस्त्रगीत की कृ: कृ: कृ:।"

बिधि - अक्रवार के दिन सवा लाख गेहुँ के दाने लेकर एक्-प्रेंटी दाने पर एक-एक पन्स पढ़े। फिर उनमें से आयं दानों को पिसवाकर, उस काटे में भी अवकर मिलाकर हजुना सप्यार करें और गीसुल आदम इस्तिगीर को नियाज देकर, उसे स्वयं खायं। फिर उन्त मन्स को ७ बार पढ़कर अपनी आखों में सुरमा अजि कर जिस सभा में भी पहुँचों, बहां के सब नाम मोहित हो जायेंग।

# राज्य-कर्मवारी वशीकरण प्रयोग

मन्तः — "विस्मिल्लाह दाना कुल्हू अल्लाह यगाना दिलाह सर्व्य द्वेभ हो दाना इमारे बीच फलाने को करो दिवाना ।"

उत्त मन्त्र में जहां 'फलाना' शब्द वावा है, वहां जिस राज्य-कर्म बारी को वश में करना हो, उसके नाम का उच्चारण करना बाहिए।

प्रयोग विधः — इक्तालीस विनीचे लाकर बाधो रात के समय उनमें से एक-एक विनीचे को इक्तालीस-इक्तालीस बार जिममेनित करके अपिन में हालता जाय। इस किया को निरन्तर तोन दिनों तक करते रहने से इच्छित राज्य-कर्मवारी वधीभूत हो बाता है।

साधन-विधि: —कार्य-साधन से पूर्व २१ दिनों तक उक्त मन्त्र को २१ विमीलों पर २९-२१ बार पढ़कर अपने में आहुति देने से मन्त्र सिद्ध हो जाने के बाद हो इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

# वशीकरण कारक काले कसवे का प्रयोग

मन्तः---"काला कलवा चौसठ बीर मेरा कलवा गंगा तो। बहाँ की मेर्जू वहाँ की जाह, सास सन्क्षी की खुवन न जाय, जपना गारा अपहि साय, बलत वास सारू उत्तर मृठ मारू

> सार मार कलवा तेरी अस बार वीम्रखा दीया न वाती जा मारूँ बाही की झाती हतना काम मेरा न करे तो तुक्ते अपनी माँ का दूध पिया हराम है।"

विधि -शुक्रवार के दिन सवा लाख गेंद्र के दाने लेकर एक्टिझा।।। बेक्का पूर्वाऔर मिन्नाई रखकर २१ दिनों तक नित्य १००८ की संख्या में जप र एक-एक मन्य पढ़े। फिर उनमें से लाये दानों को पिमनाकर साधन-बिधि-ची का दीपक जलाकर गुगल की घूनी दें तथा जोड़ा

#### वश्किरण प्रयोग (१)

सबये पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर फिंड निस्नेलिखित सन्स को १००० बार पढ़ें —

मन्त-"अत्लाहुस्समद्।"

उक्त मन्त्र के प्रारम्भ तथा अन्त में न्यारह-न्यारह कार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिए। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

'दस्य' का मन्त्र इस प्रकार है-

मन्त्र—अरुला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अला आले ही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।"

फिर आवश्यकता के समय उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़कर अपने दोनों हायों की हथेलियों पर फू क मारें तथा फिर दोनों हथेलियों को बड़ी जोर से फर्श (पृथ्वी) पर मारते हुए इस प्रकार कहें –

"या अल्लाह फलान ( या फलानी ) की मेरे बस कर।"

उक्त 'कावम' में जहां 'फलाने (या फलानी)' शब्द आया है, वहां क्षाध्य-पुरुष अथवा स्त्री के नाम का उच्चारण करना वाहिए। उक्त प्रयोग को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहने से साध्य-व्यक्ति

साधक के बगीशूत ही जाता है। वशीकरण प्रयोग (२)

वशीकरण के लिए सर्वप्रथम निस्तितिकत मन्त्र का २९ दिनों तक निस्त १४४ बार अप करें। मन्त्र अप से पूर्व एक बार पूरी 'विस्मित्साह' तथा अन्त में ७ बार 'दक्ष' पढ़ना आवश्यक है।

फलानी के बेटे फलाने को मेरे बस में कर।" साइलाह इंक्लिस्टाइ अश स इमी तक लाइलाह इंक्लिस्लाइ मन्त-' लाइलाह इल्सिल्लाह घरती से कलम तक लाइलाइ इाल्लिल्लाइ मुहम्मद रेबालिल्लाइ अस्मान नक

नाम का उक्कारण करना बाहिए। जिस व्यक्ति को बशीभूत करना हो, उसकी मां के नाम के साथ उसके उनतं भन्तं म जहां 'फलानी के वेटे फलाने' शब्द वाया है, गंडिडामा केटीनी/टीडिटीटी प्राप्त मी के नाम का उच्चारण करना चाहिए। प्रकृति को बजीभूत करना हो, उसकी मां के नाम के साथ उसके रिजीनी/टीडिटीटी प्राप्त करता चाहिए। त उच्चारण करना क्षारित ।

बार अभिमन्तित पानी या मिठाई को जिस अभिनपित व्यक्ति को खिला-पिला दिया आयेगा. वह साधक के बशीभूत ही जाएगा। उनत विधि से जब मन्त्र सिंख हो जाय, तब इसी मन्त्र द्वारा १९

#### स्त्री-महिन प्रयोग

बज का बान, बहनक लाइलाह अन्लाह है मुहत्मद मेरा रस्ति। बांचे कदम तरे डार, जो न माने मुहम्मद की जान, उस पर पड़ उसका नाम मोहिनी मोहे जग संसार। युक्ते करे मार मार उसे मन्त्र-- "अल्लाह बीच हथेली के मुहत्त्वद बीच कपार,

प्रकार बाठ दिन तक साधन (अप) करने में मन्त्र सिंह हो बाएगा। दोपक तथा भिठाई अपने सामने रवखें तथा लोबान की ध्रुप वें। इस प्रतिदिस १००१ बार इस मन्द्र का जपकर। अपकरते समय पीका विधि - किसी भी शानिवार से आरम्भ करके दूसरे शनिवार तक

बह रजी मोहिन होकर साधक के बशीभूत हो जाती है। जुने इस मन्त्र द्वारा ७ बार अभिमन्त्रित करके मस्तक पर अस देने से प्रयोग के समय साध्य-श्री के बीचे पांच के तीचे की मिट्टी लाकर,

#### स्त्री-वर्शाकरण प्रयोग (१)

पर ठीन सी ठीन वहाक ।" षास बाना, उसे मेरे पास साना, न साबे ठो वेरी बहुन भानजी मन्त- इका आत्वेना शैताना मेरी शिक्स कन फलानी के

> क इंली लंकर, उस डेली पर उबत मन्त्र को १२१ बार पढ़ कर फूँ के, । इस यह गुड़ बालकों को बीट दे। इस प्रकार ७ दिन तक यह अमल करे । बाध्य-त्त्री वशीभून होकर पास बा गातो है। उक्त सन्द में जहां फलानी वश्चात् उस गुड़ की हेली को खाट के नीचे रखकर सो खाय। शत:-बिधि - एक बारवाई के वांयते नंगे बड़े होकर, हाथों में गुड़ की

बाशी इच्माइल जोगी ने दिया पन का बांडा, पहला बांडा जाती लानी खाय पास चली आई, दुढाई श्री गुरू गारखनाय की।" मन्त-- 'कामरूटेम कामाल्या देवा जहाँ बसे इरमाइल र्जा, बीड़ा दिखाने खाती, तीजा बीड़ा अंग लिपटाई,

बाता है। फिर आवश्यकता के समय बिना कट पान के बीड़े का इस क्सिलिंग स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। श्योभूत हो जाएगी। इस मन्त्र में जहां 'फलानी' शब्द आया है, वहां क्य मे ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह बिधि दिवाली की रात में यह मन्त १४४ बार पढ़ने में सिद्ध हो

### स्त्री-वशीकरण प्रयोग (३)

जोंदे, दुढाई लोता बमारी की, धनन्तरि को दुदाई फिरों।" बोगी, इस्माइल जोगी ने लगाई फुलवारी, फूल तोई लोना बमारी, जो इस फूल की ाम, महल खोड़े, घर छोड़े, आंगन खोड़े, लोक-कुडम्प की लाज मन्त--"कामक्य देस कामारूया देवी जहाँ पम इस्माइल संघ वास, तिस का मन रहे इमारे

इस मन्त्र का जप करें तथा श्रुप, दोप और मंदिरा रखकर पूजन करें। इस बाबमन्त्रित करके साध्य-स्त्री को वे दें तो वह उस फून को सुवते ही बबी-कार मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर किसी फूल को ७ बार इसी मन्त्र से भूत हो बाएमी। चित्रि — जानवार से बारदभ करके २९ दिनों तक निस्य १४४ बाद

### स्त्री-वशीकरसा प्रयोग (४)

षिष्टि :— किसी भी शनिवार से आरम्भ करके २९ दिलों तक, सार्थ रात के समय नका होकर ११ गई के दाने हाय में लेकर, प्रत्येक दान । उपाय उनते सम्ब की स्थारह-स्थारह बार पढ़कर आज में डालता जान । सन्त में किस जाह पर 'फलानी' शब्द आया है, वहीं साध्य-स्था के सम

उनत किया को नित्य-नियमित रूप से करते रहने पर साध्य-को इशीभृत होकर रवयं समने था उपस्थित होती है।

#### स्ता-वशाकरण प्रयोग (५)

मन्द्र (१)-''अलफ गुरु गुफ्तार रहमान, जाग जाग वे अलहादीन शैतान सात बार फलानी को जा रान, न राने तो तेरी माँ की तलाक, बहिन की तीन तलाक।''

मःव (२)— 'अलफ अलीप एक रहमान, सुन शैतान संग शक्त बन फलानी को जा रान, न राने दो तंरी माँ बहिन को तीन सौ तीन तलाक।''

उक्त दोनों मन्तों की प्रयोग-विधि नीचे लिखे अनुसार एक जैसी है। उक्त मन्तों में जहां 'फलानी' सब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

बिधि नेमन का बीमुखा दीपक बनाकर उसके बारों को नो पा बीटे का रक्त (खून) तथा अपने दोंचे हाथ की अनामिका (खीची) अंत्रां का रक्त (खून) लगाकर, उसमें तेल भरकर चार निचर्य रक्खें। फिर ता (निवेस्त्र) होकर, दक्षिण दिशा की ओर सुँह कर नेठ जीय तथा दीपक का बत्तियों बलाकर, सोनान की छूप दें। भोग के लिए शुने हुये जी अपन

> ान रक्खें। फिर उनत दोनों मन्त्रों में से किसी भी एक को १०८ बार प कर नने ही सो जांध तथा दीपक को जलता हुआ छोड़ हैं। इस जिया तो नित्य ७ दिनों तक करते रहने से साध्य-स्त्रों वशीभूत होकर स्वयं ाधक के पांचों पर आ गिरती है।

#### स्त्री-वशीकरण प्रयोग (६)

कार कार कलानी के जिया जान जो न माने तो तेरी जन्मा की तलाक हमसीश की तलाक।"

रिव्यको -यह मन्त्र भो पुत्रों के मन्त्रों के पाठान्तर जैसा ही है।
सको प्रयोग-विधि भी मिलती-जुलती है, जो निम्नानुसार है -

बिधि —बेसन का एक चीमुखा दीपक बनाय, फिर दिये हाय की नामिका बेतुनो के रबत में हुई का फिराकेर बस्ता तथ्यार करें. वहुरशस्त तीपक में चमेली का तेल भरकर उसमें पूर्वोवत बतो डालें नया लोबान की पूर्व । फिर भुने हुए जबला (बी) का भाग रख कर दिशा की बार मुह करके बेठें तथा १००० की संख्या में मन्त्र का जब करें। ७ दिन तक यह प्रयोग करने से साध्य-स्त्री बशो सूत होकर साधक के पास चली यह प्रयोग करने से साध्य-स्त्री बशो सूत होकर साधक के पास चली यह प्रयोग करने से साध्य-स्त्री बशो सूत होकर साधक के पास चली

प्रयोग बिधि - मिद्ध हो जाने पर प्रयोग के समय उकत मन्त को श बार सुपारों की छाल पर पढ़ तथा उने पान में रखकर अभिनीयत श बिन को खिला दें तो मनोधिलापा की पूर्ति होतो है। यह मन्त्र आकर्षण कारक होने के साथ-माथ वशीकरणकारक भी है सथा मूँठ को उल्टो केवने का काम भी करता है।

#### सर्व जन-मोहन मन्त्र

मन्त — 'कामकदेस कामाख्या देशे जहाँ बसे इस्माइल जोगी। वे बोई बाड़ो, फूल उतारे लोना चमारी। एक कुल हंसे, दूजा विहेंसे, तीजे फूज में कोटा-बड़ा नाहासिह बसे। बो से इस फूल की बास, वो अबी इसारे पास। और के पास जाय तो हिया फाटि मरि जाय। मेरो मक्ति गुरू की शक्ति फरो मन्त्र देश्वरोवाचा।"

२१ दिन तक निरुत्तर होम करने से मन्त्र सिंह होता है। इस अवधि म बहाचर्य से रहना चाहिए। २२वें दिन बाह णों को घोजन कराकर टो⊌ण ९०० बार उक्त मन्त्र से अधिमन्तित कर अस्ति में होम करें। इस ध्रवाट मिठाई से, दीपक जसा, १०८ सुर्गा घत पूर्वो को घी में सानकर प्रशेष को विधि-रिवेबार के दिन स्नान करके लोग, सुवारी पान ॥॥

शावरयकता के सबय किसी सुगन्धित पुष्प को इस मन्त्र होऽऽ॥॥क्टाना/abdul23/niall/ddisha का मन्त्र अभिमन्तित करके जिस व्यक्ति को सुषा विया जायेगा, बही मोहित हो सन्तः सन्तः—'पीर विरहता प्रथ करे सवा सर

## स्त्री-मोहन चम्पा दुल मन्त्र

षहरे जीशी के इन्हें में परे, बाबा छोड़ कुवाबा जाय तो नार की शक्ति फुरोमन्त्र ईरवरोवाचा चुके उमाह खले लोना चमारी बांदि पर घर जाय, डाली काटि वहीं नर आय, मेरी मक्ति गुरू होनी राजी, फूल रूँ उसी के हाथ, वह उठ लागे मेरे साथ, हमका हो तो उठा साब, वह सोब राजा के महलों, प्रजा के महलों, सुकस मसान, ये आवे, किसके काम ये आवे टांना टामन के काम, मेजू बसे द्या का ऐड़, दश्या के ऐड़ से रहं काला मेरू, भूत मेत से मरें श्च राता, द्वा श्रम साता, एक श्रम हंसा, द्वा श्रम निहंसा, तहा जोगी, इस्साइल जोगी ने लगाई बारी. जुल चुनै लीना षमानी, एक काला मेर को सावे मन्त- "कामरुदेस कामाख्या देवी सरके बांध बेटी हो तो बेगी लाव, सती बहां बस क्रमाइल

इयं धूप टेकर, तोड़कर घर से कार्ये। फिर घर नाकर शत के समय टालो के आगे दीपक रत्नकर भैरव का पूजन कर तथा २१ बार क्या का बद बाबी की, उनत मन्त्र से ७ बार व्याप्रमन्त्रित कर तथा गुगल की धूनी में साथ कलाये का जोरा बोध जाये। रविवार के दिन प्रातः काल उसी विधि: - शतिवार के दिन बच्चा के येह को न्योत कर उसकी अली

> करें। भोग में सराब, उर्द के बड़े, तेल, गुड़ नथा वही रक्खें। इस प्रकार नित्य २१ दिनों तक साधन करने से मन्द्र सिद्ध हो बाता है।

मन्त्र सिक्ष हो जाने पर आवश्यकता के समय चन्पा के फूल को इस मन्त्र से ७ बार अधिमन्त्रित करके, जिस स्त्री को सुधाया आवेगा, वही मोहित होकर बन में बनी रहेगी।

मन्तः—'पीर बिरहना धुं धु करे सवा सेर सवा तीला खाय अस्सी कोस धावा करे साठ से इतक आगे चले, सांत से इतक माही पाठ कर कलवान नवी के याद करे ठः ठः ठः।" हयकड़ी गर पर्ना में टेकरा चल, सान का जगाता चले, बंट का उठाता बले, हाथों में गजना का पीर बले और की धजा उखाड़ता बले, अपनी बजा पाछ चल, ह्रापन से खूरी बले, बाबन से बीर बले जिसमें गढ़ बेड़ी गेर हलाल माही दीठ कर सरदार

तथा उसने जिस काम के लिए कहा आयगा, उसे वह पूरा करता रहेगा। अयार हरेग नहीं तो फिर वह पीर हमेशा खिदमत में हाजिर रहा करेगा दिन पीर बिरहना सामने हाजिर होगा। उम दखकर करना नहीं बाहिए। कर चमलों क फूल चढ़ांव एवं सवा सर हलुवा का भोग रक्खें तो चासीसबै इस मन्त्र का नित्य १०० बार जप करें तथा मुगिधन तैस का दोपक जला-विधि: किसी ग्रहण की रात में शुरू करके रोजाना ४० दिनों तक

#### मुहस्मदा पीर का मन्स

जनीर जिस पर खल मुहञ्मदा पीर, सबा मन का तीर जिस पर धाने, डाफिनी को बीध इया बावड़ी से लाबी, सीता को साबी, खोलकर लागो नहीं तो माता का चूला दूध हराम करे।" हुसेन की जांघ से जिकाल कर लावा, बीबी फातमा के दामन से पीसती का लावा, पकाती खलता आवे मुहम्पदा बार, मार मार करता आवे, बांध बांध करता मन्त्र:---''विस्मिल्लाहेर हमानिर्ह हीम पांच प्रवा कोट को लावा, जल्द जाबो इजरत इमाम

श्रिष्टि—इस मन्त्र को नीचंदी जुमेरात की सध्या से जपना आगा । करके नित्य १० वार पढ़कर लोबान की घूप देते जांच। इस प्रकार ना जुमेरास कीत जाने पर मुहत्मदा पीर हाजिर होता है तथा उससे जो काम करने की कहा जाता है, उसे पूरा करता है।

इस मन्त्र को यदि किसी बीमार बादमी के उपर पढ़कर फूँक मार्ग बाय तो उसे आराम मिलता है।

# सुहम्मदा धीर का हाजिराती संत्र

बसबार अपनी अपनी जमात सिताबी लेकर आवशा जहाँ हकाले पूर्व का बाजा बजा, पूर्व का बादशाह आया काल काल के शाह आया, परिचम का बाजा बजा परिचम का बादशाह आया, विरियल्लाहरेर्रेत्रेमानिरहीय उत्तर का बाजा बजा उत्तर का बाद-लालपरी बली, सुफद परी चली, जरद परी चली, स्थाम परी चली, हमारी चुरी उल्टी सोमरली देखें तेताल मन्त्र तेरी सक्ति रायनपुरी से चली उलटी पासर सुलटी कानी, जो काई कहे सी बहया तीन बलता, तीन सी बह्या बड़े बेग से बह्या उडा आसमान परी पत्नी, आकाश से उत्तरी बराय खुदा मेरे काम कूँ सब्ज परी बली, हुर परी बली, जूर परी बली, अलोल परी बली, बते घूमन गरम् देवी घूमा बली नदी नालेस् बली मन्दोदरी इडादेव चल्या मंदाऊ कालेश्वरी चली लंका ये गवस चल्या हतुमंत सिनाधी उनार ल्यावका एक चलता, एक सी चल्या दीय चलता दीय रांक्श चलत चींसठ मूसा चलंत, सुलेमान पेगम्बर का तखत चलंत बहत्तर बल्लम बलंत एक लाख अन्सी हजार पीर पंगम्बर बलंत, बाबन बीर चलंत, बींसठ जोगनी चलंत, नी नारसिंह चलंत, बारह अर्जांगर पर पर्वत चले, हाजी चले, बाजी चले, ढोली बाजंत रनवलखता जीका असवार यहां चलता कीन कीन चाल्या मेरी बाजंत अहमडा वलंत, महेमदा बलंत, सत्तर सिला बलंत, मन्त्र--- 'बिस्मिल्लाहेरहेमानिरहीम युहस्मदा ताह्यासिला

बिधि—सवा हाथ समेद कपड़ा, गुगल तथा लोबान की घूप दी बाय। फिर सवा मर बावन की महिजद बनाकर, याली में पानी भरकर सक्खें। सिजद के ऊपर बीमुख दिया जलाये। फिर क्वारों कन्या की स्मान करवा के तथा नये कपड़े पहिना कर उसे सामने बैठायें तथा गुड़ स्मान करवा के तथा नये कपड़े पहिना कर उसे सामने बैठायें तथा गुड़ की गोली को पूर्वीवत मन्त्र से १४ बार अभिमन्त्रित कर कन्या को खिलाया। फिर कन्या दीपक के ऊपर होटि जमाये। तदुपरांत उसमें जो कुछ पूछा बाएगा, उसका बहु सही-सही उत्तर देगी।

# हाजिरात का सुलेमानी मन्त्र

पन्त---'बिस्मिल्लाहुरेहीमार्नुरेहीम खुदाई बड़ा तू बड़ा केन्द्रीन पैशन्बर दुनी तेरी सादात फुरो बादना मुगदी बेचुनियादी तुर्कमापरि लापिया सिलार देखें तेरी सिक्त बेगि बाँधि रूलाब तो नारसिंह चीरासी कलवा बारा प्रधा जठारह सी गाकिनी कामन दुरामन खल खिद्र भूत प्रेत चीर चालार जिया बेताच बेगि बाँधि लाव को न बाँधि लावे तो दुहाई मुलेमान पैगन्बर की।।"

बिधि – हर धुक्तवार को तेल, इन, लींग, ध्रा तथा मिठाई से पूजन करके १०८ बार पढ़ने से यह मध्न ४० दिन में सिद्ध हो जाता है। मंत्र के सिद्ध हो जाने पर जब हाजिरात करना हो, तब फ्रम पर मिट्टी से चौका सगाकर, उस पर बाबलों को मरिजय बनायें। फ्रिंड एक सकड़ी के पट्टे

पर निशुस निखंकर, उसके ऊपर क्वारी करणा को स्तान कराकर तथा स्वक्ष करण पहिना कर नेठाय फिर कत्या के सामने सीपक जलाकर क्ष स्था स्वयं पूर्वीकृत सन्त्र की पढ़-पढ़कर कत्या के सस्तक पर खावना का मारें तो कुछ देर बाद ही वह कत्या आपके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर साक में देखकर दे उठेगी।

### हाजिरात का ख्वाजा मन्त्र

विधि: किमी भी शुक्रवार से आरम्भ करके २१ दिन तह इन मन्त्र को नित्य पन्त की सहया में उत्तरी माला पर जय स्थीत, इलायको और मोला की धूप देने यहें। इस प्रकृति सन्त्र सिद्ध हो जाता है।

प्रयोग के समय मुंबर ८ बजे एक छोटे बच्चे को स्नानाहि रे पर्वत्त कर रवंच्छ वस्त्र पहला कर एक सकड़ी के पट्टे पर बेटाय तथा उसके बात संगूठ के नाखून पर काली स्थाही (काजल) लगा है और उसमें यह रखन को कहें तथा स्वयं आगे बंठकर उक्त मन्स्र को पढ़ते हुए धूप देते रह।

तथा पीर साहब का जाय तब मुंशी से कहें कि वह भीग की की नव्य करें - यह कहकर श्रोग, इतायची, इत इन सबको दें। फिर मुगा बद्दी बिछ जाने पर कहें कि पीर साहब को जाकर हमारी ओर मं अह करके मुंबी साहब को साथ लेकर यहाँ तशरीक लाये। जब मुंशी साहब करें कि आपका फलां खादिम आपको याद कर रहा है, इससिए मेहरबानी उन्त मेंगाओ। 'तन्त तथा कुसी आ जाने पर कह कि गर्दो । बंधवाओ कि फर्स किछवाशो।' जब फर्स बिछ जाय, तब कई कि 'दो कुसी खोर 'पियती को तुला कर छिड़काब कराओं।' जब छिड़काव हो जाये तब कह बाल को छलाकर झाडू नगवाओ। जब झाडू लग जाये तब कहे कि इस प्रकार बार दक्ता करें। जब बाठ आदमी आ जायें, तब कहें कि साड श्रीर वा जाको।' जब दो बीर बाजायें, तब कहें कि दो और भी जायें। त्य आप कहें कि दो जने आयो। जब दो जने आजायें तब कहें कि 'श बौगान विखाई देने लगे। फिर लड़का जब बौगान दीखने की बाबत क मुझे भैदान दिखाई दे रहा है, तब आप उससे कहे कि मैदान की जगह लड़के की सबसे पहले मैदान दिखाई देगा। जब वह यह कही कि पीर साइब

> के महें कि पीरात पीर साहब के हमारी अर्थ करें कि आपका फलां खादिम फलां काम के बारे में पूछ रहा है।' यह कहकर अपना काम बतायें तो सड़के द्वारा उसका अवाब मिलेगा।

यदि लड़का उत्तर को समझ आग तो ठीक कहे, न समझ सके तो मुझे फलां घाषा में विश्वकर मुझे फलां घाषा में विश्वकर प्रिकाली। निर्मानी मुझे प्राची मापा में विश्वकर दिखा देशा। इसा बाध से आ देखां देश है। दह पूछ लेना वाहिए।

#### स्वप्त सिद्धि मन्त्र (१)

मन्त-- "बिरियल्लाहर्डुरेमानतुर्रहीम अल्लाहो रभीमुहम्मद रखल व्वाजे की तस्वीर इस आलम हजूर मेजेंगे मदक्कल स्यांवेंगे जकर।"

बि'ध-इस मन्त्र को पहले सवा साख को संख्या में जप कर थिय कर लेना चाहिए। मन्त्र का जप बृहस्त्रतिवार में आरम्भ करना चाहिए स्था पश्चिम की ओर मुंह करके बेठना चाहिए। आवश्यकता के समय स्थारह सी से स्थारह हजार तक की संख्या में, जितना हो सके मन्त्र का जप करना चाहिए। यह क्रम २१ दिन तक जारी रखना चाहिए। इसके प्रभाव से वांछित प्रथन का उत्तर २१ दिन के भीतर स्वन्त में अवश्य प्राप्त हो जाता है।

इस मन्त्र के अमत के दिनों में हर बार पेशांव करने के बाद इस्तिजा अवश्य करना चाहिए अर्थात इन्द्री को मिट्टी के ढेले से पोछ देना चाहिए शका बृहस्पतिबार के दिन किसी कड़ पर जाकर रकाशी, फूल-इस तथा मिठाई चढ़ानी चाहिए, सोबान की धूप देनी चाहिए तथा फकीरों को बाता खिलाना चाहिए।

स्थरणीय है कि सभी मुसलमानी मन्तों को उल्टी माला फेरते हुए जपा जाता है जप: इस मन्त्र को भी उल्टी माला फेरते हुए ही जपना भाहिए।

#### स्वप्न-सिद्धि मन्त्र (२)

मन्त्र---"विस्मिल्ला हुरहेमात्तर्रहीम शमशेरव धरेल शसे बादम इत्तरत महबूब सुमानी हाजर।"

विधि साधन निधि नया उच्जित्ता जादि के सभी नियम पूर्वाका मन्त्र की तरह ही समझना चाहिए। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को नित्य १००० की संस्था में जपने से २९ दिन के भीतर स्वयन के साध्यम से भविष्य का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

#### स्वप्न-सिद्धि मन्त्र (३)

मन्त्र--"या बामितो।"

विधि पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके बैठें तथा चीमुखा दीपक अलाकर उल्टी माला पर निरंप ३३००० को मंख्या में ४९ दिनों तक उल्टी माना फेरने हुए जप कर तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। आवश्यकता के समय इस मन्त्र को जिल्ला १००० की मक्त्या में पढ़कर सो जाने पर नाग्यक के प्रथन का ठाक-ठीक उल्लंग स्वास्त्र में मिन जाता है। इस मन्त्र को अल्यन्त चमरकारी माना जाता है।

# दुरमन को मारने का प्रयोग

सबसे पहले मोस का एक पुतला बनायें। फिर शनिवार के दिन पहली घड़ी में उस पुनले को १०१ बार निश्निसिलत सन्त्र से अभिमन्त्रित कर अथीत् इस मन्त्र को पढ़-पढ़कर पुतले के ऊपर फुक मारें—

मन्त-''या कह हारो।"

उक्त मन्त्र को पहले में पहले ६ बार पूरी 'विस्मित्साह' का मन्त्र पह नथा - बार निस्तानिधित मन्त्र भी पहें

"या कह हारा या कहर नाधिल कहफी कहर।"

भन्त के आदि तथा अस्तर में १९-१९ बार 'दरूद' भी अवस्य पढ़नी

उक्त प्रकार में मन्त्र-जय करने के बाद झाड़ की सीक का लोर-कसीन बनायें फिर उसे निस्तीनोखत मन्त्र से ४०० वार अभिमनित्रत करें—

'या हृशियन लाइलाइड्स्ला अंता सुवहानिका इचा कुन्तै मिनज्जालमान ।''

इस सन्त्र को पढ़ने से पूर्व एक बार पूरी 'विस्मित्लाह' पढ़ना बावश्यक है।

फिर तीर को कमान पर रखकर नीचे लिखे मन्स को ३ बार पर्टे परन्तु इससे पहले भी एक बार बिस्मित्साह अवश्य पढ़नी चाहिए। मन्त्र यह है –

"या कह हारो या इतराली या टीगहलो या असवाकिलो फलाने की जाती और कलेंगे को मेरे तीर की जावें से जरूमी करों issuu.oom/apetubadintalii/oclisha

उक्त मन्त्र में अहाँ 'फलाने' शब्द आया है, वहाँ शत्नु के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

उनत प्रकार से मन्त्र को पढ़ने के बाद कमान पर चढ़ाये हुए शिर को पुतले की छातों में मारता चाहिए। इस प्रयोग से कुछ ही दिनों के भीतर दुश्यन की मृत्यु हो जाती है।

#### शत्रु-मारण मन्त्र

मन्त्र--'जल की जोगिनी पाताल का नाग, उठ अवारि जहाँ लगाऊँ तहाँ दोड़ के मार, दोड़ कर दुहाई मुहम्मदाबीर की तुकनी के पूत की दुहाई, मोला बक़बी की फुरो मन्त्र ईश्वरो बाबा।"

बिध - एक पत्ते में योड़ा सा अबीर लपेटकर, उमें अपने मुंह में रक्षों फिर पानी में गोता लगाकर ७ बार उक्त मन्त्र का अप कर फिर मुह में में पता तथा पत्ते में अबीर निकास कर, अवीर को गुगस की धनी रकर ७ बार अभिमन्त्रित करके जिस शह के मुँह पर डाल दिया जायेगा उसकी मृत्यु हो जायेगी अथवा उमें मृत्यु-नुस्य कथ्ट होगा।

#### शत्रु-मुख स्तम्भन सन्त्र

मन्त्र—'शाह आलम इस्य आतम जर करो दुरमन दक्ते इसे बालिम।''

बिधि किसी श्राप्त सहीते के श्रुक्त पक्ष की पहली ज़सेरात से आरम्भ करके प्रतिसे तक राज के समय टीपक जलाकर तथा फूल बताशा एवं रेवड़ों चढ़ाकर तथा लोबान की धूप टेकर इस मन्त्र का नित्य ४० बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

आवश्यकता के समय शत्रु की और ४ कार मन्त्र पढ़कर फ़ुँक मार देने से उसकी जीम बन्द हो जाती है अर्थात् वह अधिक नहीं बोस पाता।

#### दाह के दर्द का मन्त्र

मन्त--"नमो कामक देस कामधा देवी जहाँ वसे इस्माइल जोगी। इस्माइन जोगी ने पाली गांप, निंत उठ वन में परावनांऽऽ।।।। जांप। वन में परें कलांचला, पांस लांप पी के गोंबर किया, जांसे निपज्या कीड़ा सांत। सत सुताला पूँछ पुछाला, धड़ पीला सुँह काला। डाड़ दाँत गालै मसड़ा पीड़ा करें तो गुरु गोरखनाथ की दुडाई पिरें। शब्द साँचा पिषड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

बिधि—इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए लोहे की तीन कीसों को काठ (लकड़ो) पर ठोंक देने में दाढ़ का दर्द दूर हो जाता है।

# बावले कुत्ते के काटने का मन्त्र

मन्त--- 'नमी कामरू देस कामाधा देवी जहाँ वसे इस्माइस जोगी । इस्माइस जोगी ने पाली कृषी दस कासी दस कासी दस पीली दस लाल । गंग विशंगा दस खड़ी दस टीको दें माल । इनका विष इसुमन्त हरें रक्षा करें गुरू गोरखनाथ । सत्य नाम आदेश गुरु को ।'

बिधि यह मन्त्र यहण की राति में १००० बार खपना चाहिए। अप के समय तेल का दीवक जलाना चाहिए तथा शब्दुओं का भीग समाना चाहिए। इस वकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

सन्त के सिंख हो जाने पर जिस आदमी को बावले कुरते ने काटा हो, उसके बाव के जारों जोर आरते कण्डों की राज को ७ बार सन्त पढ़कर सवा दें। इस किया को तीन दिन तक नित्य करने से साथ होता है।

#### बावले कुत का भारा

यदि किसी व्यक्ति को बाबने (पांगन) कुरते ने काट लिया हो तो निम्नितिबित मन्त्र का शारा देने से उसका निष उत्तर बाता है।

> मन्त--'ओम् कानक देस कामारूया देवी जहाँ वसै इस्माइल कोगी, कामरा कुत्ता सोना की डाड़ रूपा का कुड़ा वन्दर नाचे शिक्ष बजार्व सीता बैठी औषध बौंट कुकर का विष माजे शब्द सावा पिन्ड काचा फुरो मन्त्र ईरवरी वाचा ।"

क्रिक्ति है। है। है। है। है। है। है। है। यह अववा प्रहुत के दिन इस मन्त्र को १०,००० की संख्या में अप कर सिद्ध कर लेना चाहिए तथा आवश्यकता के समय १०८ बार जयकर रोगी को हूँ क मारनी चाहिए।

#### अधिसीसी का फारा

यदि किसी व्यक्ति के आधे सिर में सुर्योदय से सूर्यस्त तक होने बात: आधासीसी का दर्द हो तो नीचे लिखे मन्त्र का झारा देने से दर्द बन्द हो जाता है।

#### मन्त---'काली चिद्रिया किलकिली, काले बनफल खाइ। खद्रे ग्रुहम्मद शाह अंक दें, आधासीसी बाह।"

बिधि - पहले घहन के दिन दीवासी या होली की गत को १०,००० की संख्या में जब कर मन्त्र को सिद्ध कर लें। फिर शनिवार या दविवार की दोपहर कारह बजे के समय योगी को सूर्य की ओर टकटकी लगाकर देखने को खड़ा कर दे तथा स्वयं इस मन्त्र को ९०८ बार, पढ़कर उस पर फू के मार दें तो आधासांसी का दर्र हुर हो जायेगा।

#### बवासीर का मन्त्र (१)

मन्त---'ईसा ईसा कॉच कपूर चीर के तीता अलिफ अधर बाने नहीं कोई। खूती बादी एक न होई । दुहाई तख्त सुलैमान बादशाह की।''

बिधि — उक्त मन्त्र किसी यहण के समयः होली अथवा दीवाकी की रात में १०,००० की संख्या में अपने से सिद्ध हो जाता है।

मन्त के सिद्ध हो जाने पर. इसी मन्त से तीन बार अधिमन्तित पानी रोगी को बाबदस्त क्षेत्रे के लिए देंतचा बाद में रोगी पालाने के हाब बोकर, बंबाधीर के सस्से को हाब से एकड़कर मन्द्र द्वारा अधिमन्त्रित

# जादु-रान का असर दूर करने का तन्त्र

जमायम की मुंबह चार बने किसी किबिन्तान में जाकर, यह किसी पेड़ के चीसने म एक कीए की पकड़ लावें। फिर उसे लोहें के विजय में बन करके उसके किर पर जाफरान (केसर) का तिलक लगाय नथा उसके गर्दन के बारों और भी केसर में एक घरा सा बना दें। फिर मुरज मिकल लाने पर उद्दर के आहे का हिन्तु असली था लीत शबकर गिंड्ड्रिशा तैयार करें। उसी में प्रीता मा लीवान भी पिना दें। फिर वह हिन्दु मा कीए की लाने के लिए दें। दिन के बक्त उसे हत्व मासून खुराक देते रहें तथा पीने के लिए वहीं फेटने में निकला हुआ नोने रंग या पानी दें। पेन गोजाना करने रहें। फिर जिम भित लाने का नीने रंग या पानी दें। पेन मककार की बजाय नेत और गुड़ म नैयार करें। यह हन्तु मा मोह को कर्तन में एक की करने में निकलार चिहार और नोह के वर्तन में रखकर हो खाने के लिए देना बाहिए।

हम तेनुए ो खाने के बनेन में डालने से पहले उस पर ६ नती मिन्दूर छिड़क देना जकरी है तथा उस बतेन में तीने का एक छोटा टुकड़ा भी डाल बना चाहिए।

की बाहनपुर की मी खा मेगा पत्रन्तु तांचे का दुकड़ा उसी अर्थन मे पड़ा छोड़ देगा। तब उस हुत है को अर्थन में ते निकासकर अर्थन पास असना रख से।

कीए की पकने हुए अथ सान दिन पुत्र हैं जाये तय आठवे दिन उसे पिजेंडे ने निकालकर आकाश की और पुत्र करके छोड़ रें। फिर उस लीवें के दुकड़े की किया सुनार के पास से आय और उससे कहें कि वह उस दुकड़े में एक आदमी जेमी सुरत तैयार कर है। उस सुरत के एक ओर कीए का तथा दूसरी ओर एक ऐसी तराजू का विश्व खुटवा दें जिसके होनों पतारे बराबर के हों।

उपर सिखे तरीके में करामानी गंडा नैयार हो आगया। अगर कथी अपने उपर या किसी दोगर शक्स के उपर जाड़ टोने का अमर साझ्य हो तो उपर कही गई भूरत को खांग में आधकर खबने गने में पहन ने या दोगर शहस के गने में पहना में। जगर किसी ने मकान में पहन वान सब नोगों के उपर कोई जाड़-टोना कर दिया हो। तो उस राह का मकान क मुख्य दरबाचे प्र गांद दें और अगर किसी ने खेत या बगीबे पर जाड़-टोना

> कर दिया हो तो उस मूरन को खंद या बगोबे के बाद में गांद दें तो हर सरह के जादू-टोने का असर दूर हो जाएगा। बगार इस मूदन को हर बक्स बपनी जेब में रचा जाएगा तो हर तरह के जाद्-टोने से हिकाबंद बनी रहेगी।

#### ्राता/२(१)त्ति। (महा धन) नजर आने का तन्त्र राता/२(१)ति।।(२३/ति।।)/१००)(८)ति। कन वोने को बद वारोड

पीसकर कोली में लगाने म बकीना (गढ़ा धन) नजर बाता है।

(२) स्याह मुर्गकी जुंबान (कीष) को तेन में जलाकर उस मक्स की बर्गकों में लगाये हो उस्टा पंदा हुमा हो तो दकांना (गढ़ा धन) दिलाई देता है।

# सर्च किया हुआ काचा वापिस आ जाना

अमाह के महीने में इनवार के दिन दिर्या नालाब के किनारे बादर एक जोड़ा मंद्रक का जुए नी करता हुआ ले और उसे गुगम की घूनी देकर कर के मुंत में करया और माना के मुंह में अठली नवकर दोनों की भवक देकर लालाब या दरिया के किनारे पूर्व की आर मादा मार पिन्छम की मार नर को ऐसी जगह गाढ़ दें, जहीं किसी को आम दरवन न हो अवति की न पड़े। यह काम एक्टम नगा (निवस्क) होकर करें। जब बाठ दिन प्राप्त पहुंचे नो करया खर्च करना चाहिए और करमा के वापने पस स्थना बाहिए और अगर अगर अगर अगर अगर अगर अगर अगर करया के पास पहुंचे नो कर्या को अपने पास स्थना बाहिए। जहने बास मो जिल्ही को करके करया को अपने पास स्थना बाहिए। उहने बासे की बार-वार खर्च करने से वह पसार पास करने वास का अपने पास स्थना बाहिए। उहने बासे की बार-वार खर्च करने से वह पसार पास करने वास करने वास का अपने पास स्थना बाहिए। उहने वासे की बार-वार खर्च करने से वह पसार पास करने वास करने वासे करने से वह पसार पास करने वास करने से वास का बात करने से वास करने से वह पसार पास का बात करने वास करने वास करने से वह पसार पास करने वास करने वास करने से वास करने से

## रोग-दोष मिटाने का उतारा

मिट्टी के सात सकीरे लाकर, उनके उत्पर उक्कन रखें। फिर खास साम लाकर उसके उगर सिन्दूर लगायें तथा छार छनीका, कपूर कपरी अगर और कपर के किए अगर की रक्तर को पीना कपूर को मिलाकर सात तरह की पुढ़िया बनाकर रख में। फिर बात, पीना, हरा, गुलाकी, भूरा और सफद -इन सातों रंगों से मकीरें को ग्या की स्वार करके चीतर कहु का तैन भरकर उक्कन से मूंह बन्द करके उनके अपर पुढ़िया रख दें। माम के बढ़ रोगी के सामने इस उतारें की

हो बाते हैं। करके हकीरों की किसी नहीं तालाब बर्वरह में डास दें तो का हो।

#### स्वप्न में भोवष्य ज्ञान

संबंधी को घर्ष देकर जला दे तथा सता को सिन्हान नखकर जिले किया। कियोंगिशिएटी विकास मिले के अपने कर देता है। (बात) का निचार करते हुए मो जाया जायेगा उसके बार में भाविष्य का रात से साम स्थान से सी दिन जेसा दिखाई देना। बान क्यान (स्वपन में, पाटन ने जाना के श्रान रूपाव (स्वप्न में) प्राप्त हो जाता है। क्रमा कर उसकी अमर बेल युक्त एक सकड़ी जोड़कर ने अधि। (१./ 📾 जंशल में जाकर जिस वेड पर अगरवेस है। पहले उसकी मान व

# सनवां छत चाज का प्राप्त करना

सिखित नाण्त्रक-प्रयोग सहायक सिख होते हैं -किया यनवाष्ट्रत वस्तु का प्राधित तथा संभलावा को पृति में।

स्थाया प्रम होती है। सगाये और उसर मनवाधित बस्तु की याचना करें तो द्वष्ट ही दिना ॥ जनह गरी हर्द जेंट की इंटडी को न्योत आधा फिर चीटम की रात में मा बार साबर छ्य-देव दे । किर टक प्रान्ति र छामर बिरदूर और माल बनात प्रयोग १- बाध महीने के कृष्ण पक्ष की तरम की नाम में जिला

में जिस बाय की इच्छा कर बह अल्लाह की में/ जानों से पूर होना कार्ये किर उने जलाबर गोली तैयार करें नया गोली को अर्थास में ना कर तेम म सीचा आधी रात क समय एकान्त म उभक्क पास बंडकर प्रयोग ? रविदार के दिन मेंद्रे के मीग को न्योत कर घर ने

बर में रहने लगती है अवशित उस ब्यक्ति की यराबी दूर हो जाता है। कीन म रखकर प्रतिदिन उठकर पुत्रा कर तो लक्ष्मा प्रसन्न होकर समा बाली करके वही छोड़ आये। घर लागे हुए खाला पड़े का विसी प्रवान रेखें भीर उनमें जो खाली पिने उन लेबर सीट आये । बाही घड़ी के बा जानह में रखकर खुरचाप सीट क्षायें। फिर दूसरे दिन वह जाकर घड़े जा पानी मरे हुए चार घडे लंकर जंगल में पहुंच और उन्हें यहाँ किया एकाल प्रयोग ३ भारों महीने के अंधर पास में भरणों नक्षप्र वार कि

#### जुए में जीतना

जानीचर के दिन पवाड के पीधे को न्योत जाये। फिर रिवयर थी गृज्य इतबार के दिन जब हस्त नक्षण हो, तब एक दिन पहले यानी ।

> वमे नाकर अपनी बोई कलाई में बोधकर जुना खेन तो वह समात। बीतता बना जायेगा।

#### युप्त भेद को जानना

खूप लोबान कर साम हुए आदमी की छाती पर नख दें तो बह सोते हुए इतवार के दिन पुग्यू का कर्नजा निकाल कर से बाये। फिर उमे

सुना ने। फिर उन्हें आरा में जलाकर भ्रम कर और उमे मुद्दे की तरह पास कर रख ल। इस सुन्ये का अधा में लगाने में अपरा रात में भा पीन महक का दमार महक पर चड़ा हुआ देखे तो उन्हें लाकर, मार कर दिन की तरह दिखाई देता है। इतवार के दिन मेहक जोर मेडकी को जोड़ा खाने हुए देखें या किसी

मुँह में रखकर लझ्बी मात्रा करने से भी यक्तान नहीं बायेगी। बीठ करे तब उसमें से पारे की निकाल कर गोली बना लें। इस गोली की उसे पारा पिला दे। फिर दूध में भिगों हुए चावल खिलावे। जब तीनर दूर चनने पर भी धकान न आवे (१) कान नीतर को लाकर तीन दिनों तक भुवा रख चौथे दिन

कमर में बोधकर जलने से लम्बो दूरी तक जिना बकान के पैदल बल को पोसकर गहर के साथ विकान तथा इन नीनों को पोटली में रसकर सकता है। (२) मधेद ककोड़ा, काकजंबा और संस्क्षेका -इन तीनों की जड़

# जमीन में गढ़ी हुई बस्तु दिखाई देना

षानीन के भीतर गढ़ी हुई बोबं दिखाई देने लगती है। में जनायं और उसमें काजल पार। इस काजल को शिखा में लगाने से कर बता बनाय। फिर उसे बहरी के को में भिगोकर रात के समय दीवक (१) काने कीए की जोश और मीम को लेकर आक के सून में लपेट

भिगोकर मुखा लें। फिर उस बता का अंकाल के तेस में डालकर दोपक (२) कपल के सून की बती बनाकर, उमे अरव्ह के पत के अक

में सत्तायं और क्ष्मकल पारें। इस काटल को पुष्य नक्षण वाली ते तक विकास की प्राप्त नक्षी में स्थाने से समीन के भीत्य की हुई बीज दिखाई देश स्परी हैं।

(३) हुक तिथि, नक्षत्र और बार (टिन) में कासी गाय के दूध को भीक पर रक्ष तका उसके की को दोनो जांको में सगाय ठो अमान में गढ़ा हुका बन दिखाई देने करता है।

#### दीठ-सूठ सं सुग्धा

इतिका नक्षत में लोहें की बंदुठी बनवाकर हाथ में बारण करने से बीठ-पूठ से सुरक्षा होती है।

1 . . .

# ९० | वशिकरण सम्बन्धी कति गय अन्य प्रयोग

इस प्रकरण में स्त्री-वशीकरण सम्बन्धी उन सन्त्र-तावों का उस्लेख अज्ञानी के किया जा करते हैं कि कि हिंद तथा मुख्यमान दोनों हो साधक प्रयोग में सात है। इस सीर-भूको हिंगिको सिनिम्हिंगों के बन्तर्गत की जाती है।

## स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र— "पूली भूलंडबरी धूलीमाता परमेरवरी धूली बँवती के कार रन रन चींब भरे अमुकी छाती छार छार से न हटें देवा घरबार मरे से मसान लोट, जीब तो पाँच पलाट बाचा बांध छती होई तो जगाइ स्थाब माता धूलरबरी तेंगे शक्ति मेरी शक्ति फरो

बिधि— इतकार के दिन को लाहकी मरा हो उसकी तीन मुद्दी राख लाकर शानवार से शुरू झालके ७ दिनों तक रोखाना १४४ बार इस मन्त्र का जप करना चाहिए। खप करते समय उक्त मन्ध्रट की राख के उपर विराग जलाकर रक्षना चाहिए और उसके सामने ध्रप-गुगल वगैरह

रखन बाहिए।
जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तो बिराग के तीके रक्की हुई राख को
गीको में भरकर रखने। फिर जिस नहीं को वह में करना हो. उसके
उपर राख को २१ बार अभिमन्त्रित करके काथ दें, तो वह साथ-साथ नगी

बती आता है।
तन्त्रशास्त्रियों के अनुसार यह प्रयोग बहुत असर कारक है। इसके
प्रभाव की परीक्षा वरती हो तो अभिमिन्त राख किसी भैंस के उपर
प्रभाव की परीक्षा वरती हो तो अभिमिन्त राख के पड़ते ही भैंस राख डालने
दालकर रेखना वर्षहए। अभिमिन्ति राख के पड़ते ही भैंस राख डालने

#### स्त्री-वर्शकरणमन्त्र (२)

प्रत्न-'धूली धूली ध्वाट बन्दनी पर मार्क धूली फिरे दिवानी घर तज बाहर तज ठावा भरतार तज देवी एक सटी

कलवान तू नाइर्गसंह वीर अधुकी ने उटा इल्याव मेर्ग भान गण की शक्ति फुरो मन्त्र ईरवरो वाचा।"

विधि—उक्त सन्त्र का अप करते समय जहाँ 'अमुकी' शब्द आगा है, वहीं साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इसकी प्रशान विधि यह है कि शनिवार के दिन जिस स्त्री की मृत्यु हुई हो, उसके प्रमान के लगार को लेकर शकीर में नखकर उन्त मन्त्र में सात बार अभियोध्यात करें। फिन उस अंगार को पीसकर, वह चूर्ण जिस साध्य-स्त्री के ऊपर डाल दिया बायेगा, वह स्त्री वशीभूत हो जायेगी।

#### स्ती-वशीकरणसन्य (३)

मत्त्व— 'बॉथूँ इन्द्रक बॉथूँ तारा बॉथूँ बिंद लोही की धारा उटे इन्द्र न घाले खुल साख पूखी हो जाय । बरा ऊपर लो कंकड़ी दीया ऊपर लो खुल में तो बन्धन बॉधियो सासू सुसर जाला एत । मन बॉथूँ मन्बन्तर बॉथूँ बिद्या देसूँ साथ, बार खूँट जे फिरा आबे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।"

बिधि - किसी भी णनिवार के दिस से इस मन्त्र का साधन आरक्ष करना वाहिए। किसी स्वस्छ और पवित्र स्थान में एक पुत्रकी बनाकर रक्ष और उसका विधिपूर्वक पूजन करके गूगल की ध्रप दें तथा टीपक खालर मन्त्र का २१ बार जप करें। मन्त्र में जिस जगह फलानी फलाना बाहिए। इस किया को आरस्की और पुरुष के नाम का उच्चारण करना बाहिए। इस किया को आरस्क करके निरंध निर्यात के सवा पाव हनवा करेंग वाहिए। मन्त्र-माधन काल में प्रत्येक शनिवार को मवा पाव हनवा और पाव बनावों का भीग रखना वाहिए। इस प्रकार में मन्त्र पाव हनवा और पाव बनावों का भीग रखना वाहिए। इस प्रकार में मन्त्र पाव हनवा की ता बावश्यकता के समय किसी भी भनिवार को पाव पुतनी बनाकर उसके पेट में साध्यन्त्री का नाम सिख्यक्तर. उस पर १०८ बार मन्त्र पतकर पूजि मारनी वाहिए। फिर माध्य-मी के सामने जाकर उस प्रता का स्थान करती है।

#### स्त्री-वशीकत्या मन्त्र (४)

मन्त--'आकाश की जोगनी पाताल का नाम उड़जा अवीर तू फलानी के लाग, धते सुख न बेठे सुख. फिन-फिर देखे मेरा सुख, हमके आँदि दूसरा कने जाय तो काहि कलेजा नाहगसिंह मुख, हमके आँदि दूसरा कने जाय तो काहि कलेजा नाहगसिंह

स्त्री के गृह पर लगाया जायगा, पर पणा है, वहां साध्य-स्त्री के साम इस मध्य में जहां 'कसानी' शब्द आया है, वहां साध्य-स्त्री के साम का उच्चारण करना चाहिए।

#### स्त्री-वशीकगणमन्त्र (u)

मन्त-"निम काल भेक निशि राती काला आया आधा राती चलनी कनार बाँध तू बावन बीर पर नार्रा से राखे गीर मन पकरि बाको लावे, सोवती को जबाई लावे, बेठी को उठाइ तावे, पुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

बिधि जब इतवार के दिन होनी अथवा दीवासी पडे, उस रात को नंगा होकर बांधे हाथ से लाल रंग के एंग्ड के पीध को एक झटके में को नंगा होकर बांधे हाथ से लाल रंग के एंग्ड के पीध को एक झटके में तीड़ लांध तथा मन्त्र का जप का के हुए उमें जलाकर प्रस्म कर दें। फिर तोड़ लांध तथा मन्त्र का जप का के हुए उमें जलाकर प्रस्म कर दें। फिर तोड़ लांध तथा मन्त्र पढ़कर, जिस साध्यस्त्री के सिर पर उस धरम के उपर रंग बार मन्त्र पढ़कर, जिस साध्यस्त्री के सिर पर जला जाएगी।

## स्त्री-वशाकरण मन्त्र (६)

मन्त्र-''शूल-कूल कूल कुमारी हानी । पल-पल में आवी शीध बशमानी । यह कूल मन्त्र पहें अधुकी जान । जगत ईरवर नर्गशंड बरदान । यह कूल पढ़ि देऊ अधुकी माथा । हमें खोड़ न जाय दूसरे के साथा । अल्लाह कामरू कामाधा माई। अल्ला हाड़ी दासी बयडी दोहाई।"

विधि दशमी तिथिको गत के समय १०० वार जय करण गण मन्त सिंद हो जाता है। इस मन्त्र में जहां 'अमुकी' शब्द आगा है करों साहय-सी के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र के जाने आगे आगे पर एक चम्पा के फूल को तीन बार मन्त्र में अभिम्नित करके 'अभ रही के हाथ में दे दिया जाएगा अध्वा जिसके मन्त्रक पर दास दिया जाएगा अध्वा जिसके मन्त्रक पर दास दिया जाएगा अध्वा जिसके मन्त्रक पर दास दिया जाएगा विद्या जाएगा विद्या के सामक पर दास दिया जाएगा के प्रमुख को स्थानक दे सामक के बनीसून हो जाती है।"

#### स्त्री-वर्शकास्य मन्त्र (७)

मन्त्र—'धूल-धूल तूँ धूल की रानी जनमोहनी मुन मोर बाती, जब में धूला आत पढ़ें, तब पावनी बरदान, धूली पढ़ दूँ अयुका अंग, जो जलनी आता उमंग, उसका मन लावे निकार हमारी बरथता करे स्वीकार।''

श्रित होनो के दिन यह सन्त्र १००० बार जपने से सिद्ध हो जाता है। सन्त्र में जहां अमुकी शब्द आया है, वहीं साध्य-प्रत्नी के नाम का उच्चारण करना चाहिए। फिर रविवार के दिन साध्य-प्रत्नी के पांच के नीचे की प्रती लेकर, उसे मन्त्र में व्याप अधिमन्त्रित करके, उसी स्त्री के उत्तर डाल दने में वह वर्षाभूत हो जाती है।

#### स्त्रो-वशोक्तरसामन्त्र (८)

मन्त--- "नमा गुड-गुड रे तू गुड-गुड तामडा मशान केलि करता जा उसका दंग उमा सब हुए हमारी जास खसम का देखें खलें बलें हमको देखें रुक-रुक धले चाल-चाल रे कालिका के दृत जोगी जंगम और अवधूत सोती होय जगाय लाव बंठी हो तो उठाय लाव न साब तो माता कालिका की शुख्या पर पाँच घरें। शब्द साँचा पिंड काथा फुरो मन्त्र देखरोबाथा सत्य नाम आदेश गुरु का "

विधि इतवार के दिन एक पैसा घर गुढ़ को लेकर श्यकान में जार्य वहाँ तेल बाकला से भरव का पूजन करके इस मन्त का १००८ की संख्या में जप करें तो गुड़ सिद्ध हो जायेगा। उस गुड़ को जिस साध्य-स्वो को विकाया जायेगा, वह वकाभूत हो जायेगी।

#### रती-वशीकरण मन्त्र , ६)

पन्त—"नमा उर्वशी सुपारी काम निगारी गांजा परजा खरी का पियारी मन्त्र—"नमा उर्वशी सुपारी काम निगारी गांजा परजा खरी का पियारी मन्त्र पदि लगांक तोहि हिया कलंजा लांचे तोहि जीवता का बार मन्त्र को जाति हियान्य को जाति जाति हियान्य को जाति जाति है। इस पन्त्र के जाति है। इस पन्त्र में जहीं 'अमुकी' १००८ बार जपे तो यह सिंद ही जोते है। इस पन्त्र में जहीं 'अमुकी' १००८ बार जपे तो यह सिंद ही जोते है। इस पन्त्र में जहीं 'अमुकी' का बार व्यापा है वहीं साध्य-स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। किर एक सुपारी को इस मन्त्र में सात बार अभिमन्त्रित करके जिस साध्य-रित को बिलाया जायगा, वह वर्षाभूत हो जायगी।

### स्त्रा-वर्शकरण मन्त्र (१०)

मन्त--'नमी बल की जीगिनी पाताल नाम जिस पर मैजूँ तिमके लाग. सोने न पार्य सुख से बंठनं न पार्थे, सुख से धूम फिर-फिर राके मेग सुख, जो बाँघी छूट तो भाषा नरसिंह की जटा टूटे।'' फिर उमे होठ में दबाकर किसी तालाब के पानी में गीता मारकर सात

#### बहुब शाधत हा जायगा। स्त्री-वर्शीकरण सन्त्र (११)

बार मन्त्र पढ़ें। फिर मुँह से पत्ता निकासकर, उमे सात बार मन्त्र पढ़ कर गुगल की भूनी दें। सदुपरान्त उस लोग को जिस स्त्री को निखावें

मन्त---'भी कामरू देस कामाख्या देवी उहाँ वसे इस्माइल कोगी, इस्माइल जोगी ने दिये चार काँग, एक काँग निसिमाती, दूजी कींग दिखावे राती, तीसरी काँग रहे अलाय, कींथी कींग मिलन कराय, नहीं आये तो कुआ बावड़ी घट फिर्ने, रंटी कुवा बावड़ी ब्हिटक भरे। नमा गुरु की अल्ला फुरो मन्त्र ईरवरो

विधि- जिस समय चौद पर यहन पड़ रहा हो। उस समय चार-सींग चारो दिशाओं में रखकर श्रीच में एक चौपुखा दीपक जलाकर दिधि-

पुर्वक तक स्कार बार बन्त का अप कर तो यह सिंद हो अलेगा। फिर को खिला दिया जायगा वह दशांभुत हो जायेगी। सावण्यकता के समय एक लोग पर सात जार मन्त्र पदकर उमें जिस न्त्री

### स्त्री वशीकरण मन्त्र (१२)

कामरू के दीप में अमुको का मन पड़े, वह तेल के माँभ जर, मन्त्रेऽ।।।।.००।तिश्वे विश्वानित्रमं तक करते। किर आहेल रिवार के दिन नेल करवा कर ज्योति के रूप में खादि चंचल थिर हो मन क्थिर में मेरा भजन चवरी की दुताई किरे।" कर कार जीवन और अध्यम कर तन मन आदम हाई। दास मन्त्र-''नमो आदेश कामर कामाक्या का ने तेल किकामिक

बहाँ साध्य-न्त्री के साम का उच्चारण करना चाहिए। किर उस दीवक के तथा र ५ बार मन्त्र का जप करे। सन्द्र में जोते अधुरी शब्द आया है, तो भी वर्गाभूत हो जाती है। तेल को जिस न्त्री के अंग पर लगा दिया आयेगा, वह यदि सहादुष्टा हो बिधि एक चित्रात में सत्रमां का तेल भनकर उसमें बली जलायें

#### स्वा-वश्रीकरण नन्त्र ११)

साध्य-ती को खिला दी जायेगी, वह वर्शाभूत हो जायेगी। उस हाला का जलाकर राखकर ला फिर उस राखको अपन सुप्र में तोड लावे, फिर रनिक्रिया में मंस्यन कुतिया के ऊपर उम मारे। तहुपरान्त सानकर छोटी-छोटी गोलिया बनाकर ग्रख ले। उसमें में एक गोली जिस मंगलवार या इनवार के दिन अजीर के पीधे की एक डाली की

#### स्त्री-वर्शाकरण तन्त्र (२)

रवानि नक्षत हो, उस दिन आक के पोध को न्योत आवे और रविशार के के मस्तक पर टाला जाता है. वह वशिश्वत हो जाती है। दिन उसकी कोपने लाकर, पीस कर रखाला। उस चूर्ण को जिस साध्यानन माघक महोने में भनिवार के दिन खब अप्टमी तिथि हो और

## स्त्री-वर्शाक्या तन्त्र (३)

कालीमिच मिलाकर गाय के दूध में पीस लें, फिर उसकी छोटी-छोटी पृथ्य मझत में हन्द्रायण की जड़ लाकर, उसमें पीपल, सींठ और

> कोलियो बनाकर रखन। आकृत्यकता के मनग्र एक गोली को चन्दन के साथ विसका अपन सम्तक पर निजक सगाय आप अधिकपित सती के सामन जाकर खड़ा हा तो यह देखते हो बशाभूत हा जावगा।

#### स्त्री-वर्शकाण नन्त्र । ४)

भिना द फिर उन सबका मिट्टा के एक ग्रकार में रखकर आग पर नवार। खब मत जलकर राख हो जाय, तब उस राख को धक्खन में मिलाकर साध्यन्त्रा को खिला दे तो बहु बर्णभूत होकर साधक के पास बली शनिवार के दिन अपने हाय-पांच के बीमों नल कटना कर रख लें।

#### क्त्री-वर्शकामा नन्त्र (४)

को निकाल कर ले आये। फिर उम्रद हुई को छाल विलाकर बुट-पीशकर रख वं। फिर उस चुर्ग में घटकी भर उम्रशान की राख मिलाकर जिस साध्य-तो ने सक्तर पर डाल दी जायेगी, वह बशीभूत हो जायेगी। पुष्य नक्षत्र में नदी के ।क्षत्राः वाने बाउ (फराम के बुध की जह

#### स्त्री-वशाक-या तन्त्र (६)

आर्थे, प्रेंग उसका ध्रंप श्रेष स प्रजन करके छोत्रों के घर ले जाये। नहीं घोरों की भड़ी से उस लक्ता का जलाहर राख करन नया गांध को अध्य लास पर हाला जातमा वह क्यांभून हो जायगी। रखाल, जब हरन नधान आय तब उस ाखाती जिन माध्यान के हरने होली के दिन होली का न्यात कर उसकी एक लक्ड़ी अपने घर ल

#### स्त्रा-वया ः सा तन्त्र (७)

सावा हार पानी हुई राजा । खहर का कपड़ा नकर उस नामने में हान दे। जब बह हवा में उड़न लग, तब उसके पार्छ-भाग, बला जाय। देखा । फिर श्रीवी के अपना श्रीन के पत्थर पर जाकर अस गजी के ट्कडे जिस स्थान पर वह कथड़ा थिर, वहीं म उन उठा लाय। पीछ मुहंकर न पर जलाकर उसकी ाख की नया करते हैं से सिन मिर्ट की अलग-की श्रीन-मिट्टी झाडकर अलग करद तथा कपर को वही शोबी के परेषर अलग इक्ट्ठा करने घर ले आये। वहां राख तथा धानि-मिटी दोनों को

सगायो जायेगी. तब बहु शीटकर बापिस चली जायेगी। भूत होकर पास चली आयेगी और अब उसके शरीर पर धृति-मिट्टी स्ती की वशीभूत करना हो. उसके गरीर पर राख लगा वे तो वह वशी-बसग-असग गूगल की धूनी देकर रखलें। फिर आवश्यकता के समय जिल

### स्त्री-वशीकरण तन्त्र (८)

उनमें मोर की बीट. हरतान और मुहाशा मिलाकर एक दीपक के समीप हाला जायना, वह वष्टाभूत हा जायनो । प्रखरें। तक्षण्यान् मंध्या के समय जिस रही के मस्तक पर यह मिश्रण जा नहां हो, उसके पावों के नोचे की धर्मि मुन्ठी घर ने आवे। फिर

#### स्वी-वर्शाकरण नन्त्र (६)

हडिट्यों को गुगम की धना देकर रखने। फिर आवश्यकता के समय जो हड्डी आएगा तब वह अलग हट जाएगी। भून हो जागगों तथा जब उसके शरीर स दूसरी हरुशों का स्पर्ध कराया भागी हो. उसे जिस साध्य-की के गरीर से स्पर्ग कराया जाएगा वह वणी-भी. जो अपने स्थान पर ही स्थित रही हो लेकर घर सीट आये। वहां डोनों हडडा भागत सग, उस प्रवचन तथा उसके अतिरिक्त एक अन्य हड्डी की कर उम चौराह पर गांड है। सातव दिन उप उचार । उस समय को एक मगलवार या रविवार के दिन एक बोट में किसी छिष्टैर को मार

#### स्त्रा-वशाकःण तन्त्र (१०)

रखने। आवश्यकता के समय उनमें संएक गोली का धुआ जिस स्त्री को बीट को समझाग नेकर पीस ले फिर उसकी छोटी छोटी गोसिया बनाकर विया जाएगा, वह वशीभूत ही जाएगी। पुष्प अथवा अवण नक्षत्र में धतूर की हरी पत्तियों तथा मीर की

# ्रश्री-वश्राकारण तन्त्र (११)

गोली की जलाकर अपने कपड़ों में धूप दे हैं. फिर साध्य-स्त्री के पास बायं तो बह बगोभूत हो जाती है। भाग लेकर कुट-पांस कर गांला बनाकर रक्षले । आवश्यकता के समय इस कार डामिगी. बच, एलुबा और छोटी इलायची - इन सबको सम-

# र्झी-बर्गाहरण तन्त्र (१२)

सबको मिलाकर बूब महीन पीस लें। उसमें से एक बुटकी भर चुर्ण जिस स्थी के सन्तक पर डाला जाएगा, वह बत्तीभूत हो ज एगी। मोर का टीया और बीया पंत्र काकजंबा एवं पुरुकरमूल - इन

रविवार के दिन पुष्प नक्षत्र की अधेरी रात में जो बटोही मार्ग भेSSUU COM/SDCUIDS() कियों न्वर्गो करणा नन्त्र (१३) ण हो, उसके पार्थों के नोचे की धृष्टि मुद्देश पर ले आवें। फिर अपने मन्त्रक पर तिलक लगाकर साध्य स्त्री के पास पहुँचा जाय तो वह भाग नेकर पानी में पीसकर गोलो बना लें। इस गोनो को पिसकर, बशाभूत हा जाना है।

#### स्त्री-वशीकाण तन्त्र १४)

क्षक में कई की एक बली की उने फिर क्यांस में तेल अटकर उसमें उसी अधि में लगाकर, जिस माध्यम्त्री का और देखे, वह बर्गाभूत हो हालकर जलाय तथा काजल पार । उस काणज को शनिवार के दिन अपनी वर्ध के मिर की हड़डी की मनुष्य के कपाल में रखकर, प्रांगर के

#### राजा-वर्शाकामा तन्त्र (१)

म। फिर उस नेप की किसी रेशमी बस्त पर संगाकर उसकी तनी वनाय समाकर राजा के पास जांच तो वह उसते ही वर्षाभूत हो जाएगा। भरकर, बली को जनाय नथा काजल पारे। उस वाजल को अपनी अधो में स्या उस बनी की मनुष्य की खोपड़ी में डालकर उसम सरमा का नेज तालासपता, क्रिओर अधर इन सबकी गक्त पीधकर लेप बना

शासनाधिकारी, मनो आदि को क्या में करने के लिए प्रयोग में जा सकता है। बोह बर्नधान मध्य में राजा-महाराजा नहीं रहे, अन यह प्रयोग

## राजा-वर्शकरण मन्स (२)

बार-बार बाँधू शिव प्रचयड बाँधू इता राजा काई करसी आसब मन्त- "नमी आदेश गुरु का अल बांधू अशी बांध

खोड़ मंसाब सथा देसी अपका टोको पन्दन ललाट टीको कार्य सिंह वर्ण कहाऊँ और करूँ सहैयालते में बंच्यान गोरा पावती बच्याते में बंच्या या गुरु का शक्ति मेरी मक्ति फुरो मन्त्र इंखरो वाचा।"

बिधि शनिवार से आरम्भ करके २९ दिनों तक धूप तेप तैनेय द्वारा गोरा पार्वती देनी का पूजन और ध्यान करते हुए नित्म प्रति रिक्ति।।।। बार इस मन्त्र का जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर कुंकुम चन्दन और गोरोचन को गाय के दूप में पास कर इस मन्त्र से ७ बार अधिमन्तित करके अपने मन्त्रक पर तिसक सनाकर यदि राजा के पास पहुँचा जाय तो वह वशीभूत हो जाता है।

#### गजा-वशी हरसा तन्त्र (३)

पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र में किसी बगो के बाकर, नगा होकर एक ही झटके में अनार के पीछ की एक डाली तोड़ सार्चे किर उसे झूर देकर अपनी दोवी बॉह में बॉडकर राज्यमा में आयें तो राजा उसे देखते ही बगीभूत हो जायेगा।

#### राजा-वशांकरण तन्त्र (४)

अंकील के पके हुए फल और मैनफल -दोनों की समझाग सें, गांध के दूध में मीसकर गोली बनायें। फिर गांच के स्वयं गिरे हुए पीले सींच की साकर उसमें गांच का ही दूध भरवनर. उन्तर सूची हुई गोली को डान दें। फिर उने सात दिन तक पुच्ची में गांद्रकर धूनी दें। आठवें दिन उमे निकालकर, गोली को विस कर अपने गांचे पर तिसक संगायें और राज संभा में आयें तो राजा देखते ही वंशीमूत हो जाएगा।

#### राज्ञा-वर्शाकरण तन्स (५)

मुद थी, दूध, शक्कर, दही और महद इनके साथ ९०० कमल के फूलो का राति के समय औरने में हवन करें तथा हवन करते समय जिस राजा का वस में करना हैं, उसका ध्यान करता रहे तो इस प्रयोग म बक्जवर्ती राजा भी वशाभूत हो आता है।

#### राजा-वशीकरण तन्त्र (६)

पुष्य अथवा भरणी नसाव में चन्पा की कली लाकर, उसे हाय में बोधकर राजा के समीप जाने से वह बमीपूत हो जाता है।

### राजा-वशीकरण तन्त्र (७)

हाला में आवत और राजा के पाने जीन के राजा वर्णभूत होता है।

# सर्व-जनवशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—''नमी आदेश गुरु की राजा मोह प्रजा मोह बासवा वाधिया इतुमन्त रूप में जगत मोह तो रामचन्द्र परमाथियाँ गुरु की प्रान्त मेरी मन्ति पुरो मन्त्र ईश्वकी वाचा।'

बिधि - रामचन्द्र जी का ध्यान कर, उनका धृप, दीप, नैवेश आदि से पूजन करके २१ दिनों तक नित्य ५२९ कार उनते मन्द्र का जप करता रहे तो गन्द्र सिद्ध हो जायगा। फिर गांव के बीराहे पर जाकर एक चूटकी सर ध्रीम तेकर उमे उकते मन्द्र में साम बार अभिमन्त्रित करने अपने मन्द्रित पर जिलक लगाने में साध्य-व्यक्ति रेखते ही बशीभूत हो जाता है।

## सर्वजन-वर्शाकामा मन्त्र (२)

मन्त्र— ''नमें काला कलवा कालीशत निस की पुतली मौकी रात काला कलवा घाट बाट छती को जगाइ लाव बेटी को उटाइ लाव केनी घरणा लाच मोहनी जोइनी, चल राजा की टाँव अमुकी के तन में बटपटी लगाव जी पांले तोड़ जो कोई लाइ दार्गा इलायनी कमें न खोड़ हमारा साथ घर को तजे बाइ तो पांते को तजे घर के साई को तजे हमें तज जीर करें जाड़ तो कार हमारा पांते करें पांते पुत्र मन्त्र ईरबर्रा बाचा ईरवर महादेव की वाचा, यादिन मेर्गा भक्ति पुत्र मन्त्र ईरबर्रा बाचा ईरवर महादेव की वाचा, यादिन मेर्गा भक्ति पुत्र नक्ते में पहें।''

विधि — इस मन्त्र को २१ दिनों तक निह्य १०८ बार अपना नाहिए। इस मन्त्र सिद्ध हो जाएगा । सिद्ध हो जाने पर एक छोटी इलायची पर इस मन्त्र को ११ बार पढ़े । फिर वह इलायची जिस व्यक्ति को खिला दो जाएगी, वह वशीभृत हो जाएगा । यह प्रयोग स्तियों पर विशेष प्रभावकारों है। इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है, वहां सन्त-जप के समय साध्यन्ती अथवा पुरुष के नाम का उच्चारण करना चाहिए। iSSUU.

## सर्वजन-वर्शाकरण मन्त्र(३)

मन्त्र-"हरे पान हरवाल वान विकती सुपारी खेत खेर दाहिने का यना मोही लेह पान हाथ में दे हाथ रस लेह ये पेट दे पेट रस लेह भी नरसिंह बीर थारी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र हरेबर महादेव की बाचा।"

विधि यह मन्त्र प्रहण के समय १००= बार जपने से सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर इस मन्त्र द्वारा पान को २१ थार अभिमन्त्रित करके चिस व्यक्ति को जिला दिया जाएगा, यह वशीभूत हो जाएगा।

## सर्वजन-वशीकरणतन्त्र (४)

तगर, कुठ, हरताथ और केशर — इस सबकी समभाग लेकर अपनी अनामिका अंगुली के रवत में पीसकर, मस्तक पर तिलक लगाने से देखने याना वर्गाभूत हो जाता है।

## सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (५)

रविवार के दिन खब पुष्य नक्षत्त हो तब तगर, क्रूठ और तालीम पत्र को पीसकर दीपक की बती में मिलाकर, उस को कबने तैल के दीपक में डालकर जलायें तथा आधीरात के अमय मनुष्य की खोपड़ी के उत्पर कावल पार । इस कावल को लांख में आंकन से देखने वाले स्वी-पुरुष वर्गाभूत हो जायेंग ।

## सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (६)

चिता की अस्म, कुठ, बच, तगर और ककुम—इन सबको इकट्टा पीसकर, जिस प्या के पाँचों पर तथा जिस स्त्री के सस्तक पर डाला जाएगा, वह बनाभूत हो जायंगे।

## सर्वजन-वशीकरण तन्त्र (७)

पूर्य नक्षत्र में इन्द्र बो को जह, पीपल, सीठ और काली मिर्च-इन खला से सबको गाय के दूध में पीसकर, मुखाकर रखन । फिर आवश्यकता के माय के दूध में पीसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-गमय हमें चन्दन के साथ विसकर अपने मस्तक पर तिलक लगाकर साध्य-के समय अपने के सम्मुख आये तो वह देखते हो वशीभूत हो जाता है। issuu.com/abclul\_3/niali/oclishatu तन्त्र (८)

अन्त और धतूरे की जह कबूतर की बीट तथा चौराहे की धूल-अन्त और धतूरे की जह कबूतर की बीट तथा चौराहे की धूल-इन सबको एकत कर पीसकर तथा मुखाकर रखले। फिर इसमें चिता की धून मिलाकर मंगल शयबा गनिवार के दिन जिसके मस्त्रक पर डास धून

#### शतु-वशीकरण तन्त्र (१)

रिवबार के दिन दो चढ़ी रात रहते उठकर प्रशान में आयें तथा वहां अपने दोनों हाथ पीछे की ओर करके चिता से एक लकड़ों को उठाकर किसी एकान्त स्थान में रख आये। फिर प्रतिदिन रानि के समय जाकर विस्ता पूजन करता रहें। इस प्रकार इक्कीस दिन बीत जाने पर, उस जकड़ी को खाती (वहुई) के घर ले जाकर उसके सात दुकड़ें करवाये तथा जकते को एक सेख बनाकर उस कहा के घर में नाद दे तथा जेथ पहले दुकड़ों को नदी में बहावर लीटते सभी मार्ग में से सात कर्काइयों उठावर घर लेता आये तथा उन्हें भूप-दीप समय मार्ग में से सात कर्काइयों उठावर घर लेता आये तथा उन्हें भूप-दीप समय मार्ग में से सात कर्काइयों उठावर घर लेता आये तथा मेख को णतु पर हाला जायेगा, उसके सब रोग-दोध दूर हो जायेंग तथा मेख को णतु के घर में गाइने का प्रभाव यह होगा कि शबु बघीभूत हो जाएमा।

#### शप्तु-वशीकरण तन्त्र (२)

मंगलवार अथवा रविवार के दिन काले रंग के कोड़े तथा काले रंग के बकरे के पांच के बाल तथा काले मुरगे एवं काले कीए के चार-चार पंख-इन सबको जलाकर राख बनालें। उस राख को पानी में खरल करके लीजी भरकर रखलें। फिर, आवश्यकता के समय इस मिश्रण का तिलक अपने

सस्तक पर लगाकर शत्रु के क्षासने जाने से उक्षका वशोकरण होगा और वह डर के कभी क्षामने जाने का साहस नहीं करेगा।

#### श्रमु-वर्शकरण तन्त्र (३)

पुष्य नक्षत में बसेकी की जड़ लाकर उसका ताबीज बनाकर अपने पास रचने से शतु बशीभूत होते हैं।

#### राञ्च-वर्गाकरण तन्त्र (४)

रिवार के दिन सफेट आक की जह को उखाइ लाकर उसे छाया में सुखाकर अंपनी भुवा में बोधने से सपओं का बनीकरण होता है।

#### रात्र-वर्शकरण तन्स (५)

षतुरा, अदरक, बरगद और मृंगा की अह - इन सबको समभाग नेकर पीस लें। फिर उस चूर्ण को घित हुए चन्दन में मिलाकर, उसका तिसक मस्तक पर सगाने से शत्रु देखते ही वशीभूत हो जाता है।

#### पुतली वशीकरण प्रयोग

श्रमिकार के दिन रात्रि के समय किसी स्वच्छ, एकान्त और सान्त स्वान में केंटकर गोरोजन, कुंकुम तथा केंग्रर से भोजपत्न के ठ्यर एक खिहासन पर केंटी हुई स्पी (पुतली) का चित्र बनायें। फिर उसका विधि-पूर्वक पूजन करके, धूप-दोप तथा गूगल की धूनी दें, तदुपरान्त निध्न-सिस्तित मन्त्र का ११ बारजप करें—

मन्त- "बीर्ष् इन्द्रक बीर्य तारा बीर्य विदी लोही की धारा उठ इन्द्र व बाले बाव ब्रस्त सास पूर्णी हो जाय। ब्रस्त उपर लों कांकड़ो हीया उपर लों ब्रुत में तो बन्धन बाँधियो साब सुपर जाया पूर्ण मन बीर्य मन्त्रन्तर बीर्य विद्या देखें साब धार खुँट जे फिर आवे फलानी फलाना के साथ गुरु गुरे स्वाहा।"

इस मन्त्र में अहां 'फलानी फलाना' सब्द आया है. वहां साध्य स्त्री-पुष्प नामों का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त किया को निरन्तर २१ दिनों तक करते रहना चाहिए तथा प्रत्येक शनिवार को सवा पाव लक्षी एवं पाँच बतायों का भोग रखना बाहिए।

जन्म प्रयोग द्वारा अधिकवित-स्त्री को वस में किया जा सकता है।

issuu com/abcall ड्राया बीपनीवतस्त्रों को बंग में आकृष्य का मन्त्र

मन्त्र— 'काला कलवा चौंसठ वीरा नेरा कलवा गंगा तीर बहाँ को सेन्त्रूँ बहाँ को जाइ मच्छी को खुवन न जाइ जपना मारा आपहि खाइ, चलत बास मारूँ उत्तर सूँठ मारूँ मार मार कलवा तेरी आस चार चौम्रुखा दीया न नाती जा मारूँ वाही की खाती इतना काम सेरा न करें तो तुन्के अपनी माँ का दूध पिया हराम है।''

बिधि—धीका विराग जलाकर गुगल की धूनो हैं और खोड़ा पूल तथा मिठाई रखकर २१ दिनों तक निरम १००८ बार जपेती मन्त्र सिड हो अधिया।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जिसको आकर्षित करना हो उसके नाम का उच्चारण करते हुए सुपारो छाल पर इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर उसे पान में रवकर अभिलाखित स्त्री-पुष्य को खिलाये तो वह आकर्षित हो अयेगा।

यह सन्त्र आकर्षण के साथ ही वशीकरण कारक भी है तथा यह स्ठ को उन्टी (वापिस) भेजने का काम भी करता है।

#### पति-वशीकरण प्रयोग

मासिक धर्म के समय का अपनी योनि का रक्त, गोरोचन तचा केले का रस—इन तीनों को मिलाकर पीत लें। फिर इससे अपने मस्तक पर तिलक करके पति के समीप आयं तो यह देखते ही वणीभूत हो। यह प्रयोग स्त्रियों के दुर्थाप्य को दूर कर, सीभाग्य की दृद्धि करता है।

#### राजसभा महिन मन्त्र

बजीजुर्रहीम।" मन्त--"सलामुन कोलुन मिन रविरेहीय तनजीलन

पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर उक्त मन्त्र को अपने दोनों हाथों को फिर उस तल अपने करणा है। Alicali/odisha बाय तो वहां के सब लोग मोहित हो।

#### स्त्री आकर्षण तन्त्र

पास बनी बाती है। धाकर्यण मन्त्र से १०८ बार अधिमन्त्रित करके, उस जगह गाइ दे, जहाँ पर उस पुतलों की छाती पर साध्य-स्वी का नाम लिखा तहुपरान्त उस मूत्र-रंगाण किया जाता हो। फिर उस स्थान के ऊपर प्रतिदिन मूत्र करता रहे तो वह स्त्री सहतों मील दूर क्यों न रहती हो, तो भी आकषित होकर मिट्टी लाकर, उसे बिरबिट के रबत में सान कर एक पुतली बनाये। फिर जिस स्त्री को आकृषित करना हो, उसके बंधि पाँच के नीचे को

मन्त इस प्रकार है-

मन्त-"अं नमी आदि पुरुषाय अधुकं आकर्षयां इर-इर स्वाहा।"

बार्कावत करना हो. उछके नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस मन्त्र में बहां 'अमुक' शब्द आया है वहां बिस स्त्री-पृष्प को

यह बन्त १० हजार की संख्या में बपने से सिख हो जाता है।

#### सर्वजन मोहन ध्योग

हाय पक्षानो मुख घोऊ सुमिरो निरंजन देव इनुमंत मधी हमारी पानी ससक स्थाय कर योनि मेरे वाय नशाय हाथ खड्म छूलों हुन बोर्स जिड्डा मोह", आस मोहँ, पास मोहँ जब संसार वे पित राखे मोहिनी दोहनी दोनों बहिन बाब मोहिनी रावल वाले की माला जानि विजाने गीरख जान मेरी गति को मन्त्र-"तिश्वसों में तेल राजा पर जा वाय 100 A 100 मेरि जबन

निसक टीका देव ललाट राज्य सांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी बाचा

फिर उस तेल अपने मस्तक पर बिन्दी लगायें तो देखने वाले सभी लोग तेस निकलवाकर, उस तेल को उबत मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करें। विधि—दीवासी की रात को तिल लाकर, उल्टी वानी से उनका

पटिया पर जा खड़ा हो। वहां नंगा होकर पहले उस बोड़े को बोले, फिर देखें। यह बीड़ा जिस स्त्री का खिलाया जावेगा, वह मोहित हो जाएती क्षेत्र कर बन्द करें तथा वस्त पहन कर घर लोट आये। पीछे मुहकर म रविवार के दिन पान का एक बीड़ा लाकर घोनी के कपड़े घोने की

पानी को सन्ते पर लगाये तो कुछ दिनों के निरत्तर प्रयोग से बूनी क्या बादी बवासीर ठीक हो जाती है।

#### बवासीर का सन्त्र (२)

मन्त-'सुरासान की टेनीसाह। खुनी बादी दोनों बाय। उमती-उमती थल वस स्वाहा।"

बिधि—इस मन्त्र को पहले पूर्वोच्त मन्त्र की विधि से सिद्ध करते। फिर प्रयोग के समय इस मन्त्र से तीन बार अधिमन्त्रित पानी द्वारा आवदन्त से तथा साल सुत में तीन गाँठ सगाकर उस पर इसकीस बार मन्त्र को पढ़ें फिर उसे दोनों पांचों के आंगुठों में बांच कें। इससे बूनी तथा बारी—दोनों प्रकार की बवासीर दूर हो आती है।

#### पीइ।-निवारक सन्त्र

मन्त्र — 'लरकर फरऊन दर रोदनी सगर्के ग्रुट ।"

विधि — जिस जगह दर्व हो, वहां इस मन्त्र को ३ बार पीनी मिट्टी से लिखें। फिर मिट्टो के बरावर गुड़ तुलवाकर छोटे बच्चों को बीट दें तो पीड़ा दूर हो जाती है।

#### आँख को फुली का मन्त्र

मन्त्र—"उत्तर कूल काछ श्वन लोगी की बाछ, इस्माइन जोगी की दो बेटी एक पाले ब्रह्मा एक काटे फुली का काछ, फुली का काछ, फुली का काछ।

विधि — छुरी द्वारा २१ बार जमीन पर लकीर खींचे तथा हर बार सकीर खींचते समय एक बार उनत सन्त्र की पढ़ता जाय। इस प्रकार सात दिनों तक नित्य चाकने से आँख की फुली कट आती है।

#### सिया का मन्त

मन्त — "नमी कामक देस कामारूपा देवी जहाँ बसे इस्माइल जोगी, इस्माइल जोगी के तीन पुत्री एक तोड़े, एक पिछोड़े, एक तीते जरी तोड़े।"

> बिधि - रोगी की खड़ा करके जिस जगह ठण्ड लगती ही, वहाँ हैं। से पकड़कर २१ बार मन्त्र फूंकें तो सिया रोग ही जाता है।

# हाकिम को बश में करने का सन्त्र-तन्त्र

बीब की प्यारहवीं तारीख को रात के वक्स कीए के घोसले पर पहुँचार एक जोड़ा नर और मादा कीए को प्रकड़कर से कार्य उन्हें iSSUU.604451/द्वीके देशे। द्विकेशितां हिंशें के एक दिन के ने कर कर हैं। दूसरे दिन सुबह दोनों के नाबून काट कर को हो को को को पिन हैं यक कर कर कर सबतें। पितर होनों को को जनके घोसले के बात के एक दिन के बात कर कर रखतें। पितर होनों को को उनके घोसले से बात को एवं वर्ष किसी एकान्त से जहाँ कांत खगह में बैठकर, कीए के नाबूनों वाली दिविया को खोलकर मेंत तथा नोचे किसी प्रकान के खाने कांत खगह में बैठकर, कीए के नाबूनों वाली दिविया को खोलकर के लावने सामने रख से तथा नीचे किसी मन्त्र को पढ़ते हुए उस पर पहुँक मारें। कुल विलाकर मन्त्र का पाठ २२५० बार करना चाहिए। मन्त्र इस प्रकार

"दैल के बन्त्रमुखी सती का पैर पड़े बन कहें, सलाय कर बीम जारी फेलके क्लीम ताड़े फल लाग तार सवा। दन्त्र पढ़ियाँ कान मेरी अदिया लाग सुन्दर बास्ता बड़े। फल पड़ के मिल जाय कड़े असत नाम आदेश करें।" नित्य स्माप्ट रात का इनी प्रकार मन्त्र का जप तथा साधन करते रहें। तहुपरांत जन नाखुनों को किसी कपड़े में लीकर रख में और जिस समय हाकिम के सामने जाय जस समय नाखुनों साने कपड़े को अपनी कमर में बोबकर सामने जाय जस समय नाखुनों साने कपड़े को अपनी कमर में बोबकर

# प्रेमी को आवर्षित करने का मन्त्र

कात कीए के पंज, मीर के पंख तथा हुवहुद पक्षी के सिर की कलंगी के पंज - इन डीनों की जलाकर राख बनालें। फिर इतवार के दिन सूरज निकलने ने पहले किसी जीराहे से शूनि खाकर, उस राख में मिला दें। फिर सबके मिश्रण की एक दिल्ली में अर कर रखलें। बकरत के समय फिर सबके मिश्रण की एक दिल्ली में अर कर रखलें। वकरत के समय इस राख की अपने शुक से मिलाकर जिस स्ती अवदा पुरुष के कपड़ों से